पद भाग क्र.६

१४ :– नांव समर्थताई को अंग
१५ :– सतगुरा को प्रतिवता को अंग
१६ :– केवल को अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	अेसा समरथ साहेब मेरा १७	१
२	अेसे अवगत आप साँई १८	१
३	अेसे ही बोहो बेद कुराण १९	२
४	अेसे स्याम राम भगत २१	३
५	अवगत न्यारो हे २७	४
६	केवल ध्यान धरे कोई जन १९८	६
७	केवल ध्यान धरे जे जन १९९	६
८	मे मल्ल सूं करतार का २१४	७
९	नर क्हाँ तेरी गत तूंहिज जाणे २४७	८
१०	निरंजन तेरी गत तुहिज जाणे २५२	१०
११	राम कहेत सम तिरीया हो २९४	११
१२	संतो भाई अेसा नाम कहावे ३४०	१७

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	आनंद लोक तोरे बंदा वे हंसा जासी २४	१८
२	या जग मे तो रे बंदा वे बड भागी ४२३	१९

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	बांदा आनंद ब्रम्ह या सुई आगे ३३	२१
२	बांदा अणंद लोक से जावे ३४	२८
३	बांदा इऊं जग मोहे न जाणे ३८	२९
४	बांदा केवळ भेद न्यारोजी ४२	३०
५	बांदा मत भुले भरमा माही ४४	३१
६	बांदा मोख जिके जन जासी ४६	३४
७	बांदा ओ अरथ या होई ५१	३६
८	बांदा ओ जग मोहे ना जाणेला ५३	३९
९	बांदा ओ कोई भेद बतावे ५४	४५
१०	बांदा सत सबद हे न्यारा ६५	४८
११	बंदा से जन पूरा जोगी ६८	५०
१२	बंदा से नर मोख न जावे ६९	५१
१३	बांदा ने: अंछर सुण न्यारा ७०	५४

१४	बांदा तत्त राज ओ होई ७१	५५
१५	बंदा तिन भक्त कहुँ तोई ७२	५७
१६	ग्यानी ग्यान बिचार रुं देखो १३७	६२
१७	जन चाय हुवे सो खोज ज्यो हो १६४	६३
१८	जोगीयोने ढूंढत जुग भया १८१	६४
१९	जुग जोगी को नही १८५	६६
२०	कुण हे रे बाबा २०९	६८
२१	माया हेरे आतो माया नीर बख २३२	७०
२२	राजा हे अेसा जन कोई २९३	७२
२३	साधो भाई आनंद पद गरु होई ३१०	७३
२४	संतो सुणज्यो हो सब सबद बिचार ३३०	७५
२५	संतो ग्यान अरथ गम भारी ३३३	७६
२६	संतो अगम गेल गत न्यारी ३३४	७८
२७	संतो गुरु भक्ता नही कोई ३५७	७८
२८	उण सम्रथ की मे बलिहारी ४०८	८३

१७

|| पदराग जोग धनाश्री ||

अेसा समरथ साहेब मेरा

अेसा समरथ साहेब मेरा || ताँका गिगन मंडळ माँही डेरा रे लो || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मेरे साहेब ऐसे समर्थ है उनका डेरा गगन मंडल में है। || टेर ||

राव को रंक करे पल माही || रंक कुं राज दिरावे रे ||
ऊजड नगरी कूं तुरत बसावे || खाडा ज्हाँ पहाड़ बणावें रे लो || १ ||

वे समर्थ साहेब राव याने राजा को रंक याने निर्धन एक ही पल में कर देते है और रंक को एक ही पल में राजा बना देते है। वे उजड़े नगर को तुत बसाते है और जहाँ बहुत बडा गड्ढा है वहाँ पर्वत कर देते है। || १ ||

दूरा दिसे सो नेडा कर दे || नेडा कुं दुर पठावे रे ||
जीवत दिसे सो तुरंत बिणासे || मुवां कूं आण जिवाडे. रे लो || २ ||

और जो दूर दिखाई देता है उसे नजदीक कर देते है तथा जो नजदीक है उसे दूर भेज देते है। जो जिवीत दिखाई देता है उसका तुरंत विनाश कर देते है तथा मरे हुए को जीवीत कर देते है। || २ ||

सुख बिलास छुडावे पल मे || दु:ख कूं सुख माही लावे रे ||
रोग छत्तीसुँ ही पल माही खोवे || साजे के रोग लगावे रे लो || ३ ||

सभी सुख और विलास एक ही पल में छुड़ा देते है और दु:खी मनुष्य को सुख में लाते है। वे समर्थ साहेब छत्तीसों रोग एक पल में गँवा देते है तथा निरोगी को रोग लगाकर रोगी बना देते है।।३।

डील डिगाँम्बर भेष बणायो || कोप्याँ रसातळ मेले रे ||
गिरस्त रूप बण्या संसारी || ताँ घट नित हर खेले रे लो || ४ ||

और शरीर से नग्न भेष धारण करके जो साधू घूमते है उनके उपर उन्होंने यदी कोप किया तो उन नग्न वेषधारी साधुओं को रसातल में भेज देते है और ग्रहस्थी रुपी जो संसारी बने हुए है उनके घट में हर रात-दिन खेलते है। ।।४।।

के सुखराम भऱ्या सब सोखे || रीता फेर भराई रे ||
राम करेगा सोई हुवेगा || तुम सार हे काँई रे लो || ५ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो भरा हुआ है उसका शोषण कर लेते है तथा जो खाली है उसे भर देते है इसलिए,राम याने समर्थ साहेब जो करेंगे वही होगा। तुम्हारे स्वाधीन याने हाथ में क्या है? || ५ ||

१८

|| पदराग चरचरी ||

अेसे अवगत आप साँई

अेसे अवगत आप साँई ।। मेहेमा काहा दीजिये ।।
सेस मुखा सूं सेस गावे ।। तोहि पार न लीजिये ।। टेर ।।

हे स्वामी,आप ऐसे अविगत हो की आपकी गती किसीसे जानी नहीं जाती। अविगत आपकी महिमा तीन लोक,चौदा भवन में कोई कर नहीं सकता। शेषनाग हजार मुख से दो हजार जीभ्यासे आपकी महिमा करता फिर भी उसे आपकी गती का पार नहीं आया।टेर।

फूल्यो हिरणक बोहोत भारी ।। शिव बिस्न ब्रम्हा हारियो ।।
आप अवगत मांय निकसे ।। पटक राखस मारियो ।। १ ।।

राक्षस हिरण्याक्ष मन में बहुत भारी फुलता था। उससे ब्रम्हा,विष्णु,महेश ये सभी देव हार गए थे। आप अविगत उसके अंदर से ही निकलकर उसके साथ हजार वर्ष तक युध्द कर अंतिम में उसे जमीन पर पटककर मार गिराया ।।१।।

हरे बेद च्यारूं देत ।। धस्यो समंद मांही ।।
जब दुज ऊठ के ।। प्रणाम कियो साँई ।। २ ।।

शंखासूर ने ब्रम्हा के चारो वेद चुराकर वह समुद्र में जाकर छिप बैठा तब ब्रम्हाने उठकर आपको प्रणाम करके आपकी आराधना की ।।२।।

समद सब मथ सोज ।। संख मरोड लीया ।।
ब्रम्हा कूं बेद हरि ।। आप आण दीया ।। ३ ।।

तब आपने सारे समुद्र का मंथन करके शंखासूर को खोजकर मरोड डाला और स्वयम् हरी आपने ब्रम्हा को वेद लाकर दिए ।।३।।

शिव में भीड गाढ़ी पडी ।। मोहनी रूप धारियो ।।
के सुखदेव मार दुष्ट कुं ।। शिव को कारज सारियो ।। ४ ।।

महादेव के पास से भस्मासूर ने कपट से भस्मी कडा ले लिया और महादेव को भस्म करने लगा। ऐसे भारी संकट मे फँसे हुए महादेव ने आपकी आराधना की तो आपने मोहीनी का रुप धारण कर भस्मासूर दृष्ट को मारकर महादेव का कार्य पूर्ण किया ऐसे अविगत आप दयालू हो। ऐसे ही मेरे पर आवागमन का काल का संकट पडा है तो आप अविगत मेरे पर दया कर मेरा यह संकट निवारण कर दो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।४।।

१९

।। पदराग चरचरी ।।

अेसे ही बोहो बेद कुराण
अेसे ही बोहो बेद कुराण ।। भरे सायद तेरी ।।
अबे दयाल दया देख राख लाज मेरी ।। टेर ।।

हे भक्तवत्सल,आप भक्तों के संकट निवारण करते यह हिन्दु का वेद मुझपर मुसलमानो का कुराण साक्ष भरता। अब दयाळु दया करके मुझपर भी काल का जन्मने मरनेका भारी

संकट पडा है तो आप मुझपर दयाकर उस संकट से बचाकर मेरी लाज रखो ।।टेर।।

सरणे आय न डूबो कोई ।। भगत बिछल तोकूं कयो ।।
जात पात कुळ हीन ।। कपटी तार लियो ।। १ ।।

आज तक आपके शरण में आया हुआ कोई भी डूबा नहीं इसकारण आपको भक्तवत्सल कहते। आपने जाती पाती न देखते,कुलहीन,कपटी आदि सबको तार दिया। इसलिए आप मुझपर दयाकर मुझे भी काल से तार दो ।।१।।

पतत पावन अधम उधारण ।। सुन्यो बिड़द तेरो ।।
साख बूज सरण आयो ।। पतित नाव मेरो ।। २ ।।

साई,पतीत पावन अधम उधारक यह आपका बिड्द है यह मैंने सुना। मैंने आप पतीत पावन अधम उधारण याने पापीयोसे पापी का उध्दारण करनेवाले हो यह आपकी किर्ती सुनकर मैं पापी हूँ और पापीयोंको आप तारते हो यह सोच रखकर आपके शरण में आया ।।२।।

गीद भील गिनका तारी ।। लोद्यो सेना नाइं ।।
घाटम मेणो अज्या मेल ।। सजनो कसाई ।। ३ ।।

स्वामी,आपने पहले भी मरे हुए जानवर खानेवाला गिध्द,जरायु संपाती,भिल्ल ग्रहक, गणिका आदि पापीयो को तारा। आपने पापी लोधा,सेना न्हाई आदि को तारा। आपने चोर मेणा घाटम को,पापी अजामेळ को,कसाई सजन को तारा ।।३।।

कामी क्रोधी कुटलीता रे ।। काहा बिड़द दीजिये ।।
के सुखराम सरण मै तेरी ।। मेरो कारज कीजिये ।। ४ ।।

आपने अनंत कामी,क्रोधी लोगो को भी तारा। आपका क्या बिड्द वर्णन करना? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,हे सांई,मैं तेरे शरण में आया हूँ इसलिए दया करके मेरा भी जन्म–मरण मिटाने का कारज सार दो ।।४।।

२१

।। पदराग चरचरी ।।

अेसे स्याम राम भगत
अेसे स्याम राम भगत बिछल कवायो ।।
ज्याँ ज्याँ भीड पडी भगतन में ।। ताहाँ तां दोड आयो ।। टेर ।।

स्वामी,जहाँ जहाँ भक्त जनोपर संकट पडे वहाँ वहाँ आप दौड्कर पहुँचे। आप ऐसे भक्त वत्सल हो। ।।टेर।।

गहीं जब दुशासन द्रौपत ।। ध्यान तेरो धर्‌यो ।।
बंध्यो चिर गज सेंहंस ।। पत राख लियो ।। १ ।।

द्रौपदी को दु:शासन ने निच मतीसे पकडा। बिकट स्थिती में द्रौपदी ने स्वामी आपका ध्यान किया,तब स्वामी आपने दस हजार हाथी के भार का द्रौपदी का वस्त्र बढा दिया

इसप्रकार स्वामी आपने द्रौपदी की लाज रख दी। ।।१।।

धृव छाड़ घर कूं गयो बन में ।। अंतर ध्यान तेरो धऱ्यो ।।
आप अवगत इसे सांई ।। अटल राज ध्रुनो कऱ्यो ।। २ ।।

स्वामी,ध्रुव पाँच वर्ष की आयु में अपना राजघर त्यागकर बन में गया और अंतर में स्वामी आपका ध्यान किया तब स्वामी आपने ध्रुव को ध्रुव से कोई छिन्न नहीं सकता ऐसा अटल पद का राज दिया। ।।२।।

हिरणाक मार पृथी राख लिवी ।। प्रहलाद जन ऊबारियो ।।
गज ग्राह फंद काट ।। कीचक दाणो मारियो ।। ३ ।।

हे स्वामी,हिरण्याक्ष राक्षस पृथ्वी को रसातल में ले जा रहा था,प्रल्हाद ने उस हिरण्याक्ष को मारकर पृथ्वी रसातल में जाने से बचा दी और सभी जीव मरनेसे बच गए। हाथी को मगर से बचाकर हाथी के जम के फंद काट दिए। वैराट राजा का जीजा राक्षस किचक और उसके सौ भाईयों को मारकर जगत के नर–नारियों को इन राक्षसों से बचाया। ।।३।।

लाख मेहल रखे पांडव ।। दळ बिच भवरी ब्यात हे ।।
सुखराम राम मीरां लियो ।। अेसे अवगत नाथ हे ।। ४ ।।

लाख महल से पांड्वो को राख होने से बचाया तथा महाभारत में के युध्द के समय, टिटीहरी फौज के बीच में प्रसूती हो रही थी,उस समय टिटीहरी ने,ऐसा आवाज किया, (टीटीवी टीटीवी टीटीवी)ऐसा टिटीहरी ने आवाज किया और यह पुकार सुनते ही,एक हाथी का घंटा तोडकर उस टिटीहरी के अंडे के उपर ढक दिया बडी टोकरी के जैसा घंटा उसके उपर ढक देने से इतना भयंकर युध्द हुआ तो भी उसे धक्का भी नहीं लगा। युध्द समाप्त होने पर कृष्ण ने वह घंटा हटाया। इसी तरह से मीरा ने भी राम नाम लिया। उस मीरा का जहर से लेकर सर्प तक और सर्प से लेकर जहरीले किडो से रक्षा की। वो ऐसे अविगत नाथ है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

२७

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

अवगत न्यारो हे अवगत न्यारो हे
अवगत न्यारो हे अवगत न्यारो हे ।। वां गत बिरळा जाणे रे ।।
माया रूप शब्द या घट मे ।। तां कूं बोहोत बखाणे रे लो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अविगत याने सतनाद याने सतशब्द यह घट में दसवेद्वार में ब्रम्हंड में जो नाद घोरता उससे न्यारा है। ऐसा निराला सतशब्द कोई एखाद बिरला संत ही जानता। उस अविगत को बिरलाही संत जानते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज क्यों कहते?तो वह अविगत सतस्वरुप साई माया,ब्रम्ह,५आत्मा,मन इनकी समझसे लखने में नहीं आता। इस अविगत सतशब्द को समझनेके लिए ५

आत्मा,मन,ब्रम्ह,माया इनकी परे की याने ही इससे उंडी याने झिनी समझ चाहिए,यह सतशब्द याने अविगत सभीसे और इस हंससे भी झिना है। इसलिए इस अविगत को समझनेके लिए झिनी याने उंडी समझ चाहिए और ऐसी उंडी समझ प्राप्त किये हुए जन बिरला ही रहते । ।।टेर।।

नाभ कंवळ मे साहिब बैठा ।। करता निस दिन बोले रे ।।
रमता राम रमे घट भीतर ।। जडे. उघाडे खोले रे लो ।। १ ।।

ये ज्ञानी समझते की यह सोहम शब्द हर देह में नाभी में बैठा है। यह सोहम शब्द नाभी में नहीं बैठता था तो जीव जिस देह में बैठा है उस देह में नख से शिखतक चेतनता ही नहीं रहती थी। वह नाभी में बैठा है इसलिए देह में चेतनता है। यह देह को चेतन देने की गती जीव के स्वयम् चेतन विधी से न्यारी है। इसलिए वह सोहम जीव का अविगत साहेब है। वह नाभी में बैठकर पुरे देह में नख से शिखतक चेतनता लाता इसलिए जीव रात-दिन बोलता। जीव स्वयम् के आधार से कुछ नहीं कर सकता इसलिए जीव यह कर्ता नहीं है। जीव का सोहम शब्द यही कर्ता है। इसकी गती जीव के चेतन गती से न्यारी है। इसलिए वह जीव का अविगत कर्ता है। यह सोहम शब्द देह में नख से शिखतक रमता है और वही जीव के देह को घडता और सभी विधियाँ खोल के देह को चलाता इसलिए वह अविगत रमता राम है। ।।१।।

कानाँ सुणे नेण सूं देखे ।। घ्राण बासना लेवे रे ।।
रसणा सीस बिराजे सांई ।। परख साव सब देवेरे लो ।। २ ।।

सोहम ज्ञानी कहते देह को यह सोहम शब्द नख से शिखतक चेतनता देता। इसलिए जीव कान से सुनता,आँखों से देखता,नाक से खुशबु लेता। यह सोहम शब्द नख से शिखतक देह को चेतनता नहीं देता था तो जीव कान से सुनता नहीं था,आँखों से देखता नहीं था, नाक से खुशबु लेता नहीं था। जीव तो एक जगह कंठकमल में बैठा है फिर जीव कान से सुनना,आँखों से देखना, नाक से सुंघना यह पुरे देह का कार्य कैसे कर सकता था?यह सोहम साई रसना के सिर पर याने जीभ पर विराजमान है और वही सभी स्वाद जीव को परख करा देता। जीव को उसके परख करा देने से ही सभी स्वाद की परख होती। इसप्रकार यह सोहम साई देह में नख से शिख तक है इसलिए जीव कान से सुनता,नाक से सुंघता,आँखों से देखता ऐसा यह सोहम शब्द है। यह जीव को कान से कैसे सुनाता, आँखों से कैसे दिखलाता,नाक से कैसे सुंघाता?यह जीव को देह से चेतनता देने की गती जीव के स्वयम् चेतन विधि से न्यारी है। इसलिए यह सोहम शब्द जीव के लिए माया के परे का अविगत है। ।।२।।

ब्रहमंड माय नाद सो गाजे ।। दसवे द्वार घर माँहीरे ।।
के सुखराम आद हर केवळ ।। तठा परे सुण क्राही रे लो ।। ३ ।।

ब्रम्हड में दसवेद्वार के घर में जो नाद बजता है वह आद हर केवल याने पारब्रम्ह के घर में का है। अवगत का नाद यह दसवेद्वार के घर में जो नाद बजता है उससे परे का न्यारा नाद है,यह समझो ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।। ३ ।।

१९८

।। पदराग गोडी ।।

केवल ध्यान धरे कोई जन

केवल ध्यान धरे कोई जन ।।

केवळ ध्यान धरे रे ।। जीवत पाँच मरे रे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जो सतस्वरुप केवल का ध्यान करते उनके शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध ये पाँचो जिंदे पुरुष सहज में मर जाते। ।।टेर।।

जनम जूण सब जाय चोरासी ।। सब सिध काज सरे रे ।। १ ।।

ऐसे हंस का चौरासी लाख जुग का जन्म-मरणे का फेरा खतम् हो जाता और अनंत सुख मिलने का सिध्द कार्य पूरा होता। ।।१।।

अष्ट सिध नव निध मुगती कहिये ।। निस दिन लार फिरे रे ।। २ ।।

केवल का ध्यान करता उसके पिछे आठ सिध्दाईयाँ,नौ निधियाँ और होनकाल की सभी बैकुंठ सरीखी मुक्तियाँ रात-दिन पिछे-पिछे उसके चरणो में दौड्ती फिरती। ।।२।।

गंगा जमणा सवे सुरसती ।। चरणा की आस करे रे ।। ३ ।।

ऐसे केवल का ध्यान करनेवालेकी गंगा,यमुना,सरस्वती भी चरणो की आशा करती। ।।३।।

सुरपुर नरपुर नाग निसाणा ।। मेहेमा सकळ करे रे ।। ४ ।।

सुरपुर याने देवता का लोक,नागपुर याने शेषनाग का लोक,नरपुर याने धरती के लोक सभी महिमा करते। ।।४।।

केहे सुखराम धरम नहिं होवे ।। करम न दोष चडे रे ।। ५ ।।

ऐसे केवल का ध्यान करनेवाले को त्रिगुणी माया का कोई भी धर्म न करने के कारण होनकाल का कोई भी कर्म तथा जरासा भी दोष नहीं लगता। ।।५।।

१९९

।। पदराग बिहगडो ।।

केवल ध्यान धरे जे जन

केवळ ध्यान धरे रे जे जन ।। केवळ ध्यान धरे रे ।।टेर।।

जो संत,इस कैवल्य का ध्यान धारण करते है,वे । ।। टेर ।।

अेक मुगत की काहा चली हे ।। सब सिध काज सरे रे ।।१।।

जो संत केवल ध्यान धारण करता है उसको त्रिगुणी माया के भक्ति से लगनेवाले महाप्रलय तक के एक मुक्ति के परे का सदा काल से मुक्ति का फल लगता है। उसका काल से छुट्ने का सभी कार्य सिध्द याने पूरा होता है। ।।१।।

सुरग पताळ भू लोक ज जीतो ।। जन मे ने फेर मरे रे ।।२।।

केवल ध्यान धरनेवाला संत स्वर्ग,पाताल और भुलोक को जितकर अमर लोक जाता है वह फिर जन्मता नहीं तथा मरता नहीं। ।।२।।

जीवत मुगत मे जाय बिराजे ।। निरभे होय बिचरे रे ।। जे जन केवळ ध्यान धरे रे ।।३।।

जो संत केवल ध्यान धरता है वह जीते जी काल के परे मुक्ति पद में जाता है और उसे मुक्ति पद प्राप्त होने के कारण संसार में निर्भय होकर रमता है। ।।३।।

ब्रम्हादिक सनकादिक शिवजी ।। मैहेमा इधक करे रे ।।४।।

जो जन कैवल्य का ध्यान धारण करते है उनकी वेद व्यास,नारद एवम् ब्रम्हा आदि देव और सनत,सनंदन,सनातन,सनदकुमार ऐसे सनकादिक तथा विष्णु और शिवजी ये बहुत ही महिमा करते है। ।।४।।

के सुखराम नाव गुण अेसो ।। आप सरिसो करे रे ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,केवल नाम का गुण ऐसा है,यह कैवल्य का नाम संतों को अपने जैसा काल से मुक्त ऐसा कैवल्य बना देता है। ।।५।।

२१४

।। पदराग बिलावल ।।

मे मल्ल सूं करतार का

मे मल्ल सूं करतार का ।। बाथक जन आवे ।।

पाडुगा बोहो भाँत ले ।। पिछे पिस्तावे ।। टेर ।।

मैं सृष्टि के करतार का पहलवान हूँ। मेरे से कोई भी माया का ज्ञानी कुस्ती लढेगा तो मैं उसे अनेक प्रकार से जमीनपर गिराकर चित करुँगा फिर वह मेरे से लढके हारने का पश्चाताप करेंगा। ।।टेर।।

दिस्ट हमारो देख के ।। पीछे कर जोड़ो ।।

आन भरोसो जाण के ।। हमसूं तुम तोड़ो ।। १ ।।

सतज्ञान आँखों से मेरा पराक्रम देखकर फिर मुझसे कुस्ती करने के लिए हाथ मिलाओ। अन्य माया के ज्ञानी समान जानकर हमसे तुम मत लढो। ।।१।।

पाँचूं जोधा पाड़के ।। मन सांवतं ढाया ।।

तुम केती अेक बात हो ।। ज्ञानी सुण भाया ।। २ ।।

मैंने पाँचो विषय इंद्रिय योध्दा को और मन जैसे सामंत को जमीन पर गिराकर मारा ऐसा जब्बर पराक्रमी कर्तार का मल्ल हूँ। वीर सामंत के सिर कटनेपर सामंत के स्तन के जगह दिव्य आँखें खुलती है। इन दिव्य आँखों से उसे पूरा शत्रुओं का रण मैदान दिखते रहता। उन आँखों से शत्रु किधर से क्या चाल चलेगा यह दिखते रहता। ये शत्रु की सभी चाल देखकर यह अकेला ही सामंत शूरवीरता से सभी शत्रुओं के फौज से लढते रहता। वह किसी से भी गिरकर मरता नहीं। शत्रु की सारी फौज को मारकर अपनी तलवार अपने

हाथो से म्यान में डालता फिर निचे बैठता ऐसे शुरवीर को सामंत शूरवीर कहते है। ऐसे मेरे मन सामंत को मैंने गिराकर मार डाला फिर ज्ञानी भाई तुम मेरे पराक्रम के आगे कौनसी बडी बात हो?यह तुम समझ लो। ।।२।।

मोमें पोरस राम का ।। सुण लिज्यो लोई ।।
जीण सब कूं पेदा कऱ्यां ।। तां का बळ होई ।। ३ ।।

मुझमें रामजी का बल आया है यह तुम सभी माया के ज्ञानी सुन लो। जिसने ब्रम्हा,विष्णु, महादेव आदि सभी माया को पैदा किया है उसका बल मुझमें प्रगटा है। ।।३।।

सुण ज्यों सब सुखराम के ।। ओ मल्ल मस्ताया ।।
त्रुगटी स्हेर मंझार में ।। घुमत हे भाया ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी सुनो,मैं मस्ताया हुआ करतार का पहेलवान हुँ। मैं त्रिगुटी शहर में ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के घरो के सामने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव को ललकारते हुए छाती फुगाकर घुमते रहता हुँ यह ध्यान में रखो। ।।४।।

२४७

।। पदराग बिहगडो ।।

नर क्हाँ तेरी गत तूं हि ज जाणे
नर क्हाँ तेरी गत तूं हि जाणे ।।
गुरू गम जीव अक्कल नर माही ।। बुद्ध प्रवाण बखाणे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,समर्थ साई,तेरी गती जीव क्या जानेगा? तेरी गती सिर्फ तूं ही जानता है। जगत के जीवों को हद के गुरु ने ज्ञान बताया रहा वैसी समझ जीव को तेरी आयेगी या जीव को जैसी बुध्दि रही उस बुध्दि के प्रमाण से जीव तेरा वर्णन करेगा।।टेर।।

ब्यास पुराण अठारे कीया ।। तिंही पार न पायो ।।
ब्रम्हा बेद उचाऱ्या च्यारी ।। वांही अगम बतायो ।। १ ।।

व्यास ने अठ्ठारह पुराण बनाये। १)ब्रम्ह पुराण २) पदम पुराण ३) शिव पुराण ४) भागवत पुराण ५)मार्कण्डेय पुराण ६)अग्नी पुराण ७)नारद पुराण ८) भविष्योत्तर पुराण ९)ब्रम्हवैवर्त पुराण १०)लिंग पुराण ११)वराह पुराण १२)स्कंध पुराण १३)वामन पुराण १४) कर्म पुराण १५)मत्स पुराण १६)विष्णु पुराण १७)गरुड पुराण १८)ब्रम्हाण्ड पुराण तो भी उस वेदव्यास को तेरी गती का पार नहीं मिला। ब्रम्हाने तेरे गती पर चार वेद(ऋगवेद,यजुर्वेद,सामवेद,अथर्ववेद)बनाये परंतु ब्रम्हा को भी तेरे गती का पार नहीं आया। उसने भी तेरे गती को अगम याने जिसकी किसीको समझ नहीं ऐसा कहकर नेती-नेती कहा। ।।१।।

पीर पैकंबर और अवलिया ।। रिष मुनेश्वर कुहावे ।।
तीन लोक माया बस कीनी ।। तोई तेरो पार न पावे ।। २ ।।

इसीप्रकार संसार में चोबीस पीर हुये,अनेक पैगंबर हुये,अनगिनत औलिया हुये,८८,००० ऋषी मुनी हुये। इन पीर,पैगंबर,अवलीया,ऋषी मुनीयोने तीन लोको की माया वश में की याने अपने चाहना से माया को चलाया परंतु तेरे गती का पार इन किसी को भी मिला नहीं। ।।२।।

सब औतार तिथंकर कहिये ।। फेर देव अे तीनी ।।
तीन लोक भांजे फीर थापे ।। तेरी कळा नहीं चीनी ।। ३ ।।

सभी अवतार,सभी तिर्थंकर तथा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये तीनो देव माया में पराक्रमी रहे। इन अवतार,तिर्थंकर तथा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव में से कईयो में तो यहाँ तक पराक्रम है कि, वे पल में त्रिलोक को मिटा सकते और पुन: जैसे के वैसे पल में बना सकते। इतना मायावी भारी पराक्रम रहने के बाद भी तेरी कला इनमे से किसी ने भी जरासी भी जानी नहीं। ।।३।।

खसिया ब्होत पार के तांई ।। तुज छेहे किणिहन पायो ।।
समज समज नर ने: चे रहे ।। राम किणी न बतायो ।। ४ ।।

तेरा पार लेने के लिए अनेक लोगो ने रात-दिन समय बेसमय कसकर मेहनत की परंतु तेरा पार याने तेरी गती किसी को भी नहीं मिली। जीवब्रम्ह तथा होनकाली पारब्रम्ही ज्ञान समझ समझकर अनेक जीव निश्चल रहे। क्रुर काल के सामने डामगाये नहीं परंतु राम याने सतस्वरुप परमात्मा किसीने भी नहीं दिखाया। ।।४।।

तेरो वार पार घण नामी ।। अेक नांव मे आवे ।।
के सुखराम संत जन सारा ।। राम राम क्हे गावे ।। ५ ।।

तेरा भी वारपार नहीं है और तेरे नामो का भी वारपार नहीं है ऐसा तू घननामी याने बहुत नामी है जैसे सतनाम, आनंदपद, सतस्वरुप,साई,सतसाई,निजनाम,ने:अंछर,मुरारी,गोविंद, माधोजी,नारायण,परमेश्वर,परमात्मा,प्रभू,ईश्वर,निरंजन साई,निरंजन,निरगुण,कर्तार,समर्थ, परममोक्ष का दाता,दयाळू,कृपाळू,ब्रम्ह,परब्रम्ह,सतस्वरुप ब्रम्ह,वहाँगुरु,साहेब,सतसाहेब, राम आदि ऐसे अनेक तेरे नाम हैं। तू राम नाम छोड्के अन्य किसी भी नाम से प्रगट नहीं होता। तू एक रामनाम से ही प्रगट होता। जैसे किसीने रात-दिन सतनाम सतनाम भजा, किसीने वहाँगुरु वहाँगुरु भजा,किसीने समर्थ समर्थ भजा,किसीने सतशब्द सतशब्द भजा..... आदि आदि से तू जरासा भी प्रगट नहीं होता परंतु राम राम आती जाती साँस में भजते ही तू अखंडीत मुख से बोलते न आनेवाले पूरे घट में और घट के बाहर ध्वनि में प्रगट होता। इस ज्ञान समझसे और सतस्वरुपी संतो ने तुझे आती जाती साँस में याने साँस उसाँस में राम राम भज के घट में प्रगट किया। ऐसी तुझे प्रगट करने की विधि है याने तेरी गती पाने की रीत है, वह विधि आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा जगत के नर-नारियों को खुल्ली खुल्ली बतायी। ।।५।।

२५२

|| पदराग बिहगडो ||

निरंजण तेरी गत तुहिज जाणे

निरंजण तेरी गत तुहिज जाणे ||

ग्यानी सबे अडे जुग माही || पखे पखे नर ताणे || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, हे सतस्वरुप निंरजन,तुम्हारी गती तुही जानता तेरे सिवा अन्य कोई जानही नहीं सकता। ये जगत के ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि देवताओं के ज्ञानी तथा जगत के नर–नारी तेरी गती माया के ज्ञान से समझने की कोशिश करते परंतु तेरी गती माया के ज्ञान से किसी को भी समझती नहीं और समझेगी भी नहीं तेरी गती तो सतज्ञान से ही समझती इसलिए ये जगत के ज्ञानी और नर–नारी जितना समझा उस समझ को पूरा समझा करके धारते और आपस में अड्ते और अपना अपना पक्ष याने अपनी अपनी समझ को ताणते ।।टेर।।

मुसलमान दूध कूं टाळे || हिंदू सुण पख साती ||

कूंडा पंथी सर्ब संग जीमे || च्यार ब्रण संग जाती || १ ||

मुसलमान केवल दूध को टालते। मुसलमान सिर्फ एक माँ के भाई–बहन आपस में विवाह नहीं कर सकते परंतु एक पिता के भाई–बहन आपस में विवाह कर सकते। वही हिन्दु में स्वयम् की जात,माँ की जात,ऐसे सात पक्ष में विवाह नहीं कर सकते परंतु कुंडापंथी में चारो वर्णो में ब्राम्हण से लेकर चांडल तक कोई किसीके भी साथ विवाह सरीखे कर्म करते और साथ में भोजन करते। ।।१।।

पिरां सूंस सूर का लीया || सुरे औतार बखाणी ||

जख सुण खाय जीव सब ऊपर || दया तिथंकरा ठाणी || २ ||

मुसलमान सुअर की कसम खाते तो हिंदू गाय की कसम खाते। मुसलमान गाय को हलाहल करके मारते और खाते तो हिंदू सुअर को मारते और खाते। हिंदू और मुसलमान छोड्कर जगत के अन्य राक्षसी स्वभाव के लोग गाय और सुअर दोनो को खाते और तिर्थकर आँखों से न दिखनेवाले जीवों से लेकर तथा दिखनेवाले चिंटी से लेकर हाथी तक,सभी पर दया करते,किसीकी भी हिंसा करना भारी पाप समझते। ।।२।।

बळ कूं क्हो पठायो || अजामेळ कूं ताऱ्यो ||

गोतम रिख सिसट फीर आयो || इंद्र अेरापत हाऱ्यो || ३ ||

बळीराजा बडा दानी था,न्यायीक था। स्वर्ग पाने के पुण्य का था,ऐसा बलीराजा को स्वर्ग में न भेजते पाताल में भेज दिया और अजामेल क्रुर था,अन्यायीक था,नरक में गिरने का निच कर्मी था,उसे नरक न भेजते स्वर्ग में भेजा। इसलिए तेरी गती माया से किसीको समझती नहीं। अहल राजा के यहाँ स्वयंवर में गौतम राजा चलकर पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके पहुँच गया और इंद्र हाथीपर स्वार होकर भी स्वयंवर के जगह गौतम के पहले न

पहुँचते पश्चात पहुँचा ऐसी तेरी गती है। ।।३।।

पत्थर किया पात सुंई हळका ।। पात पहाड़ सूंई भारी ।।
तीन लोक मुख मे दीखलायां ।। ज्यां अंत अेसी खुवारी ।। ४ ।।

रामचंद्र ने लंका जाते समय सहज न उठाये जाते ऐसे बडे–बडे पत्थर समुद्र में डाले थे। वे पत्थर पेड के पत्तों से भी हलके हो गये थे और नामदेव ने तुलसी के पत्ते तराजू में डाले थे वे पत्ते पहाड के समान भारी हो गये थे ऐसी तेरी गती है, वह कोई समझ नहीं सकता। कृष्ण के बचपन में यशोदा माता ने मिट्टी खाया क्या यह देखने के लिए मुख खोलके बताने को कहा तब कृष्ण ने अपने माता को अपने मुख में तीन लोक चौदा भवन बताए। ऐसे कृष्ण का अंत भिल्ल के बाणो से हुआ और उसके दाह संस्कार के लिए भी कोई रिश्तेदार नहीं था ऐसी खराबी हुई इसलिए तेरी गती कोई नहीं समझ पाता। ।।४।।

नेमनाथ को केवळ उपज्यो ।। तीन लोक कूं जीता ।।
अंत काळ सारी सूध भूला ।। अेसे जुग बदीता ।। ५ ।।

नेमीनाथ को केवल उपजा था। उसने तीन लोक की माया जिती थी परंतु अंतकाल में उसे कोई बात की सुध नहीं थी,जुग भर बेसुध था। इसलिए तेरी गती कोई नहीं समझ पाता। ।।५।।

वांहि माय बेन सो वाही ।। वाज घरोघर धरणी ।।
याही संग क्रम सो बंधे ।। आईज लेर उधरणी ।। ६ ।।

स्त्री यही माता है,यही बहन है,यही पत्नी है,यही व्यभीचारीन है वह जगत को नरक में भेजती और यही संत है। यह जब संत बनती तो खुदके और पति के मिलके अनेक पिढीयों के अगती में पडे हुए जीवोंको तार देती और अपने कुख से जन्मे हुए पुत्र,पुत्री से अनेक जीव तारनेवाला संत बनाती। ।।६।।

क्हा कंहू मुज कहि न जावे ।। उथळ पुथल तेरी माया ।।
के सुखराम अरथ कर देख्या ।। तुज हर पार न पाया ।। ७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं तेरे वर्णन कैसे करुँ?तेरी माया उलटी सुलटी है। उस माया से तेरा वर्णन कहते नहीं आता। तेरा वर्णन माया से कितना भी उंडा सोचा तो भी हे हर,तेरा पार किसी को नहीं आता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।७।।

२९४

।। पदराग हिन्डोल ।।

राम केहत सम तिरीया हो

राम केहत सम तिरीया हो ।। वे अंत कांहाँ नहीं फिरीया हो ।। टेर ।।

मुख से राम कहते बराबर तिर गये,अंत समय में कही भी फिरे नहीं, अटके नहीं ।।टेर।।

अजामेळ सो कब कुळ राख्या ।। कद तन साझी किरीया हो ।। १ ।।

अजामेल यह ब्राम्हीण कुल में जन्मा था। उसने कभी भी वेदो में बताई हुई उच्च करणियाँ नहीं की थी। विषय विकारो के सभी निच निच कर्म किए थे। कर्मोके देखते उसे नरक ही मिलना था। अंतिम समय में उसे ले जाने के लिए जात से यमराज अपनी फौज लेकर आया था। यह यम की फौज पकड्के मारपीट करने लगी थी। इन यमदूतों के साथ दो हाथ करने के लिए इसने अपने लड्के को जिसका पूर्ण नाम रामनारायण था उसे राम्या राम्या करके बुलाने के लिए हाक लगाई। जैसेही अजामेल के मुख से राम यह शब्द निकला वैसेही यमराज यमदूतों के साथ शानी हो गया और अजामेल को छोड दिया। आगे अजामेल को देवदूत ले गए। इस अजामेल ने वेद की करणियाँ कभी नहीं कि थी,सिर्फ अंतसमय राम्या शब्द उच्चारण किया था जिससे अजामेल नरक में न फिरते स्वर्गादिक में गया। ऐसा राम यह शब्द है उसका उच्चारण करते ही नरक के दु:ख छुट गए। ।।१।।

बेस्या शिळ कीसी दिन पाळ्या ।। बिवाण ताकीदी ऊतरीया हो ।। २ ।।

वेश्या सदा विषय विकारो में रमती। उसे पर पुरुष के साथ भोग करना यह दोष है यह नहीं समझता इसलिए उसने कभी भी शील नहीं रखा था। उसका राम शब्द से उध्दार हो गया। दाखला–एक वेश्या थी। वह एक संत के पास,मंत्र लेने के लिए गई तब उस संत ने,उसे अनाधिकारीणी जानकर उस वेश्या से कहा कि,तोते को सिखाते समय जिस नाम का उच्चारण करते है,उसी नाम का तुम रटन करो। इसलिए उस वेश्या ने,एक तोता पालकर,बोल मिठ्ठू राम–राम ऐसा प्रतिदिन,एकदम सुबह–सुबह,अंधेरे में ही खाट पर पड़े–पड़े,उस तोते को सिखाती थी। एक दिन उस तोते के पिंजरे में सर्प घुसकर,उस तोते को मारकर,खा गया और उस सर्प से पिंजरे के बाहर,निकला नहीं जाता था,वेश्या भोर में ही उठकर,बोलने लगी,बोल मिठ्ठू राम–राम ऐसा मिठ्ठू को सिखाने लगी परंतु तोते को तो साँप खा गया था,फिर वह कहाँ से बोलेगा?मिठ्ठू बोला नहीं,ऐसा देखकर,तोता पिंजरे से उड़ गया क्या,यह देखने के लिए उस पिंजरे में उस वेश्या ने हाथ डाला तो उसमें बैठा हुआ साँप,बोल मिठ्ठू राम–राम ऐसा कहते समय ही डस लिया। उसी समय(मुख से रामनाम निकलते समय ही,उस वेश्या का जीव निकल गया,उसके लिए ताकीद से विमान उतरकर,उस वेश्या को ले गया।)इस वेश्या ने शील(ब्रम्हचर्य) किस दिन पाला था की,उसके लिए जल्दी से विमान उतरकर आया। ।।२।।

चंचळ चोर गऊ ऋषि माऱ्या ।। द्रब पराया हरीया हो ।। ३ ।।

चंचल चोर ने गाय और ऋषी को मारा था। उसने अनेको का धन लूटा था.....।।३।।

चोरां को शिर काटत बेळ्या ।। हर हर नांव ऊचारीया हो ।। ४ ।।

चोरो के सिर काटते समय चोरोने हर हर नाम का उच्चारण किया। ।।४।।

घाटम कूं तब बार पहूंती ।। घोडे को रंग फिरीया हो ।। ५ ।।

और घाटम(घाटमदास यह जाती का मेणा था। घाटमदास चार भाई थे। उनके पिता का

मरते समय जीव नहीं निकल रहा था। उनका जीव जब अटका हुआ था तब ये चारो भाई,अपने पिता से बोले कि,तुम्हारा जीव किसमे अटका हुआ है?हमे बताओ यानी हम वही करें तब उनके पिता ने कहा कि,मेरा तुम्हें इतना ही कहना है कि,तुम कही भी साधू की संगती में जाकर,साधू का ज्ञान कानो से मत सुनना। तुम लोग यदि साधू की संगती में जाकर साधू का ज्ञान सुनोगे तो अपना जो चोरी करने का धंधा है वह तुम छोड दोगे तब तुम भुखे मरोगे। इसलिए तुम्हें यह अंत समय का कहना है कि,साधू की संगती में जाकर साधू का ज्ञान कभी भी मत सुनना। इतना कहकर उनके पिता ने प्राण छोड़ा। बाद मे ये बच्चे चोरी तो हमेशा हाथ में आती नहीं थी,इसलिए लकड़ियों का गठ्ठा गाँव में बेचकर उदर निर्वाह करते थे। ये चारो भाई,हमेशा लकड़ी लेकर आते थे। इनके रास्ते में,एक जगह संतों की संगत होती थी,सत्संग में आगे से जाते समय,संतों के शब्द कान में पड़ने न पाये,इसलिए कान में अँगुली डालकर वहाँ से आगे निकलते थे। एक दिन सत्संग के सामने आते ही,घाटमदास के पैर में काँटा चुभ गया। काँटा निकाले बिना,आगे चला नहीं जा रहा था,इसलिए घाटम ने काँटा निकालने के लिए कान मे से अँगुली निकाली उसी समय संत के मुख से यह वाक्य निकला की,देवताओं की परछाई नहीं होती,देवताओं की परछाई नहीं पड़ती है सिर्फ इतना ही वाक्य सुना और मन मे कहा कि, इस इतनी सी बात से क्या होनेवाला है। इस बात से हम चोरी करना थोड़े छोड़नेवाले है। ऐसा मन में कहते हुए चलता हुआ। कुछ दिन बाद इन चारो भाइयों ने एक दिन राजा के महल में बड़ी भारी चोरी की और चोरी का धन प्रगट हो जायेगा,इसलिए अपने घर में गाड़ दिया। राजा के घर चोरी होने से राजा को बड़ा भारी खेद हुआ कि,चोर पकड़ में नहीं आए। मैं मेरी खुद की रक्षा नहीं कर सका तब प्रजा की रक्षा क्या करुँगा। चोर पकड़े नहीं गये,इसलिए राजा को खेद होने के कारण चोर पकड़ने के लिए राजा ने बड़ा इनाम भी रखा की,यदि कोई चोर को पकड़कर देगा तो वह यह बीड़ा उठाकर खाये,चोर पकड़कर देने पर उसे इनाम मिलेगा। वहाँ गाँव में कुछ दूतीया जमा हुई। उसमे से एक दूती उठकर, बीड़ा उठाकर खा लिया और बोली की,मैं चोर पकड़कर दूँगी परंतु मुझे राजा से मुझे जो चाहिए,उस सामान की मदद मिलनी चाहिए। वह(दूतीन)गाँव में पता करने के लिए गई तो उसे मेणा लोगो पर शक हुआ और ये मेणा लोग देवी के उपासक है ऐसा उसे पता लगा। ये मेणा लोग अष्टमी के दिन देवी की पूजा करके देवी को मानते है। एक दिन(अष्टमी के दिन)इस दूती ने देवी का रुप बड़ी चतुराई से धारण किया। अपने दो हाथ तो थे ही और भी छः हाथ नकली लगाकर,अष्टभुजा देवी बनी। किसी हाथ में त्रिशूल,किसी हाथ में तलवार,किसी हाथ में ढाल,किसी हाथ में नर मुंड,इस प्रकार से रुप बनाकर,एक भैंसे को श्रृंगार कर,अपने शरीरपर भी भरपूर गहने पहन लिए और भैंसे के उपर सवारी करके मेणा लोगोंकी पूजा में अष्टमी के दिन चित्कार लगाई। उस चित्कार से मेणा लोग अपने घर के

बाहर आकर देखते है तो बाहर देवी खड़ी है। उसे देखकर,सभी मेणा हाथ जोड़कर खड़े रहे। उन लोगो से वह(दूती) बोली,अरे,मैंने तुम्हें इतना द्रव्य दिया और तुम मुझे भूल गये। अभी भी तुम मुझे प्रसाद या मेरी कढ़ई वगैरे कुछ भी नहीं किये तब मेणा बोले,माता हम तुम्हें भूले हुए नहीं है,तुम्हारा दिया हुआ सारा धन,जमीन में गाड़कर रखा है परंतु राजा के डर से,हम उसे निकालते नहीं है। जिस दिन निकालेंगे,उस दिन तुम्हारी कढ़ई करेंगे। ऐसी बातें हो रही थी तभी अष्टमी का चंद्र उगकर उपर आया। जिससे उस दूतीन की छाया जमीन पर पड़ी। वह छाया देखकर,घाटम सभी से बोला कि,अरे, दगा है,इस रांड को नीचे खींचकर,गिराओ और घर में ले जाकर,इसे मार डालो नहीं तो,यह हम सबको मरवा डालेगी,फिर सभी मेणे मिलकर,उसे भैंसे से गिराकर मार डाले। उसके उपर के लाखो रुपये के गहने उतारकर,रातोंरात,उसे घर में ही जमीन में गाड़ दिए। इस कारण से सभी लोगोंकी,जान बची तब घाटमदास बोला कि,देखो मैंने संतों का एक शब्द सुना था कि, देवताओंकी छाया नहीं पड़ती है,संतोंके एक शब्द के ज्ञान का कितना गुण हुआ कि,राजा के यहाँ की,लाखो रुपये की चोरी,हमने पचा ली,नहीं तो राजा आज हम सबका सिर उड़ाने वाला था परंतु हम सभी बच गये। इसके अतिरिक्त इस रांड के,लाखो रुपये के गहने हमे घर बैठे–बैठे मिल गए। देखो,एक पाव पल की संतोंकी संगती का इतना गुण है,फिर हमेशा संगत करने मे कितना गुण होगा। मैं तो आज जाकर उस संत का शिष्य बनूँगा ऐसा कहकर वह अपनी जाती के लोगों को और अपने भाईयों को छोड़कर,संत के पास आकर बोला कि,मुझे शिष्य बना लो। संत ने पूछा,तुम कौन हो?घाटम बोला,मैं मेणा हूँ। संत ने कहा कि,तुम मेणा हो परंतु हमारा शिष्य बनने पर तुम्हें चोरी छोड़नी पड़ेगी तब घाटम बोला,महाराज,मैं चोरी करना छोड़कर,खाऊँगा क्या?हमारा तो धंधा ही चोरी का है,वह मत छुड़ाओ। संत ने कहा,तो भी तुम्हें कुछ नियम तो पालने ही पड़ेंगे जैसे कुछ भी हो जाय तो भी झूठ नहीं बोलना। झूठ बोलना तो,तुम्हें एकदम छोड़ना पड़ेगा और शाम को नियम पूर्वक संध्या करनी चाहिए। गरीबोंके घर चोरी मत करो तब घाटम बोला कि,मैं कभी भी,कही भी,कुछ भी हो गया तो भी झूठ नहीं बोलूँगा और संध्याकाल में संध्या किये बिना आगे नहीं जाऊँगा और गरीब के घर चोरी भी नहीं करुँगा । इतना कबूल करने पर महाराज ने उसे मंत्र दिया फिर एक दिन,घाटम चोरी करने के लिए राजदरबार में गया तब द्वारपाल ने पूछा,तुम कौन हो?घाटम बोला,मैं चोर हूँ। (क्योंकि घाटम को झूठ बोलना नहीं था।)इसलिए उसने चोर हूँ ऐसा कहा तब द्वारपाल उसे अच्छा आदमी समझकर बोला,ठाकुर साहब,ऐसे टेढ़ा क्यों बोलते हो?तुम्हें जाने के लिए कौन रोकता है बिना शक अंदर क्यों नहीं जाते हो?वहाँ से घाटम,घोड़ो के अस्तबल में आया,वहाँ उसने अस्तबल का एक अच्छा काला घोड़ा जो राजा की सवारी का था, उसे खोलने लगा तब चरबेदार(सैस)आकर घाटम से बोला,तुम कौन हो?घाटम ने

कहा,मैं चोर हूँ ,घोड़ा चुराकर ले जा रहा हूँ। सैस मन में सोचा कि,कोई चोर ऐसे थोड़े ही कहेगा की,मैं चोर हूँ और घोड़ा चुराकर ले जाता हूँ,ऐसा चोर नहीं कहेगा और चोर को दिन में राजा का घोड़ा चुराने की हिम्मत होगी क्या?ऐसा समझकर सैस बोला,ठाकुर साहब,टेढ़ा क्यों बोलते हो,मैं तुम्हें घोड़ा ले जाने के लिए मनाही थोड़े ही कर रहा हूँ,मेरा पूछना काम है इसलिए सहज मैंने पूछा की,आप कौन हो?अब आप घोड़ा किसलिए खोलते हो,मैं ही आपको जीन,लगाम आदी लगाकर देता हूँ,फिर घोड़ा ले जाइये। आप क्यों तकलीफ उठाते हो?फिर उस सैस ने अच्छी जीन और लगाम लगा दिया और घाटमदास घोड़े पर सवार होकर निकल गया। बाद में दो घंटे बाद राजा को शिकार पर जाने का काम पड़ा तब राजा ने घोड़ा मँगाया तब सैस बोला,घोड़ा तो दो घंटे पहले ही ले गया। कौन ले गया?ऐसा सैस से पूछने पर सैस बोला कि,मैं चोर हूँ ऐसा कहकर ले गया। वह(घाटमदास)द्वारपाल के सामने अस्तबल में आया और द्वारपाल के सामने ही घोड़ा ले गया,दिन दहाड़े ले गया,उसे मैं चोर कैसे समझू? फिर राजा ने उसे पकड़ने के लिए दूसरे घुड़सवार छोड़े,वे घुड़सवार,घाटम के ले गये घोड़े के पैरों का निशाण देखते-देखते निकले। आगे घाटमदास,सूर्यास्त होते हुए देखकर संध्या का समय बीत रहा है इसलिए जंगल में ही संध्या करने के लिए बैठ गया।(घाटम दास के संध्या करते हुए बैठे रहने पर बोहरु(पकड़ने के लिए आये हुए घुड़सवार)आकर पहुँच गये।(वहाँ घाटमदास, संध्या करते हुए बैठा हुआ दिखाई दिया और घोड़ा पास के पेड़ को बांधा हुआ दिखाई दिया परंतु राजा का)घोड़ा काला था। उस घोड़े का रंग बदलकर वह(इन घुड़सवारो को सफेद दिखाई देने लगा इसलिए वे चुपचाप वहाँ खड़े रहे। घाटम की संध्या हो जाने पर घाटम ने उनसे पूछा,क्यों इधर कहाँ आये?वे बोले,हमारे राजा का घोड़ा चोरी हो गया है इसलिए चोर को पकड़ने के लिए आये थे लेकिन हमारा घोड़ा तो काला था और यह घोड़ा सफेद है। घाटम बोला कि,यह घोड़ा तुम्हारा ही है यह तुम्हारे अस्तबल में ले जाकर बाँधो,फिर काला हो जायेगा) ।। ५ ।।

लोधे ध्रम दया कद पाळी ।। पकड प्रभू बस करिया हो ।। ६ ।।

और लोधा(शिकार करने वाला,हत्या करनेवाला)था। उसने दया और धर्म कभी पाला नहीं था कि,प्रभु को पकड़कर अपने वश में करके(गुदा के उपर से,तीर से मारते हुए तपस्वी के सामने लाया। एक वन में एक तपस्वी मौन धारण करके ध्यान में पक्का मग्न होकर ध्यान करते हुए बैठा हुआ था। वहाँ यह लोधा भी शिकार खेलते-खेलते उधर गया। वहाँ उसने(लोधाने)उस तपस्वी को ध्यान में बैठा हुआ देखकर यह भी मेरे जैसा कोई शिकारी ही है ऐसा सोचा। उस तपस्वी के उरप इस लोधा को दया आने से यह क्यों बैठा है?ऐसा पूछने के लिए उसके पास गया और उस तपस्वी की बाँह पकड़कर हिलाने लगा और उस तपस्वी का ध्यान छुड़ाकर जगाया। उस तपस्वी से लोधा पूछने

लगा कि,तुम यहाँ जंगल में किसलिए आकर बैठे हो?तुम्हारे पास कपड़े कुछ भी नहीं है तो तुम्हें किसी चोर ने लूट लिया क्या?या तुम घर के मनुष्योंसे रुठकर आकर बैठा है क्या? या तुम्हारी पत्नि ने,तुम्हें कुछ बोला क्या?जिससे तुम यहाँ आकर बैठे हो। तुम्हारी पत्नि और धन्या-सुन्या कहाँ है?यह मुझे बोलकर बता,तुम्हारे पास धन्या-सुन्या न हो, तो मेरी धन्या-सुन्या तुम्हें दे देता हूँ। तुम्हारी पत्नि नहीं होगी,तो मैं मेरी पत्नि भी,तुम्हें दे देता हूँ। तुम शिकार के लिए बैठे होगे,तो मैं तुम्हें जिवीत दो प्राणी पकड़ कर ला देता हूँ। तुम कहोगे तो जानवर मारकर तुम्हारे लिए ला देता हूँ। इस प्रकार से लोधा उस तपस्वी से बहुत अपनापन से बिनती करने लगा तब तपस्वी ने मन में सोचा कि,मेरे ध्यान करते समय यह क्या विघ्न आकर पड़ गया। यह मुझे कहता है कि,पत्नि देता हूँ,कपड़े देता हूँ जिवीत जानवर ला देता हूँ,मारकर ला देता हूँ ऐसा कह रहा है। उसे तो कुछ भी कहकर इससे छुटकारा कर लेना चाहिए,नहीं तो यह तकलीफ दूर नहीं होगी ऐसा सोचकर मौनव्रत छोड़कर,वह तपस्वी उस लोधा से बोला,तुम मेरे भाई हो,तुमने मेरे मन के जैसी बात कही है तुम मुझे ऐसा एक जानवर पकड़कर ला दो जिसको चार हाथ हो और चारो हाथों में शंख,चक्र,गदा और पद्म जिसके पास हो और पितांबर पहने हुए,जिसके गले में वैजन्ती माला तथा सिर पर मुकुट हो ऐसा सिर्फ एक जानवर मुझे तुम पकड़कर ला दो। लोधा ने कहा,ऐसा जानवर मैं तुम्हें सूर्यास्त होने के पहले ला दूँगा ऐसा जानवर मैं तुम्हें नहीं लाऊँगा तो मैं मेरा जीव ही नहीं रखूँगा,मैं अपनी जान दे दूँगा ऐसा बोलकर वहाँ से वह निकला और वन में,पहाड़ में खोजने लगा। जानवरो को पकड़-पकड़ कर देखने लगा। पकड़े हुए जानवरो के पास चार हाथ,शंख,चक्र,गदा,पद्म न होने के कारण दूसरे जानवरो को पकड़ने लगा। इधर संध्याकाल होते आयी,फिर तपस्वी का बताया हुआ जानवर लोधा को मिला नहीं,तब उस लोधेने अपनी जान देने का विचार किया की तीर अपनी छाती में मार लूँ इतने मे प्रभू,उधर से दौड़ते हुए आये और बोले,अरे,मरो मत,यह देखो मैं आ गया हूँ तब लोधा ने,उसके पास शंख,चक्र,गदा,पद्म,तपस्वी के बताए अनुसार सभी वस्तु देखकर उसके ही पितांबर को उसके गले में बाँधकर अपने स्वाधीन किया और एक हाथ में उसके गले में बाँधा हुआ पितांबर पकड़ा और दूसरे हाथ में तीर लेकर उस तीर से उसके गुदा पर मार-मार कर कहने लगा,चल-चल,जल्दी चल दिन डूब जायेगा मैंने दिन डूबने के पहले तुम्हें जानवर ला दूँगा ऐसा वादा करके मैं आया हूँ। दिन डूब गया तो मेरा वादा टूट जायेगा ऐसा कहते जाता और तीर से मारते जाता था। इस तरह से मारते-मारते उसको तपस्वी के आसन पर लाकर बोला कि,यह लो तुम्हारा जानवर,फिर तपस्वी बोला,अरे,यह जानवर नहीं है,भगवान है,इनके पैरों में गिरकर दर्शन लो। इसतरह से वह लोधा भी भक्त हो गया। || ६ ||

झुटा फळ शिबरी का खाया || कब चोका चित धरिया हो || ७ ||

शबरी के(भीलनी के) झूठे बेर खाये।(उस शबरी ने)कब चौका लगाया था और कभी चित्त में भी लाया था क्या,कि,(चौका लगाये बिना,प्रभु फल नहीं खायेंगे।) ।। ७ ।।

जळती अगन में मिनिया राख्या ।। राम पुकारी श्रीया हो ।। ८ ।।

और जलती हुई आग में बिल्ली के बच्चे कैसे बचा लिए(उस बिल्ली के बच्चों ने तो अपने मुँख से राम नाम नहीं बोला था,यह राम नाम दूसरे ने श्रीयादे कुंभारीन ने बोला था,वही श्रीयादे,बाद में प्रल्हाद की गुरु हुई। इस श्रीयादे के राम कहने से आँवे(भट्ठे)की आग में बिल्ली के बच्चे सुरक्षित रह गये ।)।। ८ ।।

कीता सेना सजन कसाई ।। पतत अनेकाँ तिरीया हो ।। ९ ।।

(ये तो भी क्या परंतु इसकी अपेक्षा भी पतीत कीता सेना(न्हाई)और सजन कसाई ऐसे अनेक पापी तर गये । ।। ९ ।।

क्हे सुखराम नाम हे अेसा ।। करणी बीना ऊधरीया हो ।। १० ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह नाम ऐसा है(इस नाम से अनेक पतीत(बुरी करणी करनेवाले)अच्छी करणी किये बिना भी उनका उद्धार हो गया। ।।१०।।

३४०

।। पदराग बिहगडो ।।

संतो भाई अेसा नाम कहावे ।।

जे कोई समज सुळज ऊर धारे ।। सब सुख हाजर आवे ।। टेर ।।

संतो भाई,सृष्टि कर्ता यह सभी सुखों का कर्तार है। यह समझकर याने सुलझकर कोई संत कर्ता का नाम हृदय में धारण करेगा तो वह नाम धारण करनेवाले संत को कर्ता सभी सुख ला लाकर हाजीर करेगा। ।।टेर।।

ओर सकळ बिध करणी साध्या ।। अेक अेक फळ लागे ।।

निज तत्त नाव अरध ऊर धार्‍या ।। अनंत असंख फळ जागे ।। १ ।।

कर्ता का नाम छोड्कर और सभी माया की करणीयों की विधियाँ साधने से जिसकी जिसकी साधना करोगे उस उस करणी का जो जो फल है वह लगेगा,परंतु कर्ता के नाम समान सभी सुख नहीं हाजीर होंगे। कर्ता का नाम याने निजतत्त का नाम हृदय में धारण करने से माया के करणीयों से प्रगट होनेवाले ३ लोक १४ भवन के सभी सुखों के फल जागृत होते। ।।१।।

जो जन ब्रम्ह भेद उर लेवे ।। सहज राम मुख बोले ।।

तां जन लार नवो निध मुगती ।। सिध्द सकळ संग डोले ।। २ ।।

जो संत सतस्वरुप ब्रम्ह पाने का भेद हृदय में धारन करेगा मतलब सहज में रामनाम मुख से बोलेगा उस संत के पिछे अष्ट सिध्दी,नौ निधी तथा सभी प्रकार की मुक्तियाँ आदि सभी इर्द गिर्द फिरती है। ।।२।।

जे इतबार नहिं कोई मानो ।। भागवत सुण जाई ।।

बाष्ट मुनि रिष विश्वामित्र ।। अड जीत्यो कुण भाई ।। ३ ।।

यदि तुम्हें इस बात का भरोसा नहीं है,तो भागवत जाकर सुन लो, कर्ता नाम का भक्त वशिष्ठ मुनी और माया भक्त विश्वामित्र में ऐंठ पड्ने पर जिता कौन?विश्वामित्र के साठ हजार साल की कड्क तपस्या से धरती का बोझा जरासा भी कम नहीं हुआ,वही बोझा विश्वामित्र को वशिष्ठ मुनी ने दिये हुए पाव पल के सतस्वरुप के संगत के बल से जरासा भी नहीं रहा। ।।३।।

सुर नर सेंस सकळ जस बोले ।। करम भस्म सब होई ।।
केहे सुखराम भक्त करतां की ।। जो जन धारे कोई ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,स्वर्ग के सभी देवता,मृत्युलोक के सभी मनुष्य तथा नागलोक के सभी लोक कर्ता की भक्ति धारण करनेवाले का जस गाते है और कहते है कि,कर्ता की भक्ति करनेवाले के सभी काल रुपी कर्म भस्म हो जाते है और वह संत काल से मुक्त होकर अनंत असंख्य सुखों का फल पाता है। ।।४।।

२४

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

आणंद लोक तोरे बंदा वे हंस जासी

आणंद लोक तोरे बंदा वे हंस जासी ।। सतगुरां जीरा जस गावे बे ।।
मिलीया हरख बिछड़ीयां ऊदासी ।। हियो छिल छिल आवे बे ।। टेर ।।

अरे मनुष्य,आनंद लोक तो वे हंस जाते जो सतगुरु का प्रताप समझकर उनकी महिमा गाते, उनका यश गाते,ऐसे सतगुरु से मिलने पर जिस हंस को हर्ष होता और बिछड्ने पर दु:ख होता वे आनंद लोक जाते। जिनका हृदय सतगुरु के मिलने के लिए तड्पता,वे आनंद लोक जाते। जो माया के सुखों के लिए तड्पते वे आनंद लोक कभी नहीं पहुँचते। ।।टेर।।

सतस्वरूप मिलणे कूं सत हे ।। वे प्रेम नेम बिना भारी बे ।।
लागी रे चोट सब्द की तनमें ।। बिसर गई सुध सारी बे ।। १ ।।

सतगरु मिलने पर हर्ष और बिछड्ने पर उदासी एवम् सतगरु मिलने पर पलपल मे हृदय में सुख और सतगुरु बिछड्ने पर पल-पल में हृदय में दु:ख से भरके आता है सिर्फ यही विधि सतस्वरुप घट में सतस्वरुप प्रगट करने के लिए सत है। यह विधि सतगुरु से प्रेम आना और सतगुरु के जगत में बनाये हुए नियम पालना इससे भारी है ,ऐसी न्यारी है ऐसे शिष्य को जब सतगुरु के शब्दो की चोट लगती है तब उस शिष्य की सभी सुध्दि और बुध्दि की भुल पड्ती है। ।।१।।

लाख बात की अेक बात हे ।। प्रगट कहूं बजाई बे ।।
सतगुराजी सूं मन धुजण लागो ।। जब बणसी घट मांई बे ।। २ ।।

लाख बात की एक बात है,वह बात मैं प्रगट बजाकर कहता हूँ,जब यह मन सतगुरु से

आनंद लोक पाने के लिए व्याकुल होगा और सतगुरु मेरे पर किसी कारण रुठ गए तो मुझे आंनद पद कभी नहीं मिल पायेगा इस कारण जिस शिष्य का मन धुजने लगेगा तब घट में आनंदपद पान की बात बनेगी। ।।२।।

जाँ गुरां संग नाँव घट जागे ।। वे सतगुरू सिर धारो बे ।।
ज्ञान ध्यान दूजा गुरू झुटा ।। से सब दूर बिडारो बे ।। ३ ।।

जगत में गुरु अनंत है। उसमें ने:अंछर नांव घट में जागृत करा देनेवाले बिरले है। इसलिए कोई भी कनफुंका गुरु न करते जिस सतगुरु से ने:अंछर नाम घट में जागृत होता और हंस को आनंदलोक में जाते आता वे सतगुरु सिरपर धारण करो। माया के सभी ज्ञान, ध्यान बताने वाले गुरु तजो। वे घट में नाम प्रगट करा देने में असमर्थ है,झुटे है,वे बोलने के गुरु है इसलिए ऐसे सभी गुरु त्यागो,दूर रखो। ।।३।।

के सुखराम सोई जन साचा ।। साचा सतगुरू जावे बे ।।
करणी बीना नाँव घट जागे ।। अखंड ऊजाळा होवे बे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जगत में वेही संत सच्चे है,जो घट में नाम प्रगट करा देनेवाले सच्चे सतगुरु के शरण में जाते है। ऐसे सतगुरु के दया से माया की कोई क्रिया करणी न करते आनंद लोक पहुँचानेवाला नाम घट में प्रगट होता और प्रगटे हुए नाम से पूर्ण घट में अखंडित उजाला होता। ।।४।।

४२३

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

या जग मे तो रे बंदा वे बड़ भागी
या जग मे तो रे बंदा वे बड़ भागी ।। सतगुरू जकाँही पीछाण्या बे ।।
केस बराबर अंतर नाही ।। ज्यां निजमन कर जाण्या बे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले अरे बंदा,अरे मनुष्य,इस जगत में जिसने सतगुरु पहचाना है और सतगुरु से एक बाल भी अंतर नहीं रखा है और जिसने निजमन से सतगुरु को जाना,वेही बडभागी है,अन्य सभी बडे अभागी है। ।।टेर।।

म्हेरी स्हेत तन मन धन कुं ।। ले गुरू च्रणा आण्या बे ।।
बचन कहे सो सब सत माने ।। ज्यां गूरू ध्रम पीछाण्या बे ।। १ ।।

पत्नी सहित तन,मन,धन सभी गुरु चरणा में लगाया है और गुरु जो भी वचन बोलते उसे विश्वास के साथ सत्य पकडकर मानता है उसीने गुरु धर्म पहचाना है। ।।१।।

गंगा जमना उलटी ब्हे चाले ।। भाण पिछम कूं ऊगे बे ।।
तो पण मन चिले नहीं मासो ।। तब घट प्रचो पूंगे बे ।। २ ।।

गंगा,जमुना धरती से पहाडपर चढकर उलटी बहने लगी,सुरज पश्चिम से उगा तो भी सतगुरु भवसागर से तारेंगे इसके विश्वास में मासाभर भी मन कम नहीं होता तब सतगुरु का पर्चा चमत्कार घट में प्रगटता। ।।२।।

अक बक पेम नेम सब छूटा ।। जग मरजाद न काई बे ।।
गुरू बेच्यो तो बिकणे लागो ।। तब सिष साचो भाई बे ।। ३ ।।

सतगुरु से अकबक प्रेम प्रगटता उस प्रेम में जगत की सारी सुध भुल जाता,जगत के कोई नियम या मर्यादा नहीं रख पाता और गुरुने बेच दिया तो बिक जाता और बिकने पर मन में आनंद से फुले नहीं समाता ऐसे शिष्य को असली शिष्य कहते। ।।३।।

सतस्वरूप आणंद पद कहीये ।। सो नहि माने कोई बे ।।
अेसो नेह गूरां सू घूळियो ।। निमष न न्यारो होई बे ।। ४ ।।

जिस शिष्य के मन को सतगुरु से बढकर सतस्वरुप,आनंद पद है यह मजूंर नहीं होता और सतगुरु के प्रेम में इतना घुल जाता की वह पलभर भी गुरुसे बिछड के नहीं रह सकता ऐसा शिष्य ही अस्सल शिष्य है। ।।४।।

आयां ऊठ खड़ो हुवे आगे ।। ऊंठया के संग ऊठे बे ।।
छाडर नेम पेम उर उपजे ।। जब सब गांठया फूटे बे ।। ५ ।।

सतगुरु आये तो उठकर सतगुरु के सामने खडा होता,वे बैठने के पश्चात बैठता और वे जब उठते तब उनके साथ उठता,ये सभी नियम सतगुरु के प्रेम के धुन में भुल जाता तब मन के भ्रम की सारी गाठे फुटती याने मन से धारे हुए सारे नियम खतम हो जाते।।।५।।

जब गुरूदेव सूज्या हे साहेब ।। तब अेसा अंग आवे बे ।।
सुण सुण ग्यान नेम अे पकड़े ।। से सब ढडी क्रावे बे ।। ६ ।।

जब गुरुदेवही साहेब है,सतस्वरुप है,आनंद पद है यह शिष्य को सत्तज्ञान से दिखता तब शिष्य का जाकर ऐसा स्वभाव होता। जो जगत के समान सतगुरु का ज्ञान सुन–सुनकर राजा बादशहा के साथ जगत के नियम पालता वैसे सतगुरु के साथ उठ बैठ करने के नियम पालते वे भेड स्वभाव के है। जैसे एक भेड दुजे भेड के पिछे बिना समझे सोचे चलती और जैसे पहली भेड चलते चलते कुएँ में गिरती वैसेही दुजी भी भेड उसके पिछे कुएँ में गिर जाती। अब वह पाणी में फुलकर मरेगी यह बिचार नहीं करती की, पहली भेड कुएँ में गिरी इसलिए मैं उसके पिछे जाकर गिरुँगी यह नहीं सोचती। ।।६।।

के सुखराम नेम तो सारा ।। जग म्रजादा होई बे ।।
याँ सूं तो सत्त साहेब नहीं रीजे ।। ब्होत जनम लग कोई बे ।। ७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,राजा बादशहा के समान सतगुरु आये तो उठकर सतगुरु के सामने जाना,उनके बैठने के पश्चात बैठना,और वे उठते है तब उनके साथ उठना यह राजा बादशाह के नियम मर्यादा है,ऐसे सतगुरु के कोई नियम नहीं रहते। ये नियम पालन से सतगुरु जन्म–जन्मतक भी कभी नहीं रिझते। सतगुरु तो शिष्य में प्रगटे हुए अकबक प्रेम से रिजते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते। ।।७।।

बांदा आणंद ब्रम्ह याँ सूंइ आगे
बांदा आणंद ब्रम्ह याँ सूंइ आगे ।।
वाँ सूं अजे अेक नहीं आयो ।। ना अब आयर जागे ।। टेर ।।

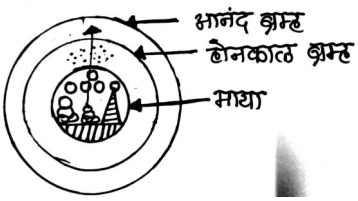

बांदा आनंद ब्रम्ह यह होनकाल ब्रम्ह से आगे है। वहाँ से आज दिनतक होनकाल में जिसप्रकार से हंस जगत में आये वैसे एक भी हंस आनंद ब्रम्ह से आया नहीं और आगे भी कोई भी निश्चितही आयेगा नहीं। ।।टेर।।

हूणकाळ सो ईश्वर कहीये ।। वाँ की अंछया सक्ती ।।
ब्रम्ह ब्रम्ह कर सबने गायो ।। आ हूणकाळ की भक्ती ।। १ ।।

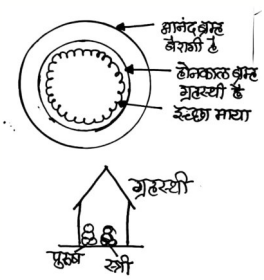

परापरी से आनंद ब्रम्ह और होनकाल ब्रम्ह ऐसे दो ब्रम्ह है। होनकाल ब्रम्ह के साथ इच्छा शक्ति यह माया है। जगत में जैसे ग्रहस्थी जीवन में पुरुष के साथ स्त्री रहती है वैसे होनकाल पुरुष के साथ इच्छा शक्ति यह स्त्री रहती है। इसकारण होनकाल ब्रम्ह यह ग्रहस्थी है और आनंद ब्रम्ह के साथ इच्छा माया यह स्त्री कभी नहीं रहती इसकारण आनंद ब्रम्ह यह बैरागी है,ग्रहस्थी नहीं है। सभी ज्ञानी,ध्यानी होनकाल ब्रम्ह को सृष्टी रचनेवाला ईश्वर मानते है और बैरागी ब्रम्ह–ब्रम्ह कर उसकी भक्ति करते है। ।।१।।

हूणकाळ सूं सब कुछ हूवा ।। फेर हुणो सोई होवे ।।
प्रगट अरथ जक्त के माही ।। ग्यानी कोय न जोवे ।। २ ।।

होनकाल से ३ लोक १४ भवन,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार और मनुष्य आदि सभी माया हुई और आगे भी इसीप्रकार सभी माया होते रहेगी, यह जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी प्रगटरुप से जानते फिर भी उसे बैरागी ब्रम्ह समझकर ब्रम्ह ब्रम्ह कर गाते याने उसे प्राप्त करने की विधि करते यह बैरागी नहीं है,माया में रचामचा है ऐसा कोई भी ज्ञानी सतज्ञान से परखने की कोशिश नहीं करते। ।।२।।

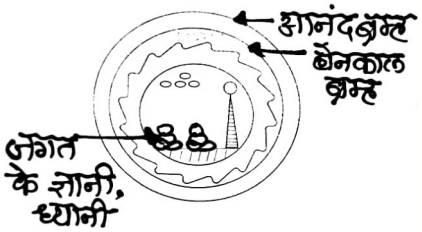

हूणकाळ को मन ओ चेतन ।। अंछया सक्ती होई ।।
यां दोन्याँ मिल कियो पसारो ।। तीन लोक नव सोई ।। ३ ।।

होनकाल का मन चेतन है और उसकी इच्छाशक्ति भी अचेतन माया है,यह कैसे?
(देह में जीव चेतन है और जीव को निकाला तो यह देह अचेतन है) इसप्रकार से होनकाल यह चेतन, इच्छा माया यह अचेतन है। होनकाल चेतन और अचेतन इच्छा माया इन दोनों ने मिलकर ३ लोक,१४ भवन और ३ ब्रम्ह के १३लोकों का पसारा किया। ।।३।।

सब अवतार सुणो सब कोई ।। हूणकाळ सूं आवे ।।

आणंद लोक मे उप्तत नाही ।। गांठ पोटो ले क्रावे ।। ४ ।।

रामचंद्र,कृष्ण पकड्कर सभी माया में पराक्रमी हुयेवे अवतार होनकाल से आये,आनंद ब्रम्ह से कभी नहीं आये। जैसे गन्ने के पेड को गांठ तथा रस का भाग रहता। जहाँ गाठ रहती वही से नये गन्ने के पेड की उत्पत्ती होती। रस के भाग से नये गन्ने की कभी उत्पत्ती नहीं होती मतलब गांठ में उत्पत्ती है,रस में उत्पत्ती नहीं मतलब होणकाल ब्रम्ह यह गांठ सरीखा है और आनंद ब्रम्ह यह रस सरीखा है इसप्रकार सभी अवतार जहाँ से सभी की उत्पत्ती हुई उसी होनकाल पद से आये आनंद ब्रम्ह से आज दिनतक किसी की उत्पत्ती नहीं हुई इसलिए अवतारों की भी उत्पत्ती आनंद ब्रम्ह से नहीं हुई,होणकाल ब्रम्ह से ही हुई। ।।४।।

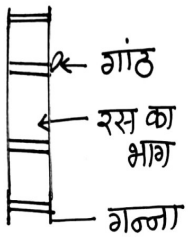

होणकाळ ने सबही कीया ।। फेर करे सो होई ।।
आणंद ब्रम्ह करे ना कीया ।। निर्भे पद वो जोई ।। ५ ।।

सभी माया की रचना होनकाल ने की और आगे भी करते रहेगा। आनंद ब्रम्ह विज्ञानस्वरुप है। विज्ञान में माया नहीं रहती इसलिए आनंद ब्रम्ह ने आज दिनतक माया बनाई नहीं और आगे भी बनायेगा नहीं। जैसे माया काल के मुख में है परंतु उसी के विपरीत आनंद ब्रम्ह काल के परे है इसलिए आनंद ब्रम्ह माया के सरीखा काल के भय में नहीं,काल से भयरहीत है,निर्भय है। ।।५।।

सब ही ग्यानी कहे सुण अेसी ।। आणंद लोक जे जावे ।।
से हंसा सब बोहोर जक्त मे ।। सपने ग्रभ न आवे ।। ६ ।।

सभी जगत के ज्ञानी यह कहते है,आनंद लोक जो हंस जाते है वे हंस सपने में भी गर्भ में नहीं आते मतलब माया के जगत में कभी भी देह धारन नहीं करते। ।।६।।

जे पेलीसूं कोई हंसो आयो ।। तो अब क्यूं नहीं आसी ।।
देख्या ग्यान सकळ ही सोध्या ।। उलटी सब कूं भ्यासी ।। ७ ।।

जैसे होनकाल ब्रम्ह से ही आदि से सभी हंस आए फिर फिरसे उसीको ब्रम्ह समझकर उसकी भक्ति करके उसमें समाने से फिरसे से माया में कैसे नहीं आयेंगे?सभी ज्ञान मैंने खोजा। सभी ज्ञानी यही कहते है कि,आदि से जहाँ से आए उस ब्रम्ह की साधना करके वहाँ कितने बार भी पहुँचे तो भी वह हंस गर्भ में आएगा और जगत में काल के दु:ख भोगेगा परंतु ज्ञानी जहाँ से आदि से आए वहाँ माया में से अब पहुँचने के बाद फिरसे नहीं आते ऐसी उलटी समझ करके होनकाल ब्रम्ह की भक्ति करते है और जहाँ से आदि में आये उसी पद में फिरसे जा पहुँचते है और निर्भय बनके रहते है कि,हम फिरसे माया में काल का दु:ख भोगने नहीं आएँगे। ।।७।।

आणंद ब्रम्ह नांव ईण कारण ।। वाँ सूं कोयी न आया ।।
हूणकाळ सो जब कहाणा ।। सब हुणे गुण भाया ।। ८ ।।

एक ब्रम्ह का नाम आनंदब्रम्ह इसलिए पडा कि वहाँ जाने के बाद गर्भ के दु:ख में नहीं आना पडता और माया का शरीर धारन नहीं करना पडता तथा काल के जुलूम नहीं सहने पडते और आनंद ही आनंद भोगता। आज दिनतक आनंद ब्रम्ह से कोई आया नहीं। जैसे आज दिनतक वहाँ से कोई नहीं आया तो आज भी वहाँ पहुँचने के बाद वहाँ से यहाँ कैसे आएगा?वहाँ से कभी नहीं आएगा। दुजे ब्रम्ह का नाम होनकाल ब्रम्ह इसलिए पडा कि, होनकाल ने ही सभी सृष्टि की रचना की याने उसमें सृष्टि उत्पत्ती का गुण है। वह समय के अनुसार सृष्टि बनाता और समय के अनुसार मिटाता। वह उत्पत्ती करता तब कर्तार ईश्वर बनता और मिटाता तब काल बनता ऐसे ईश्वर होकर समय के अनुसार काल बनता इसलिए उसे होनकाल ईश्वर कहते है। ।।८।।

ब्रम्ह कहे सो जक्त बरोबर ।। होणकाळ गुरू कुवावे ।।
आणंद ब्रम्ह सतगुरू सम होई ।। ज्यां गयो बोहोर नहीं आवे ।। ९ ।।

सभी तीन ब्रम्ह है। जो जगत में माया धारकर जीव आए है,वे जीवब्रम्ह है तथा जो सृष्टि रचना करता वह होनकाल ब्रम्ह गुरु है तथा जो माया की सृष्टि बनाता नहीं और उसमें समाने के बाद वापीस गर्भ में नहीं आता वह आनंद ब्रम्ह सतगुरु समान है। ऐसे सभी जीवब्रम्ह है। होनकाल ब्रम्ह गुरु है और आनंदब्रम्ह सतगुरु समान है। ।।९।।

होणकाळ सो चेतन कहिये ।। नख चख व्यापक होई ।।
ब्रम्ह कहो सो म्हेल त्रुगटी ।। काम नाद कऊँ तोइ ।। १० ।।

होनकाल ब्रम्ह चेतन स्वरुप है। वह सभी के शरीर में नख से चखतक व्यापा हुआ है। जीवब्रम्ह यह शरीर में नख से चखतक व्यापा नहीं रहता। वह पिता के त्रिगटी नही भृगुटी महल में रहता(इसलिए यहाँ त्रिगुटी नही भृगुटी महल समझना)और गर्भ में आने के बाद मिले हुए शरीर के कंठ में रहता। उस ब्रम्ह में काम वासना रहती इसलिए उसे कामनाद याने कामब्रम्ह कहते है। ।।१०।।

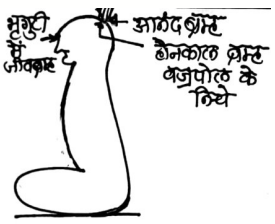

दसवेद्वार आगे सब सुण ज्यो ।। अनहद ब्रम्ह सो होई ।।
होणकाळ सो बजरपोळ सिर ।। ब्रम्ह त्रुगटी जोई ।।११।।

इसप्रकार शरीर के दसवेद्वार के बाहर आनंदब्रम्ह है,शरीर में वज्रपोल के नीचे होनकाल ब्रम्ह और शरीर के भ्रुगुटी में जीवब्रम्ह रहते है।।११।

दसवेद्वार आगे सुण जायर ।। पूँत जणावे भाई ।।
तो आ मांड सुणो सब ग्यानी ।। अणंद लोक सूं आई ।। १२ ।।

कोई भी पुत्र दसवेद्वार के आगे याने शरीर के बाहर से आज दिन तक जन्मा नहीं। दसवेद्वार के बाहर आनंद ब्रम्ह है इसका अर्थ आनंद ब्रम्ह से कोई पुत्र जन्मता नहीं,अगर कोई पुत्र जन्मता था तो यह सारी सृष्टि भी आनंद ब्रम्ह से जन्मी यह सभी ज्ञानी ज्ञान से समझो। ।।१२।।

दसवेद्वार सूं ज्युं सब पेदा ।। होणकाळ सूं जोई ।।
आणंद ब्रम्ह व्दार दस आगे ।। वहाँ उत्पत नहीं कोई ।। १३ ।।

इसकारण दसवेद्वार से सभी पैदा हुए है और दसवेद्वार में होनकाल ब्रम्ह रहता याने होनकाल से ही सभी पैदा हुए है,आनंदब्रम्ह से नहीं कारण आनंद ब्रम्ह दसवेद्वार के परे है। ।।१३।।

जक्त माय सूं जे जन होवे ।। तो पाछो जक्त न होई ।।
ना जन माँय सूं जक्त निकसी ।। यूं आणंद ब्रम्ह कहुं तोई ।। १४ ।।

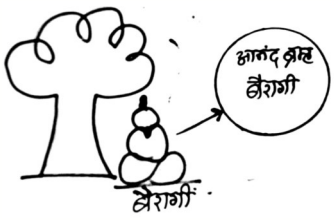

जैसे कोई मनुष्य जगत में ग्रहस्थी न बनते बैरागी साधू बनता और ज्ञान आनंद में मगन रहता। वह साधू फिर कभी संसारी नहीं बनता। वह कभी संसारी नहीं बनता इसलिए उससे पुत्र–पुत्री नहीं जन्मते। इसीप्रकार आनंदब्रम्ह यह आदि से ही बैरागी है,इसकारण उससे सृष्टि नहीं उपजती। ।।१४।।

सब अवतार जक्त के माही ।। हूणकाळ से आया ।।
वाँ सूं जक्त हुई सब पेदा ।। आदू वाँ से भाया ।। १५ ।।

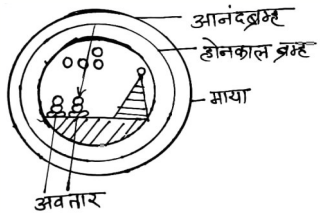

इसलिए जगत में के सभी अवतार होनकाल से पैदा हुए,आनंदब्रम्ह से नहीं याने आदि में जहाँ से सभी जगत पैदा हुआ,वही से सभी अवतार पैदा हुए। ।।१५।।

राम किसन सो राजा हूवा ।। तीन लोक का भाई ।।
करता अेक जक्त अर याँरो ।। होणकाळ सब माई ।। १६ ।।

अवतार रामचंद्र,कृष्ण ये तीन लोक के राजा हुए परंतु जैसे जगत के लोगों का कर्तार होनकाल है वैसेही रामचंद्र और कृष्ण का कर्तार भी होनकाल है। उनका कर्तार जगत लोगोंके कर्तार से न्यारा नहीं है याने ही जगत के लोगों समान रामचंद्र और कृष्ण भी होनकाल ही है याने होनकाल में ही हैं,रामचंद्र और कृष्ण जगत के लोगों के बराबर ही गर्भ और काल का दु:ख भोगने में अटके है। ।।१६।।

जग क्रतार कहे इण गुण सूं ।। दाणूं पटक्या सोई ।।
ब्रम्हा बिस्न महेसर खसिया ।। याँ सू मुवा न कोई ।। १७ ।।

रामचंद्र,कृष्ण आदि को संसार का कर्तार इसलिए कहते है कि,३ लोक के मालिक ब्रम्हा, विष्णु,महादेव से अती प्रयास करने के बाद भी जो राक्षस मारे नहीं गए,वे राक्षस रामचंद्र और कृष्ण आदि अवतारों ने सहज में मारे इसलिए उन्हें तीनो लोक का कर्तार कहते है। ।।१७।।

ज्यूं राजा सूं कहे सब दुनिया ।। तुम ईश्वर औतारा ।।
इण पड़छे रघुनाथ किसन कूं ।। जग कहे करतारा ।। १८ ।।

जैसे राजा को उसके राज की प्रजा ईश्वर अवतार कहते है याने राज का कर्तार कहते है। इसीप्रकार रघुनाथ,किसन ने भी बडे-बडे राक्षस मारकर तीनो लोक की रक्षा की इसलिए उन्हें ईश्वर अवतार याने कर्तार कहते है। ।।१८।।

कर्ता को बिड़द छाजे इन कूं ।। क्रता ढिण सूं आया ।।
पिण सतगुरू किण कीया व्हे जग मे ।। तो मुज कूं कहो भाया ।। १९ ।।

रघुनाथ,किसन को कर्तार का पद शोभता भी है कारण वे सभी सृष्टि के होनकाल कर्तार पद से जगत में आए है,इनको सतगुरू किसीने धारण किया हैं क्या?यह मुझे बताओ,वे आनंदब्रम्ह सतगुरु पद से आए हीं नहीं,इसलिए उन्हें सतगुरु का पद नहीं शोभता। जो आनंदब्रम्ह सतगुरु पद से सतगुरु पद ले आते उन्हें ही सतगुरु का पद शोभता। इसलिए सभी अवतार होनकाल में जैसे अन्य सभी लोग है वैसेही अवतार भी होनकाली लोगों में ही आते अन्य मनुष्यो में और अवतारी मनुष्य में माया के पराक्रम का फरक है,होनकाल और आनंदब्रम्ह ऐसा फरक नहीं है। ।।१९।।

अणंद ब्रम्ह सतगुरू सम होई ।। होणकाळ जग लोई ।।
यूं राम कीसन सूं हरजन इधका ।। मुढ न जाणे कोई ।। २० ।।

इसलिए हरीजन जो आनंदब्रम्ह की सत्ता लेकर आते है,वे रामचंद्र और कृष्ण जो होनकाल की सत्ता लेकर आए है उनसे अधिक पराक्रमी है याने रामचंद्र और कृष्ण की भक्ति करने से होनकाल तक की पदवी मिलती परंतु काल नहीं छुटता और हरीजन का शरणा लेने से काल छुटता ऐसा हरीजन,रामचंद्र और कृष्ण से काल से मुक्त करने के लिए पराक्रमी है परंतु मुरख लोक हरीजन में रामचंद्र और कृष्ण से काल से मुक्त कराने का अधिक पराक्रम है यह जानते नहीं उलटा सर्वसाधारण मनुष्य के समान समझते। ।।२०।।

राम किस्न की भक्ती जग मे ।। होणकाळ लग जावे ।।
जो कोई पचे ब्होत बिध भाई ।। तो उपज्यो ज्हाँ समावे ।। २१ ।।

रामचंद्र और किसन की सगुण भक्ति करनेवाले जगत के सभी नर-नारी होनकाल के माया के पदतक पहुँचते। वे महासुख के आनंदब्रम्ह में कभी नहीं पहुँचते तथा रामचंद्र और कृष्ण को ब्रम्ह समझकर बहुत पच-पचकर ब्रम्ह-ब्रम्ह कर गातेळ,वे जादा में जादा होनकाल के ब्रम्ह पद में पहुँचते याने जिस होनकाल ब्रम्ह के पद से आकर माया में उपजे उस होनकाल ब्रम्ह पद में जाकर समाते,आनंदब्रम्ह पद में नहीं जाते। ।।२१।।

नौद्या भक्त जक्त मे सारी ।। सो आत्म की होई ।।
जप तप भेद जोग सब साजन ।। होणकाळ लग जोई ।। २२ ।।

विष्णु की नौद्या भक्ति के समान महेश का भेद,ब्रम्हा का सांख्ययोग,ब्रम्हा ने वेद में बताई हुई जप,तप सभी भक्तियाँ आत्मा की भक्तियाँ है,याने पाँच आत्माओं के सुख प्राप्त

करने की भक्तियाँ है। पाँच आत्मा यह माया है। माया आनंदब्रम्ह में नहीं जाती इसलिए ये सभी भक्तियाँ होनकाल ने पैदा किए हुए सगुण माया के पद में ही पहुँचती है,माया के परे बैरागी आनंदब्रम्ह में नहीं पहुँचती। ।।२२।।

नाभ कंवळ मे नाद बीछडे ।। पिछम देस से जावे ।।
फाड़र पीठ चडे. ने: अंछर ।। आणंद लोक वे जावे ।। २३ ।।

जिनका नाद याने ब्रम्ह,५ आत्मा से नाभी में बिछ्डता वे ही हंस बंकनाल के पश्चिम के रास्ते से पीठ को फाड्कर त्रिगुटी होकर आनंदलोक में पहुँचते। जिसने-जिसने आनंदब्रम्ह के ने:अंछर का शरणा लिया उन्हीं का नाद नाभी में ५ आत्मा माया से बिछ्डता। जिस-जिसने ने:अंछर छोड्कर होनकाल ब्रम्ह या त्रिगुणी माया का शरणा लिया उनका नाद पाँच आत्मा से कभी अलग नहीं होता। इसलिए उनको आनंदलोक को पहुँचनेवाला पश्चिम का रास्ता नहीं पकड्ते आया आनंद ब्रम्ह का रास्ता न पकड्ते आने के कारण आनंदलोक कभी नहीं पहुँचे,होनकाल में ही रहे। ।।२३।।

पूरब घाटं चडे जिण जन के ।। बिंद न बिछडे कोई ।।
सक्त ब्रम्ह दोनु तहाँ भेळा ।। ज्हाँ लग पहूंचे सोई ।। २४ ।।

जो संत पूरब देस से भृगुटी में पहुँचते उनका नाद याने ब्रम्ह,बिंद याने ५ आत्मा माया से नहीं बिछ्डता और वह संत जादा में जादा माया और ब्रम्ह जहाँ साथ में रहते ऐसे होनकाल के पद तक पहुँचते। पूरब दिशा से जानेवाला साधक ओअम् की साधना करता। ओअम् की उपज इच्छामायासे हुई है इसकारण यह भृगुटी तक या जादा जोर लगाया तो १००० पंखुड्यों के कमलतक पहुँचता। सभी में ब्रम्ह देखनेवाला साधक आदि से जहाँ से आए ऐसे पारब्रम्ह के जीवब्रम्ह के पद में पहुँचता। सोहम् जाप अजप्पा जपनेवाला साधक होनकाल पारब्रम्ह में सिध्दसिला के निचे जाकर पहुँचता और ने:अंछर का साधक ने:अंछर में याने सतस्वरुप में जाकर पहुँचता याने जिसकी जहाँ से उपज है वह वहाँ तक ही पहुँचता। ।।२४।।

आगे जाय सके नहीं कोई ।। दसवो व्दार नहीं फूटे ।।
फिर नर आण औतरे जुग मे ।। जम जुग जुग मे लूटे ।। २५ ।।

इनसे दसवाद्वार फुटता नहीं इसलिए आगे आनंदब्रम्ह जा नहीं सकते। ऐसे दसवेद्वार पहुँचे हुए हंस जगत में शरीर धारन करते। ऐसे दसवेद्वार से लौटकर जगत में शरीर धारन करनेवाले जीव को यम युगानयुग लुटता याने जुलूम करता। ।।२५।।

नहीं काम माया को संतो ।। ना आ जायन सक्के ।।
आणंद लोक मे ब्रम्ह पहूँचे ।। सक्ती धकी न धक्के ।। २६ ।।

मन जीवब्रम्ह के साथवाली मन,५ आत्मा इस माया का आनंदलोक में काम नहीं है और

वह माया आनंदलोक में जा भी नहीं सकती,आनंदलोक में सिर्फ ब्रम्हस्वरुप हंस पहुँचता, शक्ति याने हंसब्रम्ह की माया धक्का देने पर भी आनंदब्रम्ह जा नहीं सकती। ।।२६।।

जेसे अेक जक्त के माही ।। तोय द्रिष्टांग बताऊँ ।।
देवत अेक धार नर देही ।। नर के संग कर लाऊँ ।। २७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को कहते है कि,जगत में का सभी को समझेगा ऐसा दृष्टांत बताता हूँ,एक मनुष्य है और एक देवता मनुष्य का रुप धारन करके मनुष्य के समान मनुष्य बनता है। ।।२७।।

देवत अेक मिनष देहे धर के ।। नर के संग होय आवे ।।
आगे भींत खड़ी गज गीरी ।। पार कहो कुण पावे ।। २८ ।।

मनुष्य और मनुष्य का रुप धारन किया हुआ देवता संग में चलते है। रास्ते में हाथी के समान जाडी और उँची दिवार रास्ता पार करने के बिच में आडी आई रहती है ऐसे जाडी और उँची दिवार मनुष्य के रुप में आया हुआ देवता पार कर लेता परंतु मेहनत करने पर भी मुल मनुष्य के रुप में आया हुआ मनुष्य कभी पार नहीं कर सकता। ।।२८।।

ग्यानी भेष सुणो सब भेदी ।। पुरब चड़या वो काचा ।।
ज्याँ सूं जीव आवियो जग मे ।। व्हाँ जाय आवे पाछा ।। २९ ।।

सभी ज्ञानी,भेषधारी(जोगी,जंगम,सेवडा,संन्यासी,फकीर,ब्राम्हण)तथा पूर्वयोग के सभी भेदी सभी ज्ञानसे समझो कि,पूरब से चढे हुए सभी कच्चे है। जहाँ से जीव माया में आया है,ये वही पहुँचते है और फिर जैसे जगत में आदि में आये थे वैसे आते है,काल का दु:ख भोगते है,ऐसे कच्चे है। ।।२९।।

पूरब घाट चडे सो अंछर ।। जको नाद को होई ।।
पिछम दिसा चडे. ने: अंछर ।। सतस्वरूप को जोई ।। ३० ।।

पूरब घाट में जीव जिस शब्द के साथ चढता है वह शब्द होनकाल नाद से उपजा है और पश्चिम दिशा से हंस जिस ने:अंछर के साथ चढता,वह ने:अंछर सतस्वरुप से प्रगटा है। ।।३०।।

पिछम दिसा चड़े सो अंछर ।। अटकण काहु न पावे ।।
दसवाँ व्दार फोड सो निकसे ।। पाछो कबू न आवे ।। ३१ ।।

सतस्वरुप दसवेद्वार के परे से घट में प्रगटा है और पश्चिम दिशा से दसवेद्वार चढता हैं इसकारण वह घट में याने ३ लोक १४ भवन तथा ३ ब्रम्ह के १३ लोको से किसी के करामात से अटकता नहीं। वह ने:अंछर घट में कंठ कमल में प्रगट होकर हंस के घट को ३ लोक १४ भवन तथा ३ ब्रम्ह के १३ लोक बनाकर और दसवेद्वार फोडकर आनंद ब्रम्ह में हंस को ले जाता है। वह हंस एक बार सभी कर्म काटके आनंद ब्रम्ह पहुँचने के बाद होनकाल में बाद में कभी नहीं जन्मता और होनकाल ब्रम्ह से उपजे हुए शब्द से पहुँचा

हुआ हंस होनकाल ब्रम्हतक याने दसवेद्वार तक ही पहुँचता उसके आगे कभी नहीं पहुँचता और दसवेद्वार से फिर से जगत में जनम लेता। ।।३१।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। पिछम भेद नहीं पावे ।।
ने: अंछर बिन ध्यान तत्त लग ।। दूणा डाफा खावे ।। ३२ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानियों को कहते है कि पश्चिम का भेद नहीं पाते जबतक आनंदलोक कोई नहीं पहुँचता। ने:अंछर के ध्यान बिना होनकाल तत्त तक पहुँचनेवाला कोई भी ध्यान हंस को आनंदलोक नहीं पहुँचाता उलटा होनकाल तक का पुरब का ध्यान साधके भी फिर से होनकाल में आकर जन्मता और काल के दुने कष्ट युगानयुग भोगता। ।।३२।।

३४

।। पदराग आसा ।।

बांदा आणंद लोक से जावे
बांदा आणंद लोक से जावे ।।
तत स्वरूप ब्रम्ह ओ कही ये ।। इण आगे गम पावे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज,हरजी भाटी से कहते है कि,तत्तस्वरुप ब्रम्ह याने होनकाल ब्रम्ह के परे के आनंद लोक की जिस संत की समझ है वही आनंदलोक में जाएगा। ।।टेर।।

ज्हाँ लग अेक ब्रम्ह कर गावे ।। तहाँ लग भेद न पायो ।।
ओ तो हूणकाळ ब्रम्ह कहीये ।। बिन भेद पद ठेरायो ।। १ ।।

ज्ञानी,ध्यानी,नर–नारी जब तक होनकाल ब्रम्ह और आनंद ब्रम्ह को एक ही समझते है तब तक उन्हें आनंद ब्रम्ह का भेद मालूम नहीं है ऐसा समझो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,बिन भेदी याने होनकाल ब्रम्ह और आनंद ब्रम्ह का फरक न समझनेवाले ज्ञानी,ध्यानी होनकाल ब्रम्ह को ही आनंद ब्रम्ह समझते और उसे प्राप्त करने को पचते। ।।१।।

इतरी गम नहीं ग्यान्यां कूं ।। वो ओ अेक जे होई ।।
तो मेहेनत कर कहो क्या करीये ।। और न दूजो कोई ।। २ ।।

ज्ञानी,ध्यानी होनकाल ब्रम्ह और आनंद ब्रम्ह को एकही समझते। वह होनकाल ब्रम्ह जीव में ही प्रगट है ऐसा भी समझते। आनंद ब्रम्ह होनकाल ब्रम्ह से न्यारा नहीं है ऐसा समझने पर भी होनकालब्रम्ह को पच–पचकर मेहनत करके प्राप्त करने की क्या जरुरत है? मतलब इतनी भी समझ ज्ञानियों को नहीं है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी को पूछते। ।।२।।

जे जे चीज सकळ घर माही ।। वाई जे हाट मे होवे ।।
तो क्यूं पचे रात दिन मुरख ।। मिलणे कूं क्या रोवे ।। ३ ।।

जो-जो वस्तू घर में है वही वस्तु बाजार के दुकान में है। घर में भरे हुए वस्तु को ही पाने के लिए जीव रात-दिन बाजार में पच रहा है। वह वस्तु घर में भरे हुए वस्तु से निराली नहीं और वह वस्तु घर में जरुरत से जादा है फिर भी मिलाने के लिए रो रहा है ऐसा जीव मुर्ख है मतलब होनकालब्रम्ह जीव में ही है ऐसा ज्ञानी,ध्यानी और जीव मान रहे है फिर भी जीव वही वस्तु होनकाल ब्रम्ह के ज्ञानी,ध्यानियों से प्राप्त करने के लिए पच रहा है ऐसा जीव मुर्ख है। ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारी,ज्ञानी, ध्यानियों को कह रहे है ।।३।।

भूल्या कहे ब्रम्ह वो ओई ।। सुध्ध बिहुणा सारा ।।
त्रीया कदे नार कूं चावे ।। ओ नहीं करे बिचारा ।। ४ ।।

जो भुले हुए बिना अक्कल के ज्ञानी,ध्यानी,नर-नारी है,वे होनकाल ब्रम्ह को ही आनंद ब्रम्ह कहते है। जगत में स्त्री होती है वह स्त्री विवाह सुख पाने के लिए अन्य स्त्री नहीं खोजती पुरुष ही खोजती। होनकाल ब्रम्ह ही अगर आनंद ब्रम्ह है और वह आनंद ब्रम्ह जीव में प्रगट है,तो फिर से वैसाही आनंद ब्रम्ह पाने की क्या जरुरत है ?।।४।।

ज्यां सूं जीव हूवो सुण पेदा ।। वो ओ अेकज होई ।।
के सुखराम अणंद पद न्यारो ।। वो परसो कहूँ तोई ।। ५ ।।

जिससे हंस पैदा हुआ है वह पारब्रम्ह देह में है और वह देह में का पारब्रम्ह और होनकाल ब्रम्ह एक ही है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानी,ध्यानी तथा नर-नारीयो को कहते है की,आनंदपद उस ब्रम्ह से याने होनकालब्रम्ह से न्यारा है उसे प्राप्त करो। ।।५।।

३८

।। पदराग शब्द ।।

बांदा इऊं जग मोहे न जाणे
बांदा इऊं जग मोहे न जाणे ।।
अगम देस का मे ऊपदेसी ।। अे माया रस माणे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी से कहते है कि,यह सभी जगत के ज्ञानी, ध्यानी तथा नर-नारी होनकाल पारब्रम्ह तथा त्रिगुणी माया के परचे चमत्कार के सुख जानते। मैं होनकाळ पारब्रम्ह तथा इच्छा माया ये भी जिस देश के सुखों को जानते नहीं ऐसे अगम सुखों के देश का उपदेश देता हूँ इसलिये ये जगत के ज्ञानी,ध्यानी,नर-नारी मेरे उपदेश को पकडते नहीं। ।।टेर।।

भाग बिना ज्यूं चीज न पावे ।। ग्यान बिण गुण न जाणे ।।
इऊं जड़ी जंगळ मे हे ब्हो तेरी ।। कोई नाहे पिछाणे ।। १ ।।

जंगल में अनेक जडी-बुटीयाँ रहती। उसमें मुर्दा जिंदा कर सकती ऐसे गुणवाली संजीवनी बुटी भी रहती परंतु घर मे मुर्दा रहने पर भी संजीवनी बुटी की परीक्षा करने का ज्ञान नहीं,इसकारण मुर्दे को जिवीत नहीं करते आता। इसलिये आदि सतगुरु

सुखरामजी महाराज जगत के नर–नारी को कहते है कि,मुर्दा जिवीत हो सकता था,ऐसी जंगल में बुटी थी परंतु मुर्दे का भाग्य न होने के कारण उसके घरवाले जडी–बुटी को पहचान नहीं पाये और मुर्दे को जिवीत होने के लिये दे नहीं पाये। ऐसे हर जीव को आनंदपद के सुखों की भारी जरुरत है परंतु आनंदपद भाग्य में न होने के कारण आनंदपद देनेवाले भेदी गुरु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को पहचान नहीं पाये और न पाते । ।।१।।

अे सब मेरी काया देखे ।। आतम़ की चल भाई ।।
अेसी खबर किसी कूं नाही ।। बिछड़त रहत नाही रे ।। २ ।।

जगत के ज्ञानी,ध्यानी,नर–नारी ये सभी मेरे माया के देह का स्वभाव चरीत्र देखते। मेरे पाँचो आत्मा इस माया की चाल देखते। इन ज्ञानी,ध्यानियों को मेरी यह पहचान ही नहीं है कि,मुझे हंस एक बार भी मिलता है तो भी वह सदा के लिये महासुख के अगम देश को पहूँच जाता है,फिर वह कभी आवागमन में नहीं आता है । ।।२।।

के सुखराम पिछाणे मोने ।। तामे निजपद जागे ।।
उलटर हंस चढे गढ ऊपर ।। ध्यान समाधी लागे ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जो मुझे निजपद का भेदी करके पहचानता है, उसमें मैं एक पोहोर नहीं पल में ही निजपद जागृत करा देता हूँ। मुझे जाननेवाला हंस मुझमे उदय हुयेवे सत्ता के पराक्रम से पलभर में ही घट में ही बंकनाल से उलटकर गढपर चढ जाता और दसवेद्वार में सतस्वरुप की ध्यान समाधि लगाकर आनंद लेता। ।।३।।

४२

।। पदराग शब्द ।।

बांदा केवळ भेद न्यारोजी
बांदा केवळ भेद न्यारोजी ।।
सतस्वरूप आनंद पद कहीये ।। सो ऊपदेस हमारोजी ।। टेक ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,बांदा इस केवल का भेद सगुण एवम् निरगुण के भेद से न्यारा है। सतस्वरुप आनंदपद जिसे ज्ञानी,ध्यानी कहते है उस सतस्वरुप आनंदपद के भेद का मैं उपदेश देता हूँ। ।।टेर।।

ब्रम्हा बिसन महेस ना पायो ।। ना अवतारा सोई ।।
सुर तेतीस सक्त इंद्रादिक ।। नेक न जाण्यो कोई ।। १ ।।

सतस्वरुप आनंदपद का भेद ब्रम्हा,विष्णु,महेश को भी नहीं मिला। यह भेद अवतारो को भी नहीं मिला। शक्ति,३३००,००,००० स्वर्ग के देवता,स्वर्ग का राजा इंद्र,७ भवन–भुर, भुवर,स्वर,महर,जन,तप,सत के देवता,चार पुरीयों के देवता इनमें से किसी को भी केवल भेद जरासा भी मिला नहीं। ।।१।।

ग्यानी ध्यानी संत साध रे ।। ना जोगेसर पावे ।।
दुनिया सकळ कोण गिणती मे ।। सेंस ब्रम्ह लग धावे ।। २ ।।

सतस्वरुप आनंदपद का भेद माया–ब्रम्ह के ज्ञानी,ध्यानी,संत तथा साधू इन्होंने एक ने भी नहीं पाया। जोगेश्वर (कवी, हरी, अंत्रिक्ष, प्रबुध्द, पिप्पलायन, अर्विहोत्र,दुर्मिळ,चमस, करभाजन) इन्होंने भी केवळ का भेद नहीं पाया। सेंस जो रात–दिन २००० जिभ्या से राम–राम करता उसको भी सतस्वरुप आनंदपदका भेद मिला नहीं। वह भी होनकाळ पारब्रम्ह को ही जानता है फिर इस दुनिया के नर–नारी केवल का भेद जानने के किस गिनती में आते है। ।।२।।

बंध मुक्त दोनू के आगे ।। मुक्त रूप सुण होई ।।
इंहा लग सकळ खबर ले आया ।। आगे न जाण्यो कोई ।। ३ ।।

बंध याने स्वर्गादिक तथा मुक्ति याने बैकुंठादिक के आगे होनकाल पारब्रम्ह का मोक्ष पद यहाँ तक खबर याने पहुँच सभी की है। इसके आगे के सतस्वरुप आनंदपद की खबर इन किसीको जरासी भी नहीं है। ।।३।।

के सुखराम अर्थ जब लाधे ।। जब अेसी मत आवे ।।
जब बेरागी हुवे नर जग मे ।। पिता किसब कूण चावे ।। ४ ।।

जैसे जगत में बेद का वैराग्य ज्ञान समझने पर माता–पिता का कुल त्याग देने की मती आती है और वह जीव कुल त्याग देता है और बेद बैरागी बन जाता है। ऐसेही स्वर्गादिक, बैकुंठादिक तथा होनकाल पारब्रम्ह के आगे का सतस्वरुप आनंदपद का ज्ञान सुनने पे त्रिगुणी माया पद के परे के होनकाल पारब्रम्ह को भी त्याग देता है और सतस्वरुप आनंदपद का विज्ञान बैरागी बन जाता है ऐसा बेरागी होनकाल पिता का किसब क्यु चाहेगा?ऐसा पिता का आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,नर–नारी को कहते है । ।।४।।

४४

।। पदराग शब्द ।।

बांदा मत भूले भ्रमा माही
बांदा मत भुले भ्रमा माही ।।
जग मर्जाद मन की बांधी ।। जे हर माने नाही ।। टेक ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने बांदा याने हरजी भाटी इस राजपूत को समजाया की ,संत बैरागी होगा तोही पूर्ण संत है,संत ने ग्रहस्थी जीवन अपनाया तो वह मनुष्य संत नहीं है,जगत बराबर मनुष्य है ऐसा समझना यह तेरा भ्रम है। इस भ्रम मे बांदा तु भूल मत। यह जगत याने ब्रम्हा,विष्णू,महेश ने बांधी हुयी मर्यादा है। ब्रम्हा,विष्णू,महेश ये जगत के अन्य जीवो सरीखे जीव याने मन है,ये हर नहीं है। हर याने रामजी केवल है और जीव माया है इसलिए जीव ने बांधी हुयी मर्यादा हर याने रामजी मानता नहीं ।।।टेर।।

च्यार बेद पुराण अठारे ।। जे मर्जादा गाई ।।
जेसें सब हद की जग कूं बांध्यो ।। नहीं साहेब की भाई ।। १ ।।

चारो वेद और अठारा पुराणो में जो मर्यादा बताई गयी है वे मर्यादा हद की याने होनकाल पारब्रम्ह के देश में नर-नारी को बांध के रखने की गायी है। ये मर्यादा साहेब के देश में जाने की नहीं है इसलिए साहेब की बांधी हुई नहीं है। ।।१।।

दरगा की येहे म्रजाद क्हावे ।। लिंग भग जोड़े होई ।।
माता ब्हेन कहे जग बेटी ।। फिर नारी कहुं तोई ।। २ ।।

जीवो ने पाँचो आत्मा का भाड चुकाने के लिए दरगा ने जोडे से लिंग भग याने नर-नारी बनाई है। दरगा ने माता,बहन,बेटी,पत्नी यह मर्यादा नहीं बनाई। दरगा ने प्रथम स्त्री-पुरुष घडाए फिर ब्रम्हा,विष्णू,महेश ने दरगा से बने हुए स्त्री को माता,बहन,बेटी,पत्नी यह मर्यादा दी। जिस स्त्री ने पुरुष को जन्म दिया वह स्त्री-पुरुष की माता बनी,एक ही माता से पुरुष के साथ स्त्री जन्मी। वह उस पुरुष की बहन बनी,जिस पुरुष से स्त्री जन्मी वह बेटी बनी और जिस स्त्री के साथ गृहस्थी योग किया वह उस पुरुष की पत्नी बनी। ऐसे तो मुल मे सभी नारियाँ एक ही स्त्री रुप है परंतु कोई माता बनी,कोई बहन बनी,कोई बेटी बनी,तो कोई पत्नी बनी। माता,बहन,बेटी ये नारियाँ है,ये सभी पुरुष की पत्नी नहीं बन सकती,यह मर्यादा ब्रम्हा,विष्णु,महेश ने दी है। माता,बेटी,बहन इन में से किसीको भी पत्नी बनाना याने ब्रम्हा,विष्णू,महेश तथा जगत की मर्यादा तोडना है। ।।२।।

जग मर्जाद भांजियां जग मे ।। जग ही दोष लगावे ।।
दर्गे की मर्जाद ऊथाप्या ।। वहां सो दाद न पावे ।। ३ ।।

यह ब्रम्हा, विष्णू, महेश की मर्यादा तोडने पर जगत एवम् ब्रम्हा, विष्णू, महेश मर्यादा तोडनेवाले को दोष लगाता। ऐसेही दर्गा ने स्त्री-पुरुष मिलकर शिल के साथ संसार करने की मर्यादा लगाई। पुरुष ने स्त्री के साथ संसार नहीं करना यह दरगा की मर्यादा तोडना है। दरगा की मर्यादा तोडने पर दरगा से सुख मिलने का न्याय नहीं मिलेगा। जो दरगा की मर्यादा तोडेंगे उसे जगत में काल के दु:ख भोगने पडेंगे इन दु:खों से दर्गा से छुटकारा नहीं मिलेगा। ।।३।।

जे मर्जाद जग की राखो ।। तो कारण ओ चहिये ।।
जे साहेब को भै दिल जाणो ।। तो दुख नेक न सहीये ।। ४ ।।

जगत में स्त्री घडने के पश्चात ब्रम्हा,विष्णु,महेश ने माता,बहन,बेटी नारी की मर्यादा बांधी । ऐसे माता,बहन,बेटी,नारी की जगत की मर्यादा रखते हो तो साहेब ने बनाई हुई स्त्री-पुरुष की जोडे याने संग रहकर पाँचो आत्मा से सुख लेने की मर्यादा नहीं पालना और वैरागी बनकर रहना इसका कोई कारण चाहिए। बिना कारण स्त्री-पुरुष जोडे से न रहने में साहेब की मर्यादा भंग होती है इसका भय दिल मे रखना चाहिए। ।।४।।

पांचू भोग आत्मा भाड़ो ।। जिऊं कोई पूरण वारा ।।
इन कूं दोष कहे सो भ्रम्या ।। वे सुध्ध राहा न धारा ।। ५ ।।

पाँचो भोग यह आत्मा का भाडा है। यह आत्मा को भोग न देते आत्मा को तपाना और दु:ख भोगना यह साहेब की मर्यादा नहीं है। साहेब की आत्मा को दु:ख नहीं देना,सुख देना यह मर्यादा है। इसलिए सभी नर–नारी ने पाँच आत्मा को थोडासा भी दु:ख नहीं सहने देना चाहिए। ऐसा कोई संत गृहस्थी बनकर पाँचो भोग ये आत्मा का भाडा है यह समजकर पाँचो आत्मा को भोग पुराता है उसे कोई ज्ञानी दोषी कहता है,वह भ्रमा हुआ है,भुला हुआ है,उसने सतविज्ञान का रास्ता नहीं पकडा है। ।।५।।

ने: अंछर बिन अछंर आखर ।। सो सब भ्रम कहावे ।।
केवळ मत्त बिन सब मत्त ऊला ।। आनंद पद नहीं पावे ।। ६ ।।

ने:अंछर के रास्ते सिवा अक्षर से याने ओअम से उपजे हुए सभी रास्ते भ्रम है। केवल मत के अलावा सभी मत होनकाल के मत है,आनंदपद के मत नहीं है,आनंदपद के इधर के होनकाल के मत है। इन होनकाल के मत से आनंदपद नहीं मिलता। ।।६।।

राज जोग बिन जोग सकळ ही ।। से भ्रम कहीजे भाई ।।
जो बिग्यान बिना सब ग्यानी ।। सो भ्रमना जग माई ।। ७ ।।

राजयोग के बिना सभी जोग भ्रम है। राजयोग छोड के सभी जोग राजयोग पाने के लिए झुठे है। ब्रम्हा,विष्णू,महेश जिस ज्ञान को समज नहीं सकते ऐसे ज्ञान को विज्ञान कहते है। ऐसे विज्ञान बिना ब्रम्हा,विष्णु,महेश के सभी ज्ञान ये भ्रमना है,दर्गा में न पहुँचने का रास्ता है ।।७।।

सो बिग्यान कीयां बिन घट मे ।। उलट समाधी लागे ।।
ग्यान तिको क्रणी सो मुद्रा ।। कळा घटमाही जागे ।। ८ ।।

इस विज्ञान से ब्रम्हा,विष्णू,महेश ने बनाई हुई कोई भी करणी,क्रिया न साधते घट में उलटकर दसवेद्वार में समाधी लगती है। ब्रम्हा,विष्णु,महेश की करणियाँ मुद्रा साधने से घट में रिध्दी,सिध्दी के पर्चे चमत्कारो की कला जागृत होगी। इनसे घट मे बंकनाल से उलटकर दसवेद्वार की समाधी नहीं लगती। ।।८।।

सो अग्यान ग्यान सब छाडर ।। मून पकड़ जड़ होई ।।
ज्यूं काले को मन खुसियाली ।। मो सम अवर न कोई ।। ९ ।।

सतस्वरुप का विज्ञान एवम् ब्रम्हा,विष्णू,महेश के ज्ञान छोड्कर मौन धारण करना,किसीसे भी नहीं बोलना यह अज्ञान है। मौन धरना यह अमर देश जाने के लिए पत्थर के समान जड बनना है। जैसे पत्थर जड होने कारण समुद्र में नहीं तिर सकता वैसे मौन पालनेवाला भवसागर से नहीं तिरता। जैसे पागल के मन में बिना किसी सोच समज की खुशियाली रहती और समजता की मेरे समान जगत में कोई नहीं है। ऐसे मौनी स्वयम् को यह

समजता की मेरे समान जगत में कोई ज्ञानी,ध्यानी नहीं है। ।।९।।

के सुखराम समज या न्यारी ।। कोई हन जाने ग्यानी ।।
दोय बात को न्याव सकळ के ।। तीजी किणिहन जाणी ।। १० ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जगत में सतस्वरुप विज्ञान की समज कोई भी ज्ञानी एवम् अज्ञानी नहीं जानता। जगत के ज्ञानी,ध्यानियों को ज्ञान और अज्ञान ये दो बातों के निर्णय की ही समज है। यह तिजी सतविज्ञान की न्यारी समज कोई जगत का ज्ञानी नहीं जानता। इस सतविज्ञान की समज जगत में कोई बिरला ही जानता। ।।१०।।

४६

।। पदराग आसा ।।

बांदा मोख जिके जन जासी
बांदा मोख जिके जन जासी ।।
ज्यांरे नांव उदे हुवो घट मे ।। बोहोर न भवजळ आसी ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को कह रहे है कि,जिनके घट में ने:अंछर नाम प्रगट होगा वेही मोक्ष में जाएँगे,वे पु:न कभी भी भवसागर में नहीं आएँगे। ।।टेर।।

कुद्रत कळा नाव की जागे ।। ने: अंछर तन माई ।।
केवळ बीज असल ओ संतो ।। ओर उपाव न काई ।। १ ।।

मोक्ष जाने के लिए नाम की कुद्रतकला याने ही ने:अंछर तन में जागृत होना चाहिए। केवलपद जाने का ने:अंछर यही अस्सल बीज है। संत हो,इस ने:अंछर के बीज बिना और किसी उपाय से हंस मोक्ष में नहीं जा सकता। ।।१।।

जाग्यो नाव तन थर हरी यो ।। जद तद केवळ पासी ।।
लाखाँ गुन्हा खून पड़ जावे ।। तोई मिनषा देहे आसी ।। २ ।।

यह ने:अंछर जागृत हो जानेपर शरीर थर्राने लगता। ऐसे संत को कभी ना कभी केवलपद मिलता। ऐसे मनुष्य के हाथ से लाखों गुनाह हो गए तो भी उसे मोक्ष पद पाने तक मनुष्य देह ही मिलेगा। ।।२।।

जप तप नेम भक्त नौद्या सुं ।। ओऊं सोहं माही ।।
माया लियाँ बीज सो जागे ।। केवळ को ओ नाही ।। ३ ।।

कोई जप करता,कोई तप करता,कोई नवधा भक्ति करता,कोई नियम पालता,कोई ओअम् की भक्ति करता तो कोई सोहम् की भक्ति करता। ये सभी भक्तियों के बीज माया के पद जागृत करनेवाले है,ये कोई भी बीज केवल का पद जागृत करनेवाले नहीं है। ।।३।।

पीठ फाड़ ऊँचो चड़ जावे ।। सो ने: अंछर होई ।।
पूरब घाट चड़े सो ओऊँ ।। सो ऊँकार कहुँ तोई ।। ४ ।।

पीठ को फाड्कर बंकनाल के रास्ते से जो ऊँचा दसवेद्वार के गढ पर चढ जाता वही ने:अंछर है। जो पुरब घाट से याने संखनाल के रास्ते से भृगुटी गिगन में चढता वह ओअम् है याने साँस-साँस में का बाहर का साँस है। ।।४।।

मन सूं कदे पदी नहीं बंछे ।। गत्त मुक्त की काई ।।
तो सुण मोख कबू नहीं पावे ।। फरक बीज के माई ।। ५ ।।

ये माया पद की भक्ति करनेवाले मोक्ष की इच्छा करते,गती या मुक्ति पद की इच्छा नहीं करते फिर भी उन्हें मोक्ष कभी नहीं मिलता कारण धारन किए हुए बीज में फरक रहता। वह बीज कैवल्य का नहीं रहता माया का रहता। ।।५।।

केवळ बीज अेक माया को ।। दोय बीज जग माई ।।
जिण जिण हात आवियो जेसो ।। लोक तिके हंस जाई ।। ६ ।।

संसार में दो तरह के बीज है। एक माया का तथा दूसरा केवल का बीज है। जिस संत के हाथ में जो बीज आता वह पद वे पाते। माया का बीज आया तो माया का पद पाते और केवल का बीज आया तो केवल का पद पाते। ।।६।।

मन जाण्या को कारण नाही ।। ना अंछया सूं खावे ।।
सिंव्रण भोग रीत गत जाणे ।। नार पुर्ष बण आवे ।। ७ ।।

इसमें मन में जानने का कोई कारण नहीं होता। मन में मोक्ष में जाने की इच्छा रही और बीज माया का रहा तो भी मोक्ष नहीं जा सकता और इच्छा रही की मोक्ष मिलना चाहिए तो भी बीज माया का होने के कारण मोक्ष नहीं मिल सकता। सुमिरन करने की और भोग करने की रीती एक सरीखी रहती। जो सुमिरन करने की रीति जानेगा उसे नाद याने कोरा जीवब्रम्ह और बिंदु याने माया के एक साथवाला जीवब्रम्ह प्रगट करने की गती समझेगी जैसे जगत में भोग रिती जाननेवाले जानकार पुत्र,पुत्री को अपने इच्छा से जन्म देते। ।७।

मथन अेक युं भजन अेक ही ।। यूं कुद्रत कळा सारी ।।
ज्यूं लड़की सुण लड़का होवे ।। युं नाद बिंद बिध न्यारी ।। ८ ।।

जैसे मैथुन की रीत है वैसेही भजन की रित है। मैथुन से लड्का या लड्की होती वैसेही भजन से पाँच आत्मा इस माया से मुक्त कोरा जीवब्रम्ह याने नाद और पाँच आत्मा इस माया के साथवाला जीवब्रम्ह यह बिंदू प्रगट होते। पाँच आत्मा से जीवब्रम्ह को न्यारा करना यही कुद्रतकला है ।।८।।

छुटे धात मथन मे पाछे ।। सो नग सुण बण आवे ।।
यूं सिंव्रण मे हे बिध न्यारी ।। सतगुरू भेद बतावे ।। ९ ।।

जैसे मैथुन में जिसकी धातु बाद में छुटेगी वही नग बनता याने स्त्री की धातु बाद में छुटने पर पुत्री पैदा होती है और पुरुष का वीर्य बाद में छुटने से पुत्र पैदा होता है। ऐसेही सुमिरन की विधि न्यारी-न्यारी है इसका भेद सतगुरु बताते है। ।।९।।

पड़वा आद तिथ सूं गिणीयां ।। अेक पुर्ष अेक नारी ।।
जिण संग भोग करत ग्रभ थाँमे ।। सो नग बणे बिचारी ।। १० ।।

आदि तिथी(स्त्री रजस्व का पहला दिन)पाड्वा से गिनीये। पाड्वा को पुत्र तो द्वितीया को पुत्री जन्मती।रजस्व समाप्ती के बाद जैसा जिस तिथी को भोग करेगा वही नग बन जायेगा। ।।१०।।

सास उसांस तिथ अे जाणो ।। अेक बीज अेक चड़वा ।।
याँ बिच नाद निराळो होवे ।। ज्यूं लड़को व्हे पड़वा ।। ११ ।।

इसीप्रकार सुमिरन यह साँस उसाँस में होता। सांस यह द्वितीया और उसाँस यह पड्वा तिथी के समान समझो। जैसे पड्वा को लड्का जन्मता वैसे उसाँस याने देह के अंदर लेनेवाले साँस में नाद याने जीवब्रम्ह यह आदि से जिस बिंदु याने ५ आत्मा इस माया के एकसाथ था उससे अलग होता और गिगन में याने दसवेद्वार पहुँचता मतलब(साँस)उसाँस के धवन में जीवब्रम्ह जीव के माया से निराला होता। ।।११।।

सास सास सिव्रण नर कर हे ।। ता मे आ बिध जागे ।।
नाद बिंद भेळा चड़ जावे ।। ध्यान गिगन मे लागे ।। १२ ।।

साँस में जो मनुष्य स्मरन करता याने साँस-साँस में स्मरन करता उसमें नाद याने जीवब्रम्ह और बिंदु याने जीवब्रम्ह के साथवाली ५आत्मा यह माया जैसे आदि से एकसाथ थी वैसे के वैसे भृगुटी में याने गिगन में चढ जाती और गिगन में पहुँचकर मनुष्य ध्यान लगाता। ।१२।

सुणो उसास संग लिव लागे ।। रटणा अंत उकाऊ ।।
तो सूण नाद निराळो जागे ।। चड़े पीठ दिस भाऊ ।। १३ ।।

उसाँस के साथ लिव लगती याने सुमिरन होता तब साँस पेट में अमाऊ होता। इस अमाऊ विधि से पाँच आत्मा यह बिंदु याने माया हंस से न्यारी होती और कोरा ब्रम्ह याने जीव पीठ के दिशा से दसवेद्वार गिगन में चढता। ।।१३।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। आ बिध सुण लो आई ।।
इण कळ बिना नाद सुण न्यारो ।। चडे कबु नहीं भाई ।। १४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी ज्ञानियों सुनो,यह विधि आकर सुन लो,इस कला के बिना,नाद बिन्दु से अलग होकर कभी भी नहीं चढ़ेगा। ।। १४ ।।

५१

।। पदराग आसा ।।

बांदा ओ अरथ याँ होई
बांदा ओ अरथ याँ होई ।।
नाव न्यारो भेद न्यारो ।। सतगुरू न्यारा जोई ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को सामने रखकर जगत के ज्ञानी,ध्यानी,

वेदांती,तपस्वी,६ दर्शनी इन्हें और जगत के लोगों को बताते है की,होनकाल में जो जो नाम है वह नाम,उनका भेद और उनके सतगुरु यह अलग अलग कैसे है। इन सबसे सतस्वरुप का नाम उसका भेद,सतस्वरुप के सतगुरु निराले कैसे है?यह समझाते है। ।।टेर।।

पूरब घाट चड़े सो अंछर ।। बिंद माँय सूं आवे ।।
सोऊं ओऊं जाप अजपो ।। सुण नाद लग ओ जावे ।। १ ।।

इच्छा इस बिंद याने माया से ओअम शब्द उपजता है। वह शब्द मूलद्वार से याने पूर्व घाट से भृगुटी गढ पर चढता है। वह ओअम शब्द बहुत जोर किया तो भृगुटी के परे १००० पंखुड्यिों के कमल तक पहुँचता है। इसीप्रकार सोहम् जाप अजप्पा पारब्रम्ह होनकाल से उपजता है। वह सोहम् जाप अजप्पा नाद याने होनकाल पारब्रम्ह तक पहुँचता है। ये दोनो शब्द पारब्रम्ह लाँघकर सतस्वरुप पद में कभी नहीं पहुँचते है । ।।१।।

पिछम घाट होय नाँव चड़े रे ।। नाद माँय सूं आवे ।।
नाद अनाद लाँग सत आगे ।। अणंद लोक मे जावे ।। २ ।।

पश्चिम घाट से याने बंकनाल से जो शब्द गढ पर याने दसवेद्वार चढता है वह शब्द सतस्वरुप नाद से प्रगटता है और वह शब्द नाद याने जीवब्रम्ह,अनाद याने पारब्रम्ह को याने पारब्रम्ह के सतलोक को पार कर आनंदलोक में जाता है । ।।२।।

पूरब दिसा चडे सो भाई ।। देही हले न कोई ।।
पवन संग भ्रुगुटी जावे ।। अंस बिंद को जोई ।। ३ ।।

पूरब दिशा से जो शब्द चढता है उस पूरब दिशा से चढनेवाले शब्द से देही हिलती नहीं,देह क्यों नहीं हिलती?क्योंकी पवन(सांस)के संग से हंस भृगुटी में जाता है। भृगुटी में हंस के साथ ५ आत्मा मन यह माया (०) याने बिंद का अंश जैसे के वैसा रहता है। मुल माया निकलती नहीं इसलिए देही हिलती नहीं। यह देही कब हिलती?जब हंस के साथ की मूल ५ आत्मा निकलती तब हंस का देह हिलता। ।।३।।

पिछम घाट नाव सो चाले ।। सो देह झाड़ पिछाडे. ।।
बिंद नाद को करे बिछेडो. ।। माया अंस सब ताडे. ।। ४ ।।

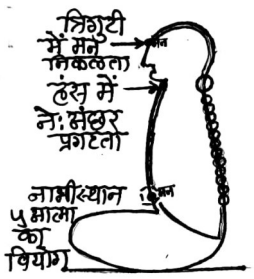

पश्चिम घाट से(बंकनाल की तरफ से)जानेवाला नाम देह को झाड्कर पछाड्ता है(झाड्कर पटककर झटकता है)वह बिंदू याने ५ आत्मा को और नाद याने जीव को एक मन दूसरे से अलग करके सभी अंश निकाल देता है। इस देही को पश्चिम घाट से जानेवाला नाम (ने:अंछर)झाड्कर,पटककर झटकता कैसे?जैसे ही ने:अंछर इस शरीर में कंठस्थान पर प्रगट होता है और हंस नाभी में पहुँचता है तो नाभी में ५ आत्मा का

वियोग होता है। त्रिगुटी में मन निकलता है। निराकार के देश में नवतत्त लिंग देह गल जाता है। शिवब्रम्ह के आगे • महाशुन्य में सुरत काया गल जाती है और हंस को दिव्य काया मिलती है। इसप्रकार यह ब्रम्ह(हंस)ने:अंछर युक्त होता है। ऐसा ने: अंछर इस देह को झाड्कर पटककर झटकता है। ।।४।।

पड़त बिछेवो कंलपे धुजे ।। माया का गुण भाई ।।
अनंत जुंग हंस मो संग रमीयो ।। आज छाड़ अब जाई ।। ५ ।।

जब बिंद का(५ आत्मा का)और नाद(जीव का)का वियोग होता है तब माया कलपती है इसलिये शरीर काँपता है यह काँपना याने धुँजना ये माया के गुण है।

५ आत्मा(माया)क्यों तलमलाती है?क्योंकी ५ आत्मा(माया)से जीव नाद अलग होता है इसलिये ५ आत्मा तलमलाती है। वह माया समझती की,यह जीव अनंत युगों से मेरे संग में रम रहा था। वो आज मुझे छोड्कर जा रहा है। इस चेतन हंससे ही ५ आत्मा को सुख मिलते है। हंस इन ५ आत्माओंके साथ होने के कारण यह ५ आत्माओंको जैसा सुख चाहिए वैसा सुख इस हंस के द्वारा वह ले सकते थे। हंस के कारण ही उनमें(५ आत्मा) चेतनता थी। अब हंस ही उनके पास से अलग हो जायेगा,वह हमे फिरसे मिलेगा नहीं इसलिए वह रोती है। यह माया का स्वार्थ उसे तलमलाता है। इस माया के कारण ही हंस अनंत युगो से जन्मने और मरने के इस फेरे में अटकता। ।।५।।

पूरब दिसा चडे. जब माया ।। कहो काय कूं रोवे ।।
नाद बिंद सो रहे समेळा ।। बिछड़ण कदे न होवे ।। ६ ।।

पूरब दिशा से(संखनाल से)जब शब्द चढता है,तब माया किसलिए रोयेगी ?क्योंकी पूरब की तरफ से चढनेवाले के साथ में नाद(०)हंस और बिंदू (याने ५ आत्मा)रहते है। उनका बिंदू और नाद का कभी भी वियोग नहीं होता है । ।।६।।

देह बेराट माँय को माही ।। जाप जपसी भाई ।।
जागे नाव नाद सो घट मे ।। ब्रम्ह कहे सो माई ।। ७ ।।

परापरीसे दो पद है । १)सतस्वरुप बैराट २) ब्रम्ह बैराट

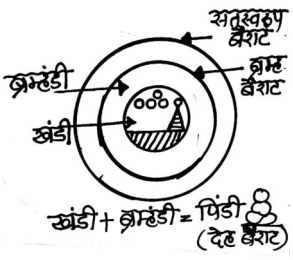

इस ब्रम्ह बैराट में दो पद है– १)खंडी २)ब्रम्हंडी और खंडी ब्रम्हंडी याने पिंडी(देह बैराट)। पिंड बैराट याने ब्रम्ह बैराट और ब्रम्ह बैराट याने पिंड बैराट। पिंडी में कौनसा भी जाप जपना याने ब्रम्ह में का ही जाप है। इस पिंड में का जाप जपने से जादा से जादा नाद तक याने पारब्रम्ह होनकाल तक पहुँचते आता। जो नाद इस पिंड में जागृत होता है वो नाद याने ब्रम्ह,होनकाल ब्रम्ह के सत्ता का है। यह नाद इस घट में ही रहता ऐसा ब्रम्ह प्रगट करने से होनकाल में से बाहर निकलते आता नहीं याने सतस्वरुप में

जाते आता नहीं याने उनका आवागमन मिटता नहीं। ।।७।।

ब्रम्हबेराट माँय सूं आवे ।। नाद तत्त घट माही ।।
वो सुण आण बिछोडे. बिंद कूं ।। ओर उपाय स नाँही ।। ८ ।।

ब्रम्ह वैराट याने सतस्वरुप में से नाद याने ने:अंछर याने सतशब्द याने ही तत्तनाद घट में आता है। घट में आकर वह हंस को(०)५ आत्मा और मन इस बिंदु से अलग करता है। इस बिंदु से नाद को अलग करने का दूसरा कुछ भी उपाय नहीं है। सतस्वरुप के सिवा बिंदु में से नाद को अलग करने में दूसरा कोई भी उपाय नहीं है। ।।८।।

मुख रटणा बिन नांव बारलो ।। इण घट आवे नाँही ।।
आतम ब्रम्ह नाव सो जागे ।। मुद्रा साझन माही ।। ९ ।।

मुख से रटन किये बिना सिर्फ साँस से या सिर्फ मन से या सिर्फ सुरत से यह ने: अंछर घट में नहीं आता। घट में मुद्रा साधने से आतमब्रम्ह का नाम जागृत होता। ये आतम ब्रम्ह ने:अंछर नहीं है,यह अक्षर हैं । ।।९।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। ओ ने: अंछर क्हे कोई ।।
सो बाहेर सूं घट मे आवे ।। और घट मे होई ।। १० ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सब ज्ञानियों सुनो,यह जो ने:अंछर है याने तत्तनाद है याने सतशब्द है,निजनाम है,यह सतस्वरुप में से याने घट(शरीर)के बाहर से घट(शरीर)में आता है। बाकी सब घट में से आते है। वह माया का नाम हो,आत्मब्रम्ह का नाम हो,या होनकाल ब्रम्ह का अजप्पा हो,वह घट में से आता है याने होनकाल में से आता है और होनकाल में ही रहता है। इसतरह से जो मुझे नामों का भेद और पहुँच अलग-अलग करके बताएँगे वही पुरे जोगी है ऐसे जोगी कौन है?तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज है। ।।१०।।

५३

।। पदराग शब्द ।।

बांदा ओ जग मोहे ना जाणेला
बांदा ओ जग मोहे ना जाणेला।। कोई बिर्ळा हंस पिछाणे ला ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा याने हरजी भाटी से कहते है कि,यह जगत के सभी नर-नारी,मैं सतस्वरुप हुँ,मैं सतगुरु हुँ,करके मुझे नहीं समझ सकते। इन सभी नर नारियों में से कोई एखाद बिरला हंस मुझे समझ सकता। ।।टेर ।।

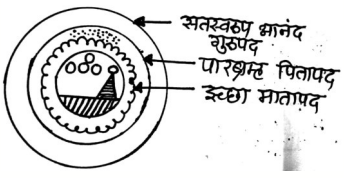

पुरण ब्रम्ह पिता हे मेरा ।। अंछया हे मेरी बाई ।।
सतस्वरूप आणंद गुरू मेरा ।। याद कियो मुझ भाई रे ।।१।।

पूरण ब्रम्ह यह मेरा पिता है,इच्छा यह मेरी माता है और सतस्वरुप आंनदपद यह मेरा आदि से सतगुरु है। इस सतस्वरुप आनंदपद ने मुझे याद किया याने मेरे घट में ने:अंछर प्रगट करने की दया की। ।।१।।

टिप –(साखी १ से ६ तक गुरु महाराज ने जीव भाव से बोले ऐसा लगता)

ने: अंछर कागद गुरू भेज्या ।। बाच सही हम कीया ।।
अब हम चल्या अगम कूं भाई ।। मात पिता तज दीया रे ।।२।।

इस सतस्वरुप आंनदपद गुरु ने मुझे ने:अंछर कागद भेजा याने मेरे घट में ने:अंछर प्रगट किया,ये ने:अंछर बाच सही हम किया मतलब मैंने,मेरे घट में ने:अंछर का अनुभव लिया अब मैं ने:अंछर के प्रताप से सतगुरु के अगम देश में सहज पहुँच गया इस कारण मैंने मेरे माया माता,ब्रम्ह पिता को सदा के लिए त्याग दिया। ।।२।।

बाळक बुध्दी सकळ अे ग्यानी ।। मात पिता कुंई जाणे ।।
सुर्गुण निर्गुण मे सब भीना ।। भेद र बेद बखाणे ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को कहते है की,संसार के सभी ज्ञानी(वेद, शास्त्र,पुराण,गीता इनका अर्थ करनेवाले तथा बतानेवाला माया के ज्ञानी और निर्गुण का ज्ञान बतानेवाले ब्रम्हज्ञानी)इनकी बुद्धी बालक के जैसी है।

जैसे बालक अपने माँ–बाप को ही जानता है,पहचानता है वैसे ही जगत के यह ज्ञानी सिर्फ सगुणरुपी माता और निर्गणरुपी पिता को ही पहचानते है। यह ज्ञानी सगुण तथा निर्गुण भक्ति में ही भिने हुये है याने गर्क हो रहे है याने ही कोई भेद का याने योग का वर्णन करके बताते है,तो कोई वेदो का बखान कर रहे है याने वर्णन करके बता रहे है याने वेदों में की जप,तप,क्रिया–करणी इनमें गर्क हो रहे है ।।३।।

मात पिता सूं सब कोई राजी ।। लड़का लड़की भाई रे ।।
सतगुरू कूं कोई बिर्ळा जाणे ।। समजवान जग माई रे ।। ४ ।।

जैसे जगत में लड्के–लडकियाँ यह माँ–बाप से ही राजी रहते है याने खुश रहते है वे गुरु क्या है यह नहीं जानते। वैसेही ये ज्ञानी जिनकी बुध्दि बालक जैसी है वे सिर्फ ब्रम्हज्ञानी पिता और इच्छारुपी माता इनकी भक्ति करके खुश होते हैं परंतु ये ज्ञानी सतस्वरुप गुरु को जानते नहीं जैसे कुटुंब में एखाद को माँ–बाप से गुरु यह अलग है यह समझ होती है, ऐसेही इस जगत में सतगुरु को जाननेवाले बिरले ही रहते है। जिसे इच्छा माता और ब्रम्हपिता से सतगुरु यह अलग है समझता। ।।४।।

मे सतगुरू का खासा चाकर ।। सनद दीनी गुरू मोई रे ।।
अनंत हंस म्हे ले उधरूला ।। सुण लीजो सब कोइ रे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मैं सतगुरु का खास चाकर याने लाडला शिष्य बना।

टिप– खासा चाकर याने प्यारा,लाडला शिष्य किसे कहते?

जिसमें कुद्रतीही गुरु महाराज के समान सभी जिवों को मोक्ष में ले जाने का पतिव्रता स्वभाव रहता याने सुख–दु:ख में गुरु महाराज की महिमा करते,गुरु कार्य करते और सदा

गुरु महाराज का हृदय में डर रखते वह खासा याने लाडला शिष्य बनता।
सतस्वरुप गुरु ने मुझे याद किया और मुझे ने:अंछर का पत्र भेजा और मैंने वह कबूल किया याने ने:अंछर धारन किया ऐसा मैं सतगुरु का खास चाकर बना,तब गुरु ने मुझे गुरु की सनद दी याने ओहदा दिया। ऐसी सनद के कारण मैं संसार में से अनंत हंसो का उद्धार करुँगा याने उन हंसो को काल के महादु:ख से निकालकर महासुखोंके सतस्वरुप देश में लेके जाऊँगा,यह सभी लोग सुन लो। जबतक होनकाल जग में के सभी हंसो का उद्धार नहीं करता तब तक मेरा ओहदा याने गुरुपदवी रहती। ।।५।।

केवळ बीज अगम सूं आयो ।। सो मुझ मांई ऊगारे ।।
आगे सुण तिथंकर पायो ।। ज्यां संग ब्हो हंस पूगारे ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह केवल का बीज अगम से मुझ में आया हुआ है। पहले जैसे तीर्थकरों को केवल का बीज मिला जिनके संग से बहुत से हंस उसपद में पहुँचे। वही केवल का बीज मुझमें उगा हुआ है याने प्रगट हुआ है। तीर्थकरोंने सतयुग,त्रेतायुग,द्वापारयुग इन तिनो युगो में बहुत से हंसो को इस पद में पहुँचाया। ।।६।।

च्यार जुग मे केवळ भक्ति ।। म्हे हंस आण जगाया रे ।।
सब हंस लेर मिलूंगा गुरू सूं ।। आणंद पद मे भायारे ।। ७ ।।

मैं चार युगों में देह धारण करके आया और मुझमें केवल बीज याने ने:अंछर की सत्ता होने से मैंने इस जगत में केवल का ज्ञान दे-देकर याने काल से निकलो और आनंदपद में चलो ऐसा ज्ञान बताकर जागृत किया। इन सभी हंसो को होनकाल के महादु:खो से निकालकर गुरु के आनंदपद में जाकर मिलूँगा। ।।७।

***(टिप :-साखी ७ से १० तक गुरूमहाराज यहाँ सत्ता रूप से बोल रहे हैं।)**

केई अेक भेज दिया म्हे आगे ।। जुग जुग हंसा भाई रे ।।
ब्होत हंसाँ की अग्या मोने ।। तांते रहुं जग माई रे ।। ८ ।।

कई एक हंसो को मैंने युगों-युगों में पहले ही आनंदपद में भेज दिया ।
सतयुग-अनंत हंस
त्रेतायुग-९९ करोड
द्वापारयुग-१ करोड
कलियुग-अनंत ले जाएँगे ।
तथा संसार में से मुझे बहुत से हंसो को तारना है इसलिए मैं जगत में रहता हूँ। ।।८।।

केईक हंस आगला मोसूं ।। सुण मो पासे आवे रे ।।
द्रसण करत नाव प्रकासे ।। रग रग तन सुख पावे रे ।। ९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,कई एक हंस जो पहले मुझसे मिले याने उन्होंने भक्ति धारन की ऐसे हंस मुझसे मेरा प्रगट होना सुनकर याने जहाँ मेरी सत्ता प्रगट

रुपसे है उसी जगह मेरे पास आते है और मेरा दर्शन करते ही याने मेरे अंदर का विज्ञान का दर्शन करते ही उनमें नाम का प्रकाश याने सतशब्द का प्रकाश होता है और उनकी नाडी–नाडी सुख पाने लगती है। ।।९।।

नवा हंस प्रमोदू जग मे ।। जिन कूं ब्हो दिन लागे रे ।।
उनका भ्रम सकळ सबे भाग्यां ।। नाव घट मे जागे रे ।। १० ।।

जगत में मैं नए हंसो को सतस्वरुप ज्ञान का उपदेश देता हूँ। उन नए हंसो में ज्ञान का प्रकाश होने में याने ने:अंछर जागृत होने में बहुत दिन लगते है। उन नए जीवों के सारे भ्रम तोड्ने पड्ते है। उन नए जीवो के सारे भ्रम भाग जानेपर ही उनके घट में नाम का प्रकाश होता है याने नाम जागृत होता है। ।।१०।।

केवळ भक्त कोई नहीं जाणे ।। भ्रमा भ्रमी गावे रे ।।
पारब्रम्ह लग निर्गुण पोहोचे ।। फिर फिर पाछा आवे रे ।। ११ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, इस केवल की भक्ति को तो कोई जानता नहीं है याने केवल भक्ति का भेद मालूम नहीं,उसकी अनुभूती ली नहीं परंतू वेद,शास्त्र, पुराण में केवल बताया है उसीको पढकर हमे केवल मिला ऐसा समझते। निर्गुण के ज्ञानी निर्गुण पारब्रम्ह की भक्ति करके केवल पद मिल गया करके जानते परंतू वे पारब्रम्हतक ही पहुँचे और फिर–फिर कर वापस लौट आते है ऐसे ये सभी भरमा–भरमी गा रहे है। ।११।

सुर्गुण निर्गुण कर कर भक्ति ।। सब रिष पच पच मुवारे ।।
आवागवण मिटी नहीं कोई ।। पद सूं रेग्या जुवारे ।। १२ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को समझाते कि,कई ऋषियों ने सगुण याने वेद, शास्त्र,पुराण इनमें की विधियाँ करके पच–पचके मर गये तथा कई ऋषियों ने निर्गुण ब्रम्ह की साधना करके पचपच के मर गये परंतु इनका आवागमन मिटा नहीं और ये सभी सतस्वरुप पद से अलग रह गये। ।।१२।।

मुर्त मुर्त सब ही गावे ।। कर्णी सबे पिछाणे रे ।।
बिन मूरत करणी बिन पावे ।। आगत कोई हन जाणे रे ।। १३ ।।

जगत के लोग परमात्मा प्राप्ति के लिये मूर्ती पुजा करते है और मूर्ति में परमात्मा को खोजते है तथा वेदों में की मायावी करणियाँ करके मुझे साहेब मिलेगा ऐसे समझते है परंतु मैं मूर्ति की पूजा न करते तथा कोई भी मायावी करणी न साधते उस पद में पहुँचाता इसकी गती कोई नहीं जानता। ।।१३।।

मो कूं दया तुमारी आवे ।। सुण लीज्यो नर नारी रे ।।
सतसरूप की भक्ति बिना ।। फंद पड़े सिर भारी रे ।। १४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के नर–नारी को कहते है कि,मुझे तुम्हारी दया

आती है क्योंकी सतस्वरुप की भक्ति के बिना तुम्हारे उपर भारी फंद पडेगा याने होनकाल के जगत की सगुण तथा निर्गुण भक्ति करने से तुम्हारे जीव के साथ के ५ आत्मा,मन तथा कर्म नहीं मिटेंगे इसकारण जन्मना-मरना,८४,००,००० योनि तथा अगती का दु:ख भुगतना पडेगा ऐसा बडा भारी फंद पडेगा। ।।१४।।

क्रणी बिना गिगन दूं चाड़ी ।। अेकं पोर पल माही रे ।।
मुद्रा कूंची ना कोई आसण ।। तोई जग जाणे नाही रे ।। १५ ।।

मैं तुम्हें माया की कोई भी करणी किए बिना,कोई भी मुद्रा साधे बिना,योगाभ्यास की कोई भी कूँची किये बिना तथा कोई भी आसन साधे बिना, गगन में याने ब्रम्हंड में एक प्रहर में नहीं तो एक पल में पूरब के ६ पश्चिम के ६ कमलों का छेदन करके दसवेद्वार में पहुँचा देता हूँ फिर भी जगत मुझे जानता नहीं। ।।१५।।

पच पच मरे जोगेसर सारा ।। तोही गड़ चड़यो न जावे ।।
मो संग अनंत सेज मे चड़ग्या ।। तोई इतबार न आवे रे ।। १६ ।।

योगेश्वर इन्हें सतस्वरुप विज्ञानरुपी गढपर चढना था परंतु ये पच-पचकर मर गये, तो भी उनसे सतस्वरुप विज्ञानरुपी गढ पे चढा नहीं गया और मेरे संग में अनंत याने गिनते नहीं आते इतने हंस सहज में सतस्वरुप विज्ञानरुपी गढपर चढ गए फिर भी लोगोंको मेरा विश्वास आता नहीं। ।।१६।।

पच पच चड़े गिगन मे ऊंचा ।। सेज समाध न पावे ।।
मो संग चड़े जिकांरे भाई ।। आठ पोर गरणावे ।। १७ ।।

कई एक पचपच के याने मेहनत करके उपर ब्रम्हांड में चढ गए तो भी उन्हें सहज समाधि नहीं मिली और मेरे संग से जो चढे उनके ब्रम्हांड में,आठो प्रहर शब्द गूँज रहा है याने गरनाट कर रहा है। ।।१७।।

सता समाध रात दिन लागी ।। मो संग चडीया ज्यांरे रे ।।
पवन खेंच पच पच चड़ीया ।। उतरत कुछ नई बारा रे ।। १८ ।।

मेरी संगती से जो चढे हुए है उनकी रात-दिन समाधि लगी हुई रहती है और साँस खींच-खींचकर पचपचकर जो चढे हुए है उनको उतरने में कुछ भी समय नहीं लगेगा। ।।१८।।

ग्यानी तके मांड मे सारा ।। कोई नहीं जीतण पावे रे ।।
अेक साख मे सब कूं पकडूं ।। तोई इतबार न आवे रे ।। १९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ये संसार के जितने भी ज्ञानी है वे सब कोई भी मुझे जीत नहीं पाएँगे। मैं एक ही वचन में सभी ज्ञानियों को पकड लेता हूँ याने अमरलोक की एक ही साखी कही तो वह चुप बैठ जाते क्योंकी उनको उस देश के बारे में मालूम ही नहीं रहता,तो भी लोगों को मेरा ऐतबार नहीं आता। ।।१९।।

माया चरित नहीं केवळ मे ।। पाखंड रूपी भाई रे ।।
जे प्रचा बाहेर ला हूवे ।। केवळ लजायो आई रे ।। २० ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,हमारे केवल में माया के चरित्र याने पर्चे–चमत्कार नहीं है। जो बाहर पर्चे चमत्कार करते है वे सब पाखंड के रुप है याने उनमें केवल नहीं है,माया है याने सब झूठ है ऐसे जो बाहर पर्चे–चमत्कार करते उन्हें केवल कहते है उन्होंने केवल को लजाया है। ।।२०।।

ग्यानी सबे गृस्तो जेसा ।। संत बुध नहीं कोई ।।
केवळ भक्त को भेद न जाणे ।। क्या पिंडत क्या लोई रे ।। २१ ।।

संसार के सभी ज्ञानी ग्रहस्थी जैसे है। इन ज्ञानियो में संत बुध्दि किसी भी ज्ञानी की नहीं है। इस केवल भक्ति का भेद कोई नहीं जानते है क्या पंडित और क्या दूसरे लोग कैवल्य का भेद किसी को भी नहीं मालूम है। ।।२१।।

म्हे तो भक्त करूं उण पद की ।। तां कूं ईस न पायो ।।
समज बिना कोई नहीं माने ।। सुणिया इचज आयो रे ।। २२ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मैं तो उस पद की भक्ति करता हूँ जो पद महादेव को भी नहीं मिला। रात–दिन मुख से रामनाम लेते हुये भी महादेव को जो पद मिला नहीं उस पद की मैं भक्ति करता हूँ। जगत के ज्ञानियों को उस पद की समझ नहीं होने के कारण वे उस पद को जानते नहीं उलटा उन्हें बताने पर बात सुनकर आश्चर्य होता कि,जो पद महादेव को नहीं मिला वह मुझे मिला करके। ।।२२।।

मोख मोख केंता सब कोई ।। सो ओं मारग होई रे ।।
सो प्रगट कीया हम जगमे ।। निरख परख ल्यो सोई रे ।। २३ ।।

तुम सभी लोग जो मोक्ष–मोक्ष कहते हो,तो वह तो यही जो मैं कहता हूँ वह मोक्ष का रास्ता है,वह मोक्ष का रास्ता मैंने जगत में प्रगट किया है। उसे सभी जन निरख–परख लो । ।।२३।।

अंध मुंध मे म्हेमा करग्या ।। सतसरूप की सारा रे ।।
गेल भेद पाया बिन बकीया ।। कोई नहीं उतरे पारा रे ।। २४ ।।

मैं बताता हूँ,उस सतस्वरुप की महिमा पहले भी कई संत कर गए परंतु वे संत अंध मुंध में पूरा ज्ञान नहीं होने पर जो काम करते है उसे अंध–मुंध कहते है, ऐसे अंध–मुंध में महिमा कर गए,पहले के महिमा करके गए संतों को रास्ता और भेद न मिलेने के कारण बिना कोई भी पार नहीं उतरे। ।।२४।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। न्याव सत सुण लिज्यो ।।
अहूं भाव हूं पद तज दूरो ।। केवळ निर्णो कीज्यो ।। २५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी ज्ञानियों,वेदांतियों इसका सत न्याय

सुन लो। अंहभाव(अहंकार),अहंपद(अभिमान)छोडकर,दूर करके इस केवल का निर्णय करो। ।।२५।।

५४

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

बांदा ओ कोई भेद बतावे

अंछर बिना बिंद बिना उलटर ।। गिगन कोण बिध जावे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी से कहते है कि,अक्षर के बिना याने ओअम अक्षर इस माया के बिना तथा बिंद बिना याने मन और ५आत्मा के बिना घट में उलटकर स्वर्ग के रास्ते से सतस्वरुप गिगन में सतस्वरुप की समाधि कैसे लगेगी यह भेद मुझे बताओ।

जगत में समाधि दो प्रकार की है।

१) ओअम इस त्रिगुणी माया के संग की समाधि और

२) ओअम इस त्रिगुणी माया के परे के सतस्वरुप के संग की समाधि।

*** ओअम इस त्रिगुणी माया के संग की समाधि–** इस समाधि में हंस अंछर याने ओअम के आधार से मन तथा ५ आत्मा से भृगुटी गिगन में जाता। यह भेद सभी ज्ञानी, ध्यानी, वेद, शास्त्र जानते है।	*** सतस्वरुप की समाधि–** इस समाधि में हंस बिना ओअम के आधार से ५ आत्मा नाभी में और मन त्रिगुटी में त्यागकर दसवेद्वार में सतस्वरुप गिगन में जाता। यह भेद ज्ञानी,ध्यानी,वेद,शास्त्र नहीं जानते। यह भेद कोई बिरलाही जानता। ।।टेर।।

अेक नाद बिंद सो भेळा कहीये ।। अेक नाद सो जूवा ।।
अेक ने:अंछर न्यारा प्रगटे ।। अेक अंछर संग हूवा ।। १ ।।

ओअम इस त्रिगुणी माया के संग की समाधि :– इस समाधि विधि से भृगुटी गिगन में चढने में नाद याने हंस ब्रम्ह (०) और बिंद याने मन तथा ५ आत्मा माया यह दोनो जैसे आदि में भेली थी वैसे भेली रहती याने हंस के साथ समाधि के पहले जैसे	**सतस्वरुप की समाधि :–** 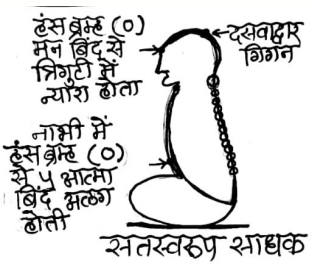 इस समाधी विधि से दसवेद्वार के गिगन में चढने से नाद याने हंस ब्रम्ह, ५ आत्मा बिंद से नाभी में,मन बिंदू से त्रिगुटी में न्यारा होता।

यह ५ आत्मा और मन थे वैसेही समाधि के बाद भी हंस के साथ ५ आत्मा और मन ($०_{मन}$) रहते। ***अेक अंछर संग हुवा ।** इस समाधि में हंस के साथ ओअम शब्द आदि मे था वही संग रहता। ओअम शब्द से निराला ने:अंछर नहीं प्रगटता।	*** अेक ने:अंछर न्यारा प्रगटे ।** इस समाधि में ओअम शब्द से निराला ऐसा ने:अंछर प्रगटता। ।।१।।

अेक तत्त ग्यान कहे हम चीन्यो ।। अेक समज सूं न्यारो ।।
अेक ध्यान ऊतर चड़ जावे ।। अेक अखंड बिचारो ।। २ ।।

***ओअम इस त्रिगुणी माया के संग की समाधि :–** मूलद्वार से जो साधक भृगुटी में चढता वह अपने मत से तत्तज्ञान याने होनकाल पारब्रम्ह को ही सतस्वरुप तत्त समझकर सतस्वरुप तत्त को पहचाना करके माया समझ से याने माया माता और ब्रम्हपिता इस कुल समझ से कहता। जैसे ग्रहस्थी में पुत्र, माता–पिता को समझता पंरतु माता–पिता को समझने की पुत्र को जो समझ रहती उस समझ से वेदी गुरु को नहीं समझ सकता। यह पुत्र, पिता को ज्ञान पहुँच में अपने समझ से पिता न समझते वेदी गुरु समझता। * मूलद्वार से भृगुटी में चढ़नेवाले का ध्यान भृगुटि से उतरकर मूलद्वार पर आ जाता ऐसे बड़े मेहनतसे भृगुटी में चढ़ाया हुआ ध्यान सहज उतर जाता	***सतस्वरुप की समाधि :–** संखनाल से उतरकर बंकनाल से दसवेद्वार में चढनेवाला साधक सतस्वरुप तत्त यह माया माता और ब्रम्ह पिता इस कुल के ज्ञान से समझता नहीं ऐसा कहता। *दसवेद्वार में चढनेवाले का ध्यान दसवेद्वार से उतरकर कंठस्थान पर कभी नहीं आता । उसका ध्यान सतशब्द के साथ अखंडीत रहता। होनकाल के किसी भी विधि से ध्यान खंडीत नहीं होता। ।।२।।

मुद्रा अेक समज संग लागे ।। अेक कळा बिन भाई ।।
अेक अखंड लिव सो लागी ।। अेक खिरे खिर जाई ।। ३ ।।

***ओअम इस त्रिगुणी माया के संग की समाधि :–** त्रिगुणी माया की मुद्रा भृगुटी में माया के सुध बुध के समझ से लगती। माया के समझ की भूल पड गई तो मुद्रा खंडीत हो जाती। जैसे सुरत के संग मुद्रा लगी और सुरत में भुल पड गई याने सुरत इधर उधर चली गई तो मुद्रा खंडीत हो जाती। *भृगुटी के माया साधक की माया के साथ की लीव टुट तुट जाती।	***सतस्वरुप की समाधि :–** सतस्वरुप दसवेद्वार की मुद्रा माया के सुध बुध समझ के परे रहती। इस मुद्रा में माया के सुध बुध की समझ की जरासी भी जरुरत नहीं रहती। ऐसी मुद्रा कुद्रती बिना माया के समझ के आधार पर रहती। *दसवेद्वार के सतस्वरुप के साधक की, सतस्वरुप के साथ की लीव अखंडीत रहती। ।।३।।

अेक सता समाध सुरत संग लागी ।। अेक सुरत सेंई न्यारी ।।
अेक निद्रा माय मिट गई नासत ।। अेक अखंडत प्यारी ।। ४ ।।

***ओअम इस त्रिगुणी माया के संग की समाधि :–** माया के साथ की सत्ता समाधि साधक को सुरत के आधार से लगती। * भृगुटी की ओअम माया की समाधि साधक निद्रा में जाते ही मिट जाती ऐसी यह समाधि नासत याने नकल समाधि है।	***सतस्वरुप की समाधि :–** सतस्वरुप के साथ की सत्ता समाधि साधक को बिना सुरत से लगती। इस सत्ता समाधि को उसकी सुरत लगाने की कही जरुरत नहीं रहती। *दसवेद्वार की सतस्वरुप सतशब्द की समाधि साधक निद्रा में गया तो भी अखंडीत रहती। साधक को निद्रा आने से खंडीत नहीं होती ऐसी यह प्यारी याने असल समाधि है। ।।४।।

अेक समाध पवन संग लागे ।। अेक न: केवळ भाई ।।
अेक पोर सवा लग बारे ।। अेक जुगाँ लग जाई ।। ५ ।।

***ओअम इस त्रिगुणी माया के संग की समाधि :–**	***सतस्वरुप की समाधि :–**

भृगुटी में माया से लगी हुई समाधि ओअम इस साँस के संग लगती। *भृगुटी के ओअम की समाधी सव्वा प्रहर याने सतस्वरुप के समाधि के तुलना में जरासे समय के लिए लगी रहती। उस साधक की सुरत ओअम माया से बिछडते ही समाधि तुट जाती।	दसवेद्वार की सतस्वरुप की समाधि बिना साँस के ऐसी निकेवल याने बिना किसी माया के आधार से लगती। *सतस्वरुप की दसवेद्वार की समाधि युगानयुग याने हंस जब तक दसवेद्वार के परे के अमरलोक में सदा के लिए जाता नहीं तबतक लगी रहती। वह हंस अमरलोक जावे तब तक कितने बार भी मनुष्य देह में आया तो भी उसकी समाधि दसवेद्वार में ही लगी रहती। दसवेद्वार के निचे कभी नहीं आयेगी। सतस्वरुप की दसवेद्वार की समाधि २ प्रकार से लगती है। १) माया के भान रहनेवाली समाधि। जिसमें हंस चोबीसो घंटे साहेब के साथ रहकर संसार के कार्य करता। यह समाधि दसवेद्वार में पहुँचने पर लगती। २) माया का भान न रहनेवाली समाधि। इसमें हंस को संसार की सुध न रहते साहेब में गर्क रहता है। यह समाधि दसवेद्वार के बाहर लगती है। ।।५।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। याँरा सुख बतावे ।।
सुणर कहे सो झूटा जग मे ।। पोहोंच खबर कोई लावे ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानियों को पुछते है कि,ऐसे दसवेद्वार के सतस्वरुप गिगन के समाधि का सुख बताओ। जो इस समाधि को पहुँचे हुए संतो की (दादुसाहब,दर्याव साहब,कबीर साहब,नानक साहब)बातें सुनकर बताते है,वे झूठे है और जो सतस्वरुप के समाधि देश में जाकर सतस्वरुप की खबर लाते है वे ही सच्चे है। ।।६।।

६५

।। पदराग आसा ।।

बांदा सत सबद हे न्यारा
बांदा सत सबद हे न्यारा ।।
वाँसे सबद कोई नहीं निकस्या ।। ना अब निकसन हारा ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी से कहते है,कि सत्तशब्द इस होनकाल से न्यारा हैं,सत्तशब्द से आज तक एक भी हंस होनकाल सरीखा जन्मा नहीं और आगे भी कभी जन्मेंगा नहीं इसलिए यह सत्तशब्द होनकाल से न्यारा। || टेर ||

अनाद सब्द सूं नाद हुवा रे || नाद जिंग कूं जायो ||
जिंग माँय सूं जोत ऊपनी || तामे बिंद समायो || १ ||

अनाद शब्द से याने होनकाल पारब्रम्ह से नादब्रम्ह उपजा। इस नाद ने जिंग ध्वनि को जन्म दिया। जिंग ध्वनि से ज्योत निर्माण हुई। उस ज्योती में बिंदु माया समाई। ||१||

नाद बिंद दोनु भेळा || जोत माँय सूं आया ||
या दोना मे हंस प्रगटयो || त्रिकुटी आण समाया || २ ||

ज्योत में से आकर नाद पुरुष और बिन्दू स्त्री यह दोनो इकट्ठा हुए उससे हंस प्रगटा। वह हंस त्रिगुटी में समाया। || २ ||

हंस माँय सू जीव ऊपजे || सोई बिंद संग होई ||
याँ मे पाँच तत्त सो उपप्या || यू आ माँड बणी सब लोई || ३ ||

यह हंस बिंदु याने त्रिगुणी माया के संग से जीव बना। इस जीव ने पाँच तत्वो का देह धारण किया। इसप्रकार से पाँच तत्वो की सृष्टी बनी और होनकाल से पाँच तत्वो के जीव जन्मे। ||३||

सत्त सबद की कळा कुवावे || ज्युं ब्रछ की सुण छाया ||
युं कुद्रत कळा सकळ सूं न्यारी || नहीं हूणकाळ मे भाया || ४ ||

सतशब्द की कला होनकाल पारब्रम्ह सरीखी जन्म देनेवाली नहीं है। वृक्ष के छाया जैसी है। जैसे वृक्ष की छाया में वृक्ष प्रगट करने की रीत नहीं है परंतु सुरज की तपन से जीव को बचाके सुख देने की रीत है वैसे जीव को काल से बचाके सुख देने की रीत है। यह कुद्रत कला ऐसी कहलाती है,जैसी वृक्ष की छाया। ऐसी कुद्रत कला सभी से न्यारी है। यह कुद्रत कला होनकाल के उत्पन्न करने की कला की अपेक्षा निराली है। यह हंस को मोक्ष को ले जाने की कुद्रत कला होनकाल के कोई भी कला से प्रगट होती नहीं। || ४ ||

कुद्रत कळा तका सुण आदु || मोख जावण के ताँई ||
जो जन माँय प्रगटे आई || से पाप पुन्न बस नाँई || ५ ||

यह कुद्रत कला आदि से मोक्ष को ले जाने के लिए है। जिस संत के घट में यह कुद्रत कला प्रगट होती वह संत होनकाल के काल सरीखा काल के पाप-पुण्य भुगतता नहीं। ।५।

वे हंस जाय मिलेगा केवळ || बीचे थुंभे न कोई ||
कुद्रत कळा बिना सब करणी || जामे मोख न होई || ६ ||

कुद्रत कला प्राप्त किए हुए हंस केवल के महासुख में जाकर मिलते है। वह होनकाल के

माया के तीन लोक चौदा भवन और तीन ब्रम्ह के तेरा लोको में से कोई भी देश में कर्म भोगने के लिए रुकता नहीं। अंतिम समय वह मृत्युलोक छोडते ही बडे सुख के अमरलोक में जाते। कुद्रत कला छोड्कर अन्य माया की सभी क्रिया करणियाँ साधने से हंस मोक्ष में जाता नहीं। वह उसके किए हुए पाप –पुण्य के अनुसार स्वर्ग से नरक तक दु:ख भोगते।६।

के सुखराम म्हेर सतगुरू की ।। वा कुद्रत कळा कुवावे ।।
ओर गुरांकी दया मन सूं ।। मुख कहयाँ सूं पावे ।। ७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि कुद्रत कला सतगुरु की मेहेर से प्राप्त होती याने ही सतगुरु में प्रगट हुएवे सतस्वरुप के दया से प्राप्त होती और होनकाल की रिध्दी सिध्दी की कला गुरु के मन से या मुख के वचनों से प्राप्त होती। इन रिध्दी–सिध्दी की कला से हंस का मोक्ष होता नहीं।। ।। ७ ।।

६८

।। पदराग आसा ।।

बांदा से जन पूरा जोगी
बांदा से जन पूरा जोगी ।।
पोहोंचर कहे से साचा जन हे ।। सुणर कहे सो झुटा रोगी ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी को कहते है की,पूरे जोगी तो वही जन है,जो बंकनाल के रास्तेसे उलटकर समाधि देश में चढ गए है और वहाँ पहुँचकर वहाँ की हकीकत कहते है वही जन(संत)सच्चे है और दूसरे संतों की बताई हुई बात सुनकर जो कहते है वे झूठे रोगी है ।

झूठे रोगी कैसे है ?

जिन्हें फिनस की बिमारी होती है उन्हे सुगंध समझता नहीं परंतु वह दूसरो का सुन–सुनकर उस सुगंध की तारीफ करता है। उसी तरह सतस्वरुप का अनुभव रहता नहीं परंतु दुसरे संतोंका ज्ञान याने जो संत समाधि पहुँचे है ऐसे केवली संतोंका ज्ञान पढ के,सुन के बताते है वह इस रोगी की तरह झूठे जोगी है वह सतस्वरुप जोगी नहीं। ।।टेर।।

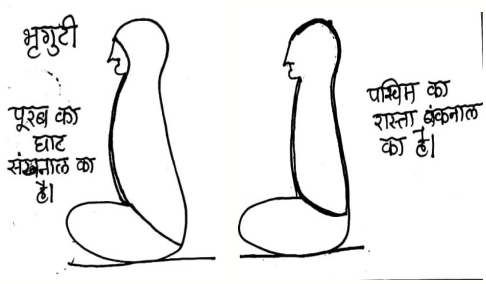

अेक घाट पुर्ब को कहीये ।। अेक पिछम को होई ।।
पुरब चडे सो कुण शब्द रे । कहो पिछम को मोई ।१।

एक घाट पूरब का याने संखनाल का है और एक पश्चिम का याने बंकनाल का है। इसमें पूरब से (संखनाल के रास्ते से)और पश्चिम से(बंकनाल के रास्ते से)कौनसा शब्द चढता है वो मुझे बताओ?।१।

पुर्ब घाट चडे. सो अंछर ।। क्हो क्हाँ सूं लावे ।।
पिछम घाट चडे जो उंचो ।। क्हो क्हाँ सूं लावे ।। २ ।।

पूरब घाट(संखनाल)से जो अक्षर चढता है वह कहाँ से आता है?और पश्चिम घाट (बंकनाल)से जो अक्षर चढता है उसे कहाँ से लाते है?।।२।।

पुरब दिसा चडेसो ऊँचो ।। किसो नाव क्हो भाई ।।
पिछम दिसा पहाड़ चड़ जावे ।। किसी रीत कर माई ।। ३ ।।

पूरब दिशा से उपर चढता है वह कौनसा नाम है वह मुझे बताओ और पश्चिम दिशा से पहाड(मेरदंड)चढ जाता है वह किस रीति से अंदर से चढता है? ।।३।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। अे न्यारा कर लावे ।।
केवळ बीज अेक माया को ।। सब न्यारो कर पावे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सभी ज्ञानियों सुनो,कैवल्य का बीज और माया का बीज यह तुम अलग-अलग करके बताओ,नहीं तो मेरे शरण में आओ मैं तुम्हें केवल का बीज और माया का बीज कैसे अलग-अलग है यह भेद सहित बताता हूँ। ।।४।।

६९

।। पदराग आसा ।।

बांदा से नर मोख न जावे
बांदा से नर मोख न जावे ।।
सतश्रुप आणंद पद कहिये ।। ओ कोई भेद न पावे ।। टेर ।।

बांदा याने हरजी भाटी से आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,व्रत एकादसी करनेवाला,यज्ञ करनेवाला, हटयोग साधनेवाला, सांख्ययोग साधनेवाला, जप, तप, सत करनेवाला,ओअम की साधना करनेवाला,पाँचो मुद्रा साधनेवाला,ब्रम्हा के वेदो के क्रिया-करणियाँ करनेवाला, महेश का भेद साधनेवाला, शक्ति तथा शेषनाग का लबेद साधनेवाला, विष्णु की नौ विद्या भक्ति साधनेवाला,गायत्री जपनेवाले आदि किसी भी प्रकार की सगुण की भक्ति करनेवाला कोई भी मनुष्य काल से छुटेगा नहीं। वैसेही सोहम् इस जीवब्रम्ह की तथा अजप्पा इस होनकाल पारब्रम्ह की निरगुण भक्ति करनेवाला भी कोई भी मनुष्य मोक्ष में जाएगा नहीं मतलब जबतक सतस्वरुप आनंदपद का भेद मिलता नहीं तब तक सगुण पद के कोई भी भेद का या निरगुण पद के कोई भी भेद का कोई भी मनुष्य मोक्ष में जाएगा नहीं, काल से छुटेगा नहीं,अनंत सुखों में जाएगा नहीं।।टेर।।

सर्गुण भक्त सकळ जग जाणे ।। निर्गुण कोई अेक ग्यानी
अे दोनु नूगरा इण जग मे ।। पद की भक्त न जाणी ।। १ ।।

सगुण याने रजोगुण ब्रम्हा,सतोगुण विष्णु,तमोगुण शंकर इनसे उपजी हुई भक्तियाँ सभी जगत के नर-नारी जानते है। निरगुण याने निराकारी होनकाल पारब्रम्ह की भक्ति जगत के गिणेमिणे नर-नारी जानते है। इन दोनो ने मतलब सगुण भक्तोंने माता की भक्ति

धारन की और निरगुण भक्तोंने पिता की भक्ति धारन की परंतु इन दोनो ने सतस्वरुप आनंदपद गुरु की भक्ति नहीं अपनाई इसकारण ये जगत के सभी सगुण भक्त और निरगुण के सभी भक्त नुगरे रहे।(गुरु के मोक्ष विधी से दूर रहे ।) ।।१।।

निर्गुण हंस को पिता कही जे ।। सुर्गुण सो माता होई।।
सतगुरु बिना मोख कीम पोंचे।। केंता हे सब कोई।।२ ।।

जैसे जगत में हंस देह धारन करने के पहले पिता के भृगुटी में रहता और माता के गर्भ में

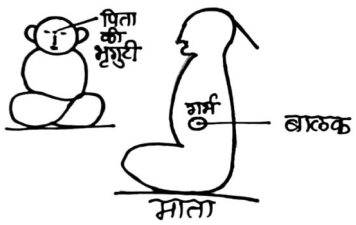

पड्कर शरीर धारन करता इसीप्रकार आदि मे हंस पारब्रम्ह पिता के भृगुटी में था। पाँचो इंद्रियो के सुखो की चाहना से पिता की भृगुटी को त्यागकर त्रिगुणी माया के पेट में आया और नौ-तत्त लिंग निराकारी शरीर धारन किया। इसप्रकार ज्ञान दृष्टि से सभी नर-नारी समझो की त्रिगुणी माया यह हंस की माता है,तो होनकाल पारब्रम्ह यह हंस का पिता है। जगत में माता-पिता तथा वेदी गुरु रहते।

जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा नर-नारी कहते है कि,वेद,भेद के वैराग्य ज्ञान की विधियाँ गुरु के शरण में ही मिलती है,घर में माता से या दुकान में पिता से नहीं मिलती। जगत के लोग देहधारी माता-पिता की समझ रखकर कुटुंब के परे के वेदी,भेदी गुरु के प्रती समझ रखते और कहते की कुल के माता-पिता से मोक्ष नहीं मिलेगा। मोक्ष मिलाने के लिये सतगुरु का शरणा ही चाहिए परंतु जीव को मोक्ष ले जाने का विषय आता तब सभी जगत के लोग त्रिगुणी माया इस माता को ही गुरु समझकर मोक्ष की आशा करते या गिणेमिणे नर-नारी निराकारी पारब्रम्ह पिता को मोक्ष के अधिकारी गुरु समझ के शरणा धारते परंतु जीव के माता,पिता और गुरु की समझ जरासी भी नहीं रखते। ।।२।।

बेद भेद सब ने जस गायो ।। मात पीता को भाई ।।
सत्त गुरु गम ना जाणी यां ने ।। सब नुगरा जग माही ।। ३ ।।

चारो वेद के रचयीता ब्रम्हा ने,भेद को प्रगट करनेवाले शंकर ने,लबेद को जगत में लानेवाली शक्ति ने,जगत में नौ विद्या की भक्ति प्रगटानेवाले विष्णू ने सगुणी माया या निरगुणी पारब्रम्ह से ही मोक्ष मिलता यह समझा और वही अपने ज्ञान में बताया। ब्रम्हा, विष्णु,महेश,शक्ति इन्होंने भी माया यह माता है और पारब्रम्ह होनकाल यह पिता है ये सतगुरु नहीं है यह जाना ही नहीं इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, ब्रम्हा,विष्णु,महेश,शक्ति,अवतार इनके सभी साधू संत,ऋषी-मुनी,ज्ञानी,ध्यानी ये सभी नुगरे है,सतगुरु आनंदपद के शिष्य नहीं है। ।।३।।

बेद भेद का हुवे ऊपासी ।। जब जग केहे कूछ नाही ।।
सतगुरू भेद अणंद पद ईचरज ।। ग्यलो करे जग माही ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज क हते है कि ,जबतक नर–नारी वेद भेद याने त्रिगुणी माया या पारब्रम्ह तक की भक्ति करते है तब तक जगत के ज्ञानी,ध्यानी,नर–नारी उस मनुष्य को भला–बुरा कुछ नहीं कहते परंतु आनंदपद सतगुरु का भेद धारन करते ही उस मनुष्य को पगला कर डालते उसे सतगुरु के ज्ञान में सुझने नहीं देते ऐसा आश्चर्य है। ।४।

जिऊँ संसार छाड़ नर कोई ।। संत सरण कोई जावे ।।
जब सब गांव आण कर बरजे ।। ओ कांई क्रम संबावे ।। ५ ।।

कोई मनुष्य कुटुंब,परिवार त्यागकर बैरागी साधू के शरण जाता है तब उसके कुटुंब परिवार के तथा सगे संबंधी सहित सभी गाँववाले,कुटुंब,परिवार त्यागकर संत बनने के लिए मनाई करते है और कुल संसार त्यागकर वैरागी बनने का क्या कर्म संभाला यह नाराजी जतलाते हैं। ।।५।।

पांच नाव सुण चेलो होवे ।। जे कुळ नहीं छोडे कोई ।।
तब लग जहान कोई नहीं बर्जे ।। ईऊँ बेद ऊपासक होई ।। ६ ।।

कोई मनुष्य कुटुंब परिवार त्यागकर बैरागी न बनते कुटुंब में ही रहकर वेद की उपासना करता है तब तक संसार में कोई मना नहीं करता,वैसेही ने:अंछर वैरागी न बनते त्रिगुणी माया माता और पारब्रम्ह पिता के घर में रहकर पाँच नाम(ज्योत–निरंजन,ओंकार,सोहम, ररंकार,सतनाम)धारन करता उसे भी माता या पिता तथा इन दोनो के साधू संत पाँच नाम धारन करने के लिए मना नहीं करते। ।।६।।

स्वामी हुयां जक्त सब कापे ।। मात पीता कूळ रोवे ।।
इंऊं ग्यान मे इचरज सांसो ।। नांव उदे ज्या होवे ।। ७ ।।

जैसे गुरु के पास जाकर स्वामी याने बैरागी साधू बनता तब उसके नजदिक के सारे लोग दु:ख से काँपते और माँ–बाप तथा अन्य कुल के लोग रोते वैसेही मनुष्य के हंस मे ने: अंछर नाम प्रगट होनेपर जगत के सभी देवता तथा माया माता और पिता ब्रम्ह दु:खीत होते और हंस होनकाल से निकल जाएगा इसके लिए चिंतीत होते ऐसा इस ज्ञान में आश्चर्य है और चिंता भी है । ।।७।।

सर्गुण निर्गुण दोनु भक्ति त्यागे ।। नहीं ज्हान सूं जूवो ।।
नांव कळा ऊपदेश संभायो ।। तब बेरागी हूवो ।। ८ ।।

जैसा कोई मनुष्य घर में माता की भी सेवा नहीं करता और पिता का भी धंदा नहीं करता और ये दोनो सेवा न करते घर में ही रहता,घर से निकलकर वेदी वैरागी गुरु से वैराग्य ज्ञान नहीं सिखता तबतक वह मनुष्य वैरागी नहीं बनता। इसीप्रकार कोई मनुष्य ब्रम्हा, विष्णु,महेश सर्गुण की भक्ति भी और निरगुण पारब्रम्ह की भक्ति भी त्यागता और सतस्वरुप गुरु से वैराग्य विज्ञान के नाम का भेद धारन नहीं करता तबतक वह हंस विज्ञान वैरागी नहीं बनता होनकाल कुल का ही जीव बने रहता ।।८।।

सुणे उपदेश हमारो संतो ।। माया ब्रम्ह सब रोवे ।।
के सुखराम बाप ब्रम्ह को ।। यो नहीं बेरागी होवे ।। ९ ।।

जैसे कोई मनुष्य माता से संबंध त्यागकर सिर्फ पिता का ही धंदा पकड्ता तो भी वह वेदी वैरागी नहीं बनता। इसीप्रकार पिता होनकाळ पारब्रम्ह को वैरागी पकड्कर पारब्रम्ह की भी भक्ति करता तो भी वह वैरागी नहीं बनता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है विज्ञान वैरागी तो मेरा विज्ञान वैराग्य सुनने पर ही बनता और वह हंस माता-पिता के घर से निकलकर सतस्वरुप आनंदपद में पहुँचता। जब हंस होनकाल कुल त्यागकर आनंदपद पहुँचता तब माया माता तथा पारब्रम्ह पिता दोनो रोते। ।।९।।

७०

।। पदराग आसा ।।

बांदा ने: अंछर सुण न्यारा

बांदा ने: अंछर सुण न्यारा । सतगुरू म्हेर नाव घट जागे । तब कोई लखे बिचारा ।टेर।

बांदा ने:अंछर यह निराला है। जब शिष्य पर सतगुरु की मेहर होगी तभी शिष्य के घट में निजनाम जागृत होगा तब तक शिष्य को ने:अंछर,समझने में आता नहीं। ।। टेर ।।

श्रवण सुणे नेण सूं देखे ।। मुख सूं क्हे कुछ कोई ।।
अनंत बास तन माही म्हेके ।। सो पण नाव न होई ।। १ ।।

कानों से जो बावन अक्षर सुनते,आँखो से दृश्य देखते,मुँख से बावन अक्षर बोलते और सुगंधी प्रगट करनेवाली माया की विधि साधने से अनंत सुगंधी इस शरीर में महकती इसमें से एक भी ने:अंछर नहीं। ।।१।।

ओऊं सोहं सब्द अजपो ।। मन कर सिंवरे कोई ।।
राम राम सिंवरे हे कोई ।। अेई नाव न होई ।। २ ।।

ओअम,सोहम,अजप्पा,राम-राम मन लगाके सुमिरन करते। ऐसे शब्दो से कितना भी मन लगाके रटा तो भी उसमें से एक भी शब्द ने:अंछर शब्द नहीं। ।।२।।

देहे धारी सो सबही माया ।। आणंद ब्रम्ह नहीं कोई ।।
क्या अवतार देव अरू दाणूं ।। सब ही माया होई ।। ३ ।।

तीन लोक चौदह भवन में रामचंद्र,कृष्ण,आदि अवतार,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि देव और बिभीषण,बली,कुबेर आदि राक्षस यह सभी माया है यह कोई ने:अंछर संत नहीं। ।।३।।

नेण नासका श्रवण बुंदे ।। मुख के चुपक लगावे ।।
बाजा सुणे उजाळा देखे ।। यूं निजनाव न पावे ।। ४ ।।

आँखें,कान,नाक बंद करके,मुख को बंद करके बाजे सुनते और उजाला देखते ऐसा सुनते आनेवाला इस माया के कोई भी विधि में ने:अंछर प्रगट करने का भेद नहीं। ।। ४ ।।

त्राटक ध्यान खेचरी मुद्रा ।। रेचक पुरक साजे ।।
ने: अंछर यूं भेद न पावे ।। पवन गिगन चड़ गाजे ।। ५ ।।

त्राटक ध्यान करना,पाँच मुद्रा साधना,रेचक,पूरक करना,पवन गगन में चढाके उसकी गर्जना सुनना इन माया की कोई भी विधि में ने:अंछर प्रगट करने का भेद नहीं। ।। ५ ।।

नेती करे धोतियां कोई ।। आताँ काढ पखाळे ।।
ने: अंछर वो कोई न पावे ।। भावे तप कर जाळे ।। ६ ।।

नेती करना,धोती करना,आँतो को बाहर निकालके धोना,शरीर को तपश्चर्या करके जलाना इस विधि में ने:अंछर प्रगट होता नहीं। ।। ६ ।।

बांधे मूळ नऊं द्रवाजा ।। पवन देत चड़ाई ।।
क्रामात देही पण राखे ।। नाव न पावे भाई ।। ७ ।।

नौ दरवाजे बंद करके पवन भृगुटी में चढा लेते और अनेक वर्षोतक अपना देह करामाती काल से बचाते रहते ऐसे काल से बचने की करामात प्रगट की तो भी उसमें ने:अंछर प्राप्त होता नहीं। ।। ७ ।।

अे सब ध्यान सिधायत होई ।। तामे भूल मत भाई ।।
आणंद लोक ने: अंछर पूंते ।। और न पोंचे काई ।। ८ ।।

जो ध्यान और सिद्धांत अबतक देखे,उसमें कोई भूलो मत। यह कोई भी ध्यान और सिद्धांत आनंद लोक में पहुँचते नहीं। आनन्द लोक में सिर्फ ने:अंछर पहुँचता,दुसरे कोई भी माया के ज्ञान और ध्यान पहुँचते नहीं। ।। ८ ।।

के सुखराम सुणो नर नारी ।। ग्यानी दरसण सारा ।।
सतगुरू सरण प्रेम सूं जागे ।। वो निजनाव बिचारा ।। ९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारी,ज्ञानी,जोगी,जंगम,सेवड़ा,संन्यासी,फकीर ,ब्राम्हण इन छः दर्शनियों को बताते है,कि यह निजनाम,यह ने:अंछर सतगुरु के शरण में जाके उनसे प्रेम किया याने ही घट में प्रगट होता,सतगुरु का शरणा छोड के कोई भी माया के विधि से यह निजनाम प्रगट होता नहीं। ।।९।।

७१

।। पदराग आसा ।।

बांदा तत्त राज ओ होई
बांदा तत्त राज ओ होई ।।
माया चेन अेक नहीं माने ।। ना आवे वो कोई ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा याने हरजी भाटी को कहते है,कि,तत्त राज याने सतस्वरुप राज जिस हंस में प्रगट होता वह हंस ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति के एक भी पर्चे चमत्कारो को मानता नहीं और हंस ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनके सरीखे जगत में कोई भी पर्चे चमत्कार करता नहीं। ।।टेर।।

अणंद लोक मे माया नाही ।। तो तत्त मे किम मावे ।।
काया माहे सभाव जना को ।। सो बचना मे आवे ।। १ ।।

आनंद लोक में ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति यह माया नहीं,फिर जिस हंस में आनन्द लोक प्रगट हुआ उस हंस से ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और शक्ति के पर्चे चमत्कार कैसे होगें?देह में आनंद तत्त प्रगट हुआ है उस संत के वचनों से आनन्द तत्त के ही पर्चे चमत्कार प्रगट होगें और जिस देह में माया तत्त प्रगट हुई है उस संत के वचन से ब्रम्हा,विष्णु,महादेव, शक्ति के ही पर्चे प्रगट होगें। ।। १ ।।

अणंद ब्रम्ह को नाव हंस रे ।। तत्त सभाव कहावे ।।
वां माया जो जाय न सक्के ।। तो यांई निगट न आवे ।। २ ।।

आनंद ब्रम्ह का नाम जिस हंस में प्रगटा उस हंस का स्वभाव आनंद ब्रम्ह के तत्त सरीखा रहेगा। आनंद ब्रम्ह में ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति यह माया जा ही नहीं सकती तो यहाँ आनंद ब्रम्ह के हंस के पास ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति के पर्चे चमत्कार की माया कैसे जायेगी?।।२।।

जाकी सभा माय कोई जावे ।। सगो सगे के कोई ।।
जात जात की चाल अेक रे ।। युं तत्त रीत कहुँ तोई ।। ३ ।।

सभा में अनेक लोग जमा होते उस सभा में जाती का मनुष्य जातीवालो के पास बैठता,दुजे जातीवालो के पास बैठता नहीं। उस में भी सगा सगे के पास बैठता,उसीप्रकार तत्त और माया की रीत है। ।।३।।

तत्त नाव की सत्ता बताऊं ।। अे सुण प्रचा होई ।।
भ्रम क्रम जग का सब बंधण ।। या सूं डरे न कोई ।। ४ ।।

तत्त नाम के सत्ता के पर्चे कहता,यह तत्त नाम जिस हंस में प्रगट हुआ उस हंस को माया ने उत्पन्न किए हुए कोई भी भ्रम का कर्मो का और बंधन का डर लगता नहीं। ।।४।।

उलटर नाव चड़े गड़ ऊपर ।। सेज समाधी लागे ।।
सांसो नहीं मोख दिस कोई ।। नेक भ्रम नहीं जागे ।। ५ ।।

वह हंस अपने घट में उलटकर सतस्वरुप गढ पर चढ जाता उसे दसवेद्वार सहज समाधि लगती। वह सभी संसार करते हुए सत्ता तत्त के साथ समाधि में रमता। उसे मेरा मोक्ष होगा या नहीं इसकी फिकीर नहीं रहती और उसे मोक्ष होने में जरासा भी भ्रम होता नहीं। ।।५।।

लाखां ग्यान आगला तोलर ।। आगी समझ बतावे ।।
अेकी अरथ इसो ले डारे ।। किसकुंई अर्थ न आवे ।। ६ ।।

वह ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति के वेद,शास्त्र,पुराण के लाखों ज्ञान तौलता और वह इस माया के ज्ञान के परे समझ बताता। वह एकाद वाक्य ऐसा बोलता की उसका अर्थ वेद के, शास्त्रों के,पुराणों के प्रविण ज्ञानी को भी आता नहीं। ।।६।।

दाणू देव गोडयो बोहोतर ।। प्रचा अेई दे भाई ।।

अणंद ब्रम्ह को ग्यान पूछियां ।। याने खबर न काई ।। ७ ।।

यहाँ संसार में राक्षस,देव,मदारी भरपूर है। वह सभी माया के बडे–बडे चमत्कार करते,परंतु ऐसे चमत्कार करनेवालो को आनंद ब्रम्ह का ज्ञान पूछा तो जरासा भी बताते आता नहीं। ।।७।।

बेद भेद दोनू जग माही ।। ग्यानी अर्थ बतावे ।।
छुछम बेद नाव ने:अंछर ।। देव ग्यानी नहीं पावे ।। ८ ।।

वेद याने ब्रम्हा,भेद याने शिव,लबेद याने शक्ति और नवविद्या याने विष्णु इनके ज्ञानी जगत में ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनके देश का भेद जानते,परंतु सुक्ष्म भेद याने आनंद पद का भेद जानते नहीं। ।। ८ ।।

के सुखराम झूट सो प्रचा ।। मत रीजो नर कोई ।।
उलटर नांव चड़े सो साचो ।। तत्त सत्त सुण होई ।। ९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी स्त्री–पुरुषों को कहते है,कि ब्रम्हा,विष्णु,महादेव, शक्ति और उनके संतो ने किए हुए सभी माया के पर्चे आनंद ब्रम्ह को पहुचने के लिए झूठे है। इसके लिए उस में कोई खुश होके अटको मत। सतगुरु घट में उलट के गढपर चढा देते वह पर्चा तत्त का सच्चा पर्चा है। ।।९।।

७२

।। पदराग शब्द ।।

बांदा तीन भक्त कहू तोई
बांदा तीन भक्त कहू तोई ।।
सुर्गुण निर्गुण आनंद पद की ।। यारा भेद नियारा होई ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज इस पद में बांदा एवंम जगत के लोगों को सगुण क्या, निर्गुण क्या तथा आनंदपद क्या इन तीनों का भेद अलग,अलग है और मार्ग भी अलग अलग है यह बता रहे है। ।।टेर।।

जोगारंभ जप तप सिवरण ।। कर्णी कुछ भी होई ।।
तब लग निर्गुण भक्ति नाही ।। सुर्गुण वा कहुं तोई ।। १ ।।

सगुण भक्ति के बहुत मार्ग है। सगुण भक्ति याने जिसमें तीन गुण है। ब्रम्हा का रजोगुण, विष्णु का सतोगुण तथा शंकर का तमोगुण इसे सगुण भक्ति कहते है। इसकी पहुँच आकाश तक है। सगुण भक्ति में जोगारंभ,जप,तप,सुमिरण तथा ब्रम्हा का सांख्ययोग, विष्णु की नवद्या भक्ति,महादेव का हटयोग,पवनयोग,तीर्थ,व्रत,उपवास,मुद्रा साधना गायत्री की साधना करना यह सब आते है। ये सब विधि करने से उनकी पहुँच हद तक ही रहती है। इसके अलावा पाताल से लेके ओअम तक याने ५२ अक्षरों के आधार से बाहर के साँस में मूलद्वार से जो साँस भृगुटी में चढाते वह सब सगुण भक्ति ही है। इस

देह के,मन के और तीन गुणों के आधार से जो भक्ति की जाती उसे सगुण भक्ति कहते है। यहाँ तक निर्गुण की भक्ति नहीं ।।१।।

निर्गुण भक्त तका सुण कहीये ।। तत्त पीछाणे सोई ।।
निर्भे हुवा भ्रम सब भागा ।। सांसो सोग न कोई ।। २ ।।

निर्गुण भक्ति के दो मार्ग है ।

१) तत्त ब्रम्ह पहचानना–मैं ही ब्रम्ह हूँ ,मैं माया नहीं,मैं=आत्मब्रम्ह हूँ,आत्मब्रम्ह याने ५ आत्मा,मन,ब्रम्ह ऐसा है परंतु यह तत्त पहचानेवाले ५ आत्मा और मन ,मैं हूँ ऐसा मानते नहीं। मैं याने सिर्फ ब्रम्ह है(०)ऐसा मानते है और ब्रम्ह मरता नहीं ऐसा ब्रम्हज्ञान उनको होते रहता इसलिये मरने का भय नहीं। मैं ब्रम्ह हूँ,मैं माया नहीं इसलिए ब्रम्ह और माया ऐसा भ्रम रहता नहीं। कोई मर गया उसका दु:ख इस साधक को होता नहीं। वह यह समझता की,मेरे में जैसा ब्रम्ह है वैसा ही जिसने शरीर छोडा उसमें भी वही ब्रम्ह है। ब्रम्ह मरता नहीं। वह कल भी था,आज भी है और कल भी रहेगा। ऐसा कोई समय नहीं था की वह नहीं था और ऐसा कोई समय नहीं रहेगा की वह नहीं रहेगा शरीर याने वह नहीं,इसलिए मरे हुए की फिक्र या दु:ख ब्रम्हज्ञानी को होती नहीं ऐसी एक निर्गुण की भक्ति है। ।।२।।

अेक निर्गुण अंग दूसरो कहीये ।। जे ग्यानी कोई पावे ।।
सोहं जाप अजपो जपके ।। दसवे द्वार लग जावे ।।३।।

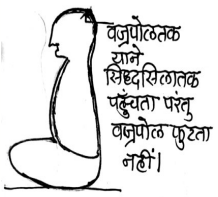

दुसरी निर्गुण की भक्ति कोई ज्ञानी ही पाता है। यह ब्रम्हज्ञानी सोहं जाप अजप्पा जपके बंकनाल के रास्ते से वज्रपोल तक याने सिद्धसिला तक पहुँचते। उनके सोहं जाप अजप्पा से वज्रपोल फुटता नहीं इसलिए दसवाँद्वार खुलता नहीं। इसतरह वज्रपोल तक पहुँचते,उसके आगे सतस्वरुप को पहुँचते नहीं। ।।३।।

अे निर्गुण मे मिले न कोई ।। जायर देखे सारा ।।
करामात कळा कोई पावे ।। ब्रम्ह न हुवे बिचारा ।। ४ ।।

ये उपरोक्त दोनो निर्गुण की भक्ति है परंतु ये निर्गुण में नहीं मिलती,जाकर निर्गुण ब्रम्ह को देख लेंगे परंतु जैसे सतस्वरुप में गया हुआ ब्रम्ह सतस्वरुप जैसा बन जाता वैसे निर्गुण में पहुँचा हुआ ब्रम्ह होनकाल ब्रम्ह के जैसा ब्रम्ह बनता नहीं। निर्गुण ब्रम्ह की भक्ति से निर्गुण भक्ति के भक्त फिर से माया में आएँगे याने गर्भ में आएँगे,करामाती रहेंगे। पर्चे चमत्कार के कलाधारी रहेंगे। जैसे–रामचंद्र में करामात प्रगट थी उस करामात से रावण का वध किया। कृष्ण में करामात प्रगट थी उसने कंस का वध किया ऐसे ये कलाधारी बनेंगे परंतु निर्गुण ब्रम्ह सरीखे ब्रम्ह बनेंगे नहीं।

(जीव से ने:अंछर झिना है इसलिए ये जीव ने:अंछरस्वरुप बन जाता और होनकाल ये

जीव से जड है इसलिए जीव होनकाल स्वरुप नहीं बनता।) ।।४।।

आनंद पद की भक्त बताऊँ ।। प्रथम तो मत आवे ।।
ग्यान ध्यान हद का गुरू सारा ।। से सब ही छीटकावे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बताते है की,जिस जीव को आनंदपद की भक्ति धारन करनी है,उस जीव की प्रथम मती(बुध्दि)ऐसी होगी की वह ज्ञान(वेद),ध्यान(योग)और हद के गुरु तथा जप,तप,तीर्थ,व्रत,सत,दान,पुण्य,धर्म,विष्णु की भक्ति,शक्ति की भक्ति, मुद्रा यह सब छोड देगा। यह सभी हद में की क्रिया है, यह सभी माया है,यह आनंद पद को पहुँचनेवाले नहीं ऐसी समझ बनेंगी। ।।५।।

सतगुरू ढूंढ सरण ले जाई ।। ज्हाँ नाव कळा घट जागे ।।
राज जोग वो कहिये जग मे ।। बिन करणी धुन्न लागे ।। ६ ।।

संसार में वे सतगुरु की खोज करके सतगुरु शरण लेंगे।

खोज कैसे करते–

सतगुरु यह माया का ज्ञान बोल रहे है क्या?या ब्रम्ह का ज्ञान बोल रहे क्या?या फिर इनसे भी अलग उस मालिक का(परमात्मा का)ज्ञान बता रहे है क्या?माया और ब्रम्ह का ज्ञान उन्हें पुरी तरह से है क्या?उन्हें परमात्मा मिला है क्या?वह खुद अनुभव किया हुआ,आँखों से देखा हुआ ज्ञान बताते है या किसी दूसरे का ज्ञान सुनके शिष्य को बताते?वह आवागमन मिटाने की भाषा बोलते क्या?मुझे परममोक्ष जितेजी मिला देंगे या नहीं?ऐसे सतगुरु कि वह खोज करता। सतगुरु भी कौन से कहोगे तो मुखसे सतगुरु कहने से या स्वभाव अच्छा रहने से या फिर पर्चे चमत्कार करने वाले सतगुरु होते नहीं। सतगुरु तो वही है,जिसके संग से शिष्य में कोई भी भ्रम रहता नहीं और उस सतगुरु से ने:अंछरी संत निपजते याने उनके संग से शिष्य के घट में नाम जागृत हो जाता। ऐसे सतगुरु को ढूँढकर उनकी शरण लेंगे और ऐसे सतगुरु को निजमन देंगे तब ही सतगुरु की दया होगी और घट में वह सत्ता प्रगट होगी।

सतगुरु कैसे होते,

सतगुरु के रोम–रोम में वह परमात्मा विराजमान है ऐसे सतगुरु से प्रीति आनी चाहिए। जैसे इस जीव ने पारब्रम्ह में ५ आत्मा के सुखों के लिए इन सुखों से प्रीती की तब परमात्मा ने यह सृष्टि बनाई। वैसेही प्रीती सतगुरु से करोंगे याने हंस के उर में से सतगुरु को सतस्वरुप देखोगे तब शिष्य/हंस में ने: अंछर प्रगट होगा।

जो इस होनकाल का राजा है। ऐसे राजा की सत्ता इस घट में कंठस्थान पर प्रगट होगी और यह ने:अंछर राजा को प्रगट होने के लिये कोई क्रिया–करणी करने की जरुरत नहीं। यह ने:अंछर राजा घट में प्रगट होता तब एक–एक माया को छाटने जाता और जितेजी जीव का परममोक्ष होता। यह राजा सदा के लिये काल का भय मिटाकर महासुखी बना

देता ऐसा यह राजयोग है ।।।६।।

फाड़ पीठ चडे. आकासा ।। फक्त हंस संग लीयो ।।
काया पाँच संग जीव रेतो ।। सो अब न्यारो कीयो ।। ७ ।।

ने:अंछर इस जीव को ले के पीठ फाड्कर पीठ की २१ मणियों को छेदकर ब्रम्हांड में जाता तब सिर्फ हंस को साथ में लेकर चढ जाता है। यह जीव आदि अनादि से पाँच विषयों के साथ याने ५आत्मा के साथ रहता था। उन पाँच विषयो से(५ आत्मा से)इस राजयोग ने(ने:अंछर ने)जीव को अलग कर दिया। जिस माया(पाँच विषयों)के कारण यह जीव महादु:ख भोगता था ऐसे माया में से इस जीव को निकालकर दसवेद्वार पर पहुँचा दिया। ।।७।।

आणंद पद की सता कहीजे ।। इण संग जो जन होई ।।
ओर जोग अटक्या दर्वाजे ।। ओ नहीं अटके कोई ।। ८ ।।

आनंदपद की सत्ता = ने:अंछर = सतनाम
यह आनंदपद की सत्ता जिनके शरीर में प्रगट होती है वह जन(संत)होते है।
–संत को कोण जानता?ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती,३३ करोड देवता,१४ कोटी यमदूत जो होनकाल का मालिक है,ऐसे सतस्वरुप की सत्ता जिसके घट में आती है(प्रगट होती है) ऐसे संत को होनकाल में की कोई भी माया ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,पारब्रम्ह,इच्छा कुछ भी नहीं करते। यह संत किसीसे अटकता नहीं और ना ही उनके आड कोई आता है उलटा यह त्रिगुणी माया और होनकाल ब्रम्ह धुजते और इनके दर्शन की चाहना करते। दूसरे सभी योग ओअम, सोहम जाप अजप्पा यह सभी दसवेद्वार पर जाके अटक जाते क्योंकी,इनकी पहुँचही वहाँ तक है,जहाँ से वे आये वही रुकेंगे। जैसे ओअम–भृगुटी,या ज्यादासे–ज्यादा १००० पंखुड्यिों के कमल–तक सोहम पारब्रम्हतक परंतु ने:अंछर यह दसवेद्वार के बाहर आता इसलिए दसवाद्वार खोलके हंस को ले जाता और बाकी सब दसवेद्वार पर अटक जाते। जैसे राजा गढ से,जगत में से एखाद प्रजा को राजा करने के लिये गढ पर ले जाने निकला तो उसे राजदरबार के लोग अटका नहीं पाते वैसेही जब ने:अंछर हंस को ले जाता तब इस सत्ता को कोई भी अटकाते नहीं और ना ही वो किसीसे अटकाया जाता। ।।८।।

राजजोग ओ कहीये भाई ।। ओर जोग सब लोई ।।
बादस्याहा पास रेत नहीं पहुंचे ।। भूप मीले कहुं तोई ।। ९ ।।

इसको राजयोग कहते। राजयोग याने राजा के साथ बना हुआ जोग दूसरे सभी योग रयत (प्रजा)के जैसे है। कैवल्य योग यह सभी योगो का राजा है। यह कुदरत कला का योग राजा के समान है और दूसरे योग प्रजा के समान है। राजयोग याने इसमें सदा सुख ही सुख है। हमेशा राजा के जैसा सुख देता ।।९।।

राजयोग

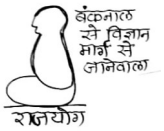

१) ज्ञान–विज्ञान के रास्ते से जानेवाला बंकनाल से विज्ञान मार्ग से जानेवाला ।
२) इसके भक्तिका बीज सतस्वरुप में से आता ।
३) इस राजयोग में यह राजा जीव के साथ की माया छुडाके इसे शुध्द ब्रम्ह बनाके होनकाल के परे जो सतस्वरुप है उसमें पहुँचाता।
४) सतस्वरुप यह राजयोग है ।
५) इस राजयोग में ने:अंछर घट में प्रगट होते ही इस जीव को ब्रम्हंड में ले जाते और फिर से निचे आता नहीं ।
६) राजयोग में सत्तासमाधि लगती ।

प्रजायोग

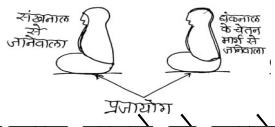

१) होनकाल के ज्ञान रास्ते से जानेवाला भृगुटीवाला संखनाल और सोहम जाप अजप्पा बंकनाल के चेतन मार्ग से जानेवाला ।
२) इसके भक्ति का बीज पिंड में से याने होनकाल में का ही है ।
३) प्रजायोग में जीव के साथ यह माया जैसे के वैसेही रहती। इस कारण सिध्दसिला फुटती नहीं और यह जीव होनकाल में ही अटकते।
४) प्रजायोग–ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनकी भक्ति,योग,मुद्रा,वेदोंमें की क्रिया–करणी यह सब प्रजायोग है ।
५) प्रजायोग सिर्फ कहने के है। यह ऊतारने से ऊतरते और चढने से चढते ।
६) प्रजायोग में सत्तासमाधि नहीं लगती। समाधि खंडीत होती ।

जैसे बादशाहा के पास राजाही जाकर मिलता है,प्रजा बादशाह के पास नहीं पहुँच सकती वैसेही यह ने:अंछर राजा हंस को बादशाह से याने सतस्वरुप से मिलाने का हमारा योग बनाता और उसके दरबार में पहुँचाता। यह ने:अंछर(याने देहधारी सतगुरु)हंस को लेने आता इसलिये इसे राजा कहा है। यही ने:अंछर सतस्वरुप में बादशाहा के सुख देता। जैसे राजा प्रजा को बादशादा से मिलाता वैसेही ने:अंछर हंसो को सतस्वरुप में मिलाता।

दर्वाजा ऊला सब खुल्ले ।। बज्र पोळ लग सोई ।।
राजजोग बिन दसवो कहीये ।। सो नहीं खुल्ले कोई ।। १० ।।

दूसरे सभी योगो से माया के दरवाजे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,२१ स्वर्ग,चिदानंद ब्रम्ह, शिवब्रम्ह,पारब्रम्ह तक याने सिद्धसिला तक सभी दरवाजे खुल जाएँगे परंतु दसवाद्वार राजयोग के सिवा खुलता नहीं। ।।१०।।

के सुखराम भेव बीन जोगी ।। जे आस करे सब जावे ।।
दर्वाजे सूं सब जोग फिरीया ।। आगे जाण न पावे ।। ११ ।।

इसलिए दूसरे योग से दसवेदवार के परे आनंद पद में जाते आता नहीं और वे जोगी दसवेद्वार पर अटक जाते,मतलब राजयोग के सिवा दसवाद्वार खुलता नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,राजयोग के भेद बिना सभी जोगी दसवाद्वार खोलने की

आशा करते और दसवेद्वार तक पहुँचते भी परंतु दसवेद्वार से सभी जोगी वापिस होनकाल में आ जाते और होनकाल में ही अटके रह जाते होनकाल के परे आगे आनंद पद में पहुँचते नहीं। ।। ११ ।।

१३७

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

ग्यानी ग्यान बिचार रूं देखो

ग्यानी ग्यान बिचार रूं देखो ।। क्रता ज्हाँ दूख होई लो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानी,ध्यानिंयों को कहते है कि,पारब्रम्ह होनकाल जो परचे चमत्कार करता है वह माया है,वह साहेब नहीं है यह ज्ञानियों ज्ञान से बिचार कर देखो इसलिए कर्तापद पाया तो भी काल का दु:ख ही है,आनंदपद का सुख नहीं है। ।टेर।

उठत माया बेसत माया ।। माया अंछया होई लो ।।

माया मुख सूं हरफ रटे सो ।। सत्त सब्द नहीं कोई लो ।। १ ।।

उठती है याने जिसकी उत्पत्ती होती है याने जो बनती है तथा बैठती है याने जिसका नाश होता है याने मिटती है वह इच्छा माया है,वह साहेब नहीं है। जो कल भी था,आज भी है और आनेवाले कल मे भी रहेगा,जो स्थिर है, वह माया नहीं,वह साहेब है। मुख से जो शब्द रटते है वह भी माया है,वह सतशब्द नहीं है। ।।१।।

कही ये लखे लखावे माया ।। माया तन मन काया लो ।।

कळा प्रगटे चेहेन माया ।। स्थिर अस्थिर हे सो माया लो ।। २ ।।

जो समझ में आता है वह ज्ञान भी माया ही है तथा जो दुजे को समझाया जाता है वह ज्ञान भी माया ही है। सभी जीवो का शरीर है यह भी माया है। सभी जीवो का मन यह भी माया है। परचे चमत्कारोंकी कला प्रगट करती है ऐसी रिध्दि-सिध्दि यह भी माया है। आकाश,वायू,अग्नी,जल,पृथ्वी यह जैसे उपजते है और नाश होते है ऐसे जो-जो भी अस्थिर है याने जन्मते और मरते वह सभी माया ही है तथा जन्मती नहीं और मरती नहीं परंतु उपजाती है ऐसा स्थिर दिखनेवाला होनकाल पारब्रम्ह भी माया ही है यह साहेब नहीं है,यह ज्ञानियों ज्ञान करके देखो।।२।।

माया हेरे आतो माया ।। सुण ग्यानी क्हूं तोई लो ।।

कळा आण कर कारज सारे ।। सो थिर क्हो किम होई लो ।। ३ ।।

परचे चमत्कार के द्वारा जगत के नर-नारियोंके माया के कारज करता है वह होनकाल पारब्रम्ह भी माया है। होनकाळ पारब्रम्ह स्थिर दिखता परंतु माया के परचे चमत्कार करता याने वह अस्थिर है। सतस्वरुप साहेब समान माया के परचे चमत्कार न करनेवाला ऐसा स्थिर नहीं है। ।।३।।

के सुखराम सदा थिर साहेब ।। करे करावे नाही लो ।।

समझ बिना कहे माया कूँ ।। साहिब जग के माई लो ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,साहेब सदा से स्थिर है,वह होनकाळ पारब्रम्ह समान परचे चमत्कार करता भी नहीं और कराता भी नहीं। ज्ञानी,ध्यानी तथा जगत के नर–नारियोंको ज्ञान न होने के कारण परचे चमत्कार देनेवाले होनकाल पारब्रम्ह को माया न कहते साहेब कहते है उससे मोक्ष मिलेगा यह समझते है। ।।४।।

१६४

।। पदराग धमाल ।।

जन चाय हुवे सो खोज ज्यो हो

जन चाय हुवे सो खोज ज्यो हो ।। यां इतना सूं न्यारो पद जाण ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,जो शब्द सूरत,निरत,मन,चित्त,बुध्दि,श्वास, रंरकार,अनहद,नाद,जींग,अनाद से न्यारा है ऐसे शब्द को माया से न्यारे पद ले जानेवाला शब्द जानो,इस पद की चाहत हो तो उसे खोजो ।।टेर।।

सुरत निर्त मन सूं सो न्यारो ।। चित्त समज सूं जाण ।।
बुध सो अकल श्वास दम आगे ।। संता करो ही पिछाण ।। १ ।।

जो पद सुरत,निरत,मन,चित्त,बुध्दि अक्कल,श्वास इन सब से निराला है वह पद संतो पहचानो। ।।१।।

रंरकार धुन तन मे ऊठे ।। घुरे अनहद जोय ।।
यां सुंही सबद न: केवळ न्यारो ।। खोज प्रख ल्यो सोय ।। २ ।।

रंरकार ध्वनि घट में उठती तथा अनहद ध्वनि घट में घोरती इनसे भी नि केवल शब्द न्यारा है उसे खोज करके एवंम परख के प्राप्त करो । ।।२।।

अनहद परे नाद सो गाजे ।। जिंग सब्द फिर होई ।।
यां सुंही सत्त सबद हे न्यारो ।। कहयां लखे नहीं कोई ।। ३ ।।

अनहद परे नाद की गर्जना होती और नाद की गर्जना के परे जींग शब्द की गर्जना होती इनसे भी सतशब्द निराला है। यह शब्द ज्ञान से समजाने से किसीके समझ में नहीं आता। ।।३।।

अनाद सब्द सब सीस सिरे ।। गाजत हे दिन रात ।।
खोजी हुवे तके नर सुणज्यो ।। ईण सेंई आगी बात ।। ४ ।।

अनाद याने जिसमें ध्वनि नहीं है वह शब्द रंरकार,अनहद,नाद,जींग इन सब शब्द के उपर गरजता है। इस अनाद,अजप्पा शब्द के उपर जो शब्द है उसकी खोज करो। ।।४।।

राम नाम कूं रट उलटीये ।। चड़े हे त्रुगूटी जाय ।।
के सुखराम इसी बिध प्रखो ।। करद सबद कूं माय ।। ५ ।।

रामनाम का रटन कर घट में बकंनाल से हंस उलटकर त्रिगुटी में चढता उस शब्द की परख कर,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि यह बकंनाल से उलटनेवाला शब्द काल कर्म को काटता है। ।।५।।

१८१

|| पदराग बिलावल ||

जोगीयाने ढूंढत जुग भया

जोगीयाने ढूंढत जुग भया || जोगी किणी हन पाया ||
ज्यां देखूं ज्या राज वी || सब के संग माया || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा नर–नारी को कहते है कि,योगी को खोजते–खोजते युगो के युग व्यतीत हो गये परंतु योगी किसीने भी नहीं पाया। जिस जिसने पाया उसने राजा के समान माया के सुख भोगनेवाला और राज चलानेवाला गृहस्थी ही पाया। ||टेर||

करता कूं जोगी क्हेत हे || करता जोगी नाही ||
म्हे देख्या गुरूग्यान मे || सब माया माही || १ ||

जगत के कई ज्ञानी,ध्यानी कर्ता याने होनकाल ब्रम्ह को जोगी कहते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैंने सतस्वरुप गुरुज्ञान में देखा,तो वह जोगी नहीं है याने ज्ञानस्वरुप नहीं है। उस कर्ता में इच्छा से संसार करके सृष्टि रचना करने की वासना है मतलब वह गृहस्थी है याने माया में ही ऐसा दिखा। ||१||

पारब्रम्ह कुं जोगी केत हे || अब नासी न्यारा ||
मे देख्या गुरूग्यान मे || माया मूळ बिचारा || २ ||

जगत में कई ज्ञानी,ध्यानी होनकाल पारब्रम्ह को जोगी कहते। माया के परे अविनाशी ब्रम्ह कहते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैंने सतस्वरुप गुरुज्ञान में देखा तो वह जोगी नहीं है । वह माया का उपज करनेवाला मूल माया है ऐसा दिखा। ||२||

ज्यूं जळ सू सब ऊपजे || बिष इम्रत दोई ||
यूं माया प्रब्रम्ह सूं || परगट कहूँ तोई || ३ ||

जैसे जल से विष और अमृत उत्पन्न होते वैसे पारब्रम्ह से काल के मुख में पहुँचानेवाली पर्चे चमत्कार माया और काल के मुख से तारनेवाली स्थुलमाया उत्पन्न होती है।
इसप्रकार यह पारब्रम्ह जिसे ज्ञानी,ध्यानी माया के परे का अविनाशी कहते,वह माया के उपज का मूल है। वह माया के परे का ज्ञान–विज्ञान स्वरुप का जोगी नहीं है। ||३||

जग मे जोगी कोई नहीं || सारा घर बारी ||
तीबर मद बेराग हे || माया ईध कारी || ४ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जग में जोगी कोई नहीं है। सभी घरबारी याने गृहस्थी है। जग में कई ज्ञानी,ध्यानी, तिब्बर वैरागी को जोगी कहते है,तो कई ज्ञानी ,ध्यानी मद वैरागी को जोगी कहते है परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है तिब्बर जोगी तथा मद जोगी ये दोनो भी जोगी नहीं है। ये माया के भोगी है। तिब्बर तथा मद वैरागी याने क्या है यह देखेंगे?तिब्बर वैरागी यह होनकाल पारब्रम्ह को साहेब समझ

के प्रेम करता और उसके अनुसार सृष्टि निर्मिती और सृष्टि चलाने को लगनेवाले शुभ-शुभ कर्म करता। मद वैरागी-यह होनकाल पारब्रम्ह को माया के परे का ब्रम्ह समझकर उसकी साधना करता और उसको सभी में ज्ञान-विज्ञानरुप में देखता ।

तिब्बर तथा मद वैरागी ये जोगी कैसे नहीं है यह देखेंगे?

तिब्बर और मद वैरागी ये दोनो भी होनकाल पारब्रम्ह की ही भक्ति करते। तिब्बर तथा मद वैरागी होनकाल पारब्रम्ह को ज्ञान विज्ञान स्वरुपी पकडते। ज्ञान-विज्ञान से ज्ञान निपजता,सृष्टि नहीं निपजती इसलिए यह जोगी है ऐसा समझते परंतु सतस्वरुप गुरुज्ञान से देखने पर समजता की होनकाल पारब्रम्ह यह वैरागी नहीं है,यह पक्का गृहस्थी है। इसके उर में इच्छा पत्नि के साथ भोग करके ३ लोक १४ भवन की रचना करने की वासना थी और है। यह ज्ञान-विज्ञान स्वरुपी नहीं है,इसमें सृष्टि निर्मिती का बीज है इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,पारब्रम्ह यह जोगी नहीं है तो पारब्रम्ह की भक्ति करनेवाले तिब्बर तथा मद वैरागी जोगी कैसे बनेंगे?जैसे पारब्रम्ह यह गृहस्थी है वैसे ये दोनो भी तिब्बर तथा मद वैरागी ये गृहस्थी ही है ।।।४।।

केवळ ग्यान बेराग हे ।। माया सें बारे ।।
सो जोगी सुखराम के ।। अेसी मत धारे ।।५।।

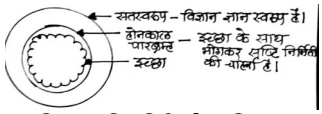

कैवल्य ज्ञान वैराग्य यही त्रिगुणी माया और होनकाल पारब्रम्ह इस माया के बाहर है। वह ज्ञान-विज्ञान रुप में है उसमें ग्रहस्थी बनके सृष्टि निर्मिती कि वासना नहीं है ऐसे जोगी की विधि जो धारन करेगा वही जोगी है, वही माया के परे है। जगत में दो पुरुष है ,एक पुरुष ग्रहस्थी है और दुजा वेदी बैरागी है।

पुरुष के देह मे पत्नी के साथ भोग करके पुत्र,पुत्री जन्माने का बीज है। मतलब गृहस्थी से पुत्र,पुत्री निपजते, ज्ञान नही निपजता। इसलिये इसे गृहस्थी कहते जोगी नही कहते।

ऐसाही होनकाल पारब्रम्ह है। इसे इच्छा इस स्त्री के साथ भोग भोगके सृष्टी निर्मिती की कुद्रती ही प्रकृती है। इसीसे सभी जीव तथा ३ लोक १४ भवन यह सृष्टी बनती।

इसलिये होनकाल पारब्रम्ह यह गृहस्थी है। जोगी नही है। इसलिये पारब्रम्ह के तिब्बर तथा मद वैरागी यह जोगी नही है,यह गृहस्थी है।

वैरागी पुरुष के देह मे वेद के ज्ञान का बीज है। इससे ज्ञान निपजता। पुत्र,पुत्री नही निपजते। इसलिये यह जोगी है। गृहस्थी नही है।

ऐसाही केवल ज्ञान विज्ञान यह ज्ञान-विज्ञान निपजता। इसमे इच्छा इस स्त्रीके साथ भोग भोगने की कुद्रती ही प्रकृती ही नही है। इसलिये इससे जीव उत्पन्न नही होते तथा ३ लोक १४ भवन यह सृष्टी नही बनती।

इसलिये यह बैरागी है। गृहस्थी नही है। इसलिये कैवल्य ज्ञान विज्ञान के भक्त जोगी है,गृहस्थी नही है।

।५।

१८५

|| पदराग बिलावल ||

जुग मे जोगी कौ नहीं

जुग मे जोगी कौ नहीं || सब दोजग धारी ||

कै तो जप तप कर रह्या || कोई इंद्र्या मारी ||टेर||

परात्परी से दो पद है ।

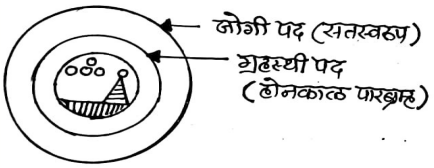

जोगी का पद(सतस्वरुप पद)	ग्रहस्थी का पद(होनकाल पद)
१)यह ज्ञान-विज्ञान के सुख का पद है। २)यहाँ जीव को जो तृप्त सुख चाहिए वह सभी उपलब्ध है। ३)जोगी का पद बैराग्य याने मोहरहित स्थिती का पद है। इसमे माया की उपज नहीं है।	१) यह पद दोजख याने काल के जुलुम से भरा हुआ पद है। २)यहाँ माया के कृत्रिम सुख है तथा जीव को एक भी नहीं चाहिए ऐसे दु:ख महादु:ख है। ३)ग्रहस्थी का पद याने संसारी पद है। इससे माया की उपज है।

ऐसे जोगी को धारन किया हुआ जोगी कोई भी नहीं। जगत के सभी साधक ग्रहस्थी याने होनकाल को जोगी समझके धारन करते इसलिए सभी दोजख धारी है।

दोजख याने क्या?

यह काल के जुलूम से भरा हुआ पद है। जगत में सिर्फ नरक में ही काल की यातना पड्ती ऐसे सभी समझते। नरक का मालिक यमराज है,जिसमें ८४ नरक है,यह छोटा दोजख है। बडा दोजख याने३लोक १४भवन,३ ब्रम्ह के १३ लोक(महामाया,प्रकृती,ज्योती, अजर,आनंद,वजर,इखर,अनहद,निरंजन,निराकार,शिवब्रम्ह,महाशुन्य,पारब्रम्ह)इतना है।बडे दोजख का मालिक महाकाल है। उसका नाम होनकाल पारब्रम्ह है। ये महाप्रलय में यमराज को भी खाता है याने काल कठडी है। ऐसे दोजख के मालिक के भक्त को दोजख धारी कहते है। जगत में कोई जप करते,तप करते याने ५ आत्मा, मन इनको तपाते। इंद्रियोंको जो सुख चाहिए वह देते नहीं। इसतरह ५ आत्मा,मन तपाते,इसकारण जीव को उसका ताप सहना पड्ता इसे तप करना ऐसे कहते। कोई इंद्रियाँ मारते,कोई वेदों में बताई हुई करणी या उपासना करते। जप,तप,इंद्रियाँ मारना इनकी उपज वेदों में से है। वेद ब्रम्हा ने बनाये,ब्रम्हा शक्ति से बना,शक्ति महतत्व से बनी,महतत्व इच्छा और होनकाल से बना। इसलिए जप करनेवाले, तप करनेवाले,इंद्रियाँ मारनेवाले यह होनकाल के परे नहीं जाते,यह तो होनकाल में ही बैठे

होनकाल और इच्छा
↓
महतत्व
↓
शक्ति
↓
ब्रम्हा
↓
वेद
↓
जप,तप,करणी

रहते है याने काल कोठडी में बैठे रहते है। ।।टेर।।

क्रणी करम ऊपासना ।। सबके मन भावे ।।
निराकार करतार सूं ।। मिलणो सब चावे ।।१।।

जगत के लोगोंको वेदों में दिए हुए कर्म करना,याने जप,तप,तिर्थ,यज्ञ,पूजा करना,उपासना करना भाँता है। जीव को जो माया के सुख चाहिए याने मन के,५ आत्मा के सुख चाहिए वे सुखोंके मार्ग वेदों में दिये है इसलिए जगत के लोगोंको वेदों की भक्ति करना पसंद आती है। वेदो की भक्ति याने माया की भक्ति है। ऐसी भक्ति करके यह लोग निराकार कर्तार को याने सतस्वरुप जोगी को जिसे आकार नहीं,रंग,रुप,वर्ण नहीं और जो विज्ञानी हैं,सभी सुखों का मालिक है उसे मिलना चाहते। यह विज्ञानी कर्ता माया की साधना करनेसे मिलेगा यह कैसे संभव है। ।।१।।

सास उसासां रट रह्यां ।। अजपे मन लागो ।।
निस दिन पचतां निसरे ।। सांसो नहि भागो ।।२।।

कई साधक साँस-साँस में रटते याने ओअम जोग की साधना करते। ओअम यह बाहर की साँस है। इच्छा से ओअ्म की उत्पत्ती हुई है। ओअम की साधना करनेवाले मूलद्वार से पूरब के संखनाल से साँस भृगुटी में चढाते। भृगुटी में टिके रहने के लिए उनको साँस पर सुरत,मन लगाना पडता। सुरत साँस पर से इधर उधर हुई की साँस निचे आती और साधना टुटती। उनको रात-दिन भृगुटी में समाधि टिके रहने के लिए पचके हैराण होना पडता। इतना रात-दिन पचने के बाद भी ओअम के साधक को आवागमन के चक्कर में न आने की फिकीर,चिंता जाती नहीं,यम का भय निकलता नहीं। इस संत को निराकार कर्तार मिलता नहीं। काल कोठडी में से निकलके होनकाल के परे पहुँचेंगे क्या?यह शंका बनी रहती। ।।२।।

संख नाळ होय ऊतरे ।। बंक नाळ चडावे ।।
ध्यान धरे जाय सून्न में ।। कर्ता कूं गावे ।।३।।

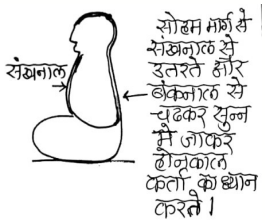

कुछ साधक सोहम अजप्पा जपते है और वे संखनाल से उतरते और बंकनाल से चढकर सुन्न में जाके होनकाल कर्ता का ध्यान करते। होनकाल यह काल है। उसका घर ३ लोक १४ भवन और ३ ब्रम्ह के १३ लोक इतना है। कर्ता को भजा याने काल को भजा फिर वह साधक कर्ता याने काल के बाहर कैसे निकलेगा?ऐसे उन्होंने दोजख के मालिक को ही धारन किया है याने दोजख में ही बैठे है । ।।३।।

तीन लोक करतार कूं ।। सब ही जस देवे ।।
जोगी की कळ ना लखे ।। करमी कूं सेवे ।।४।।

३ लोक १४ भवन याने सभी लोक कर्तार को यश देते है याने कर्तार को जोगी समझते

है। कर्तार को माया के परे का पूरा ब्रम्ह समझके उसकी भक्ति करते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह तो कर्मी है। जीव को जोगी की कला मालूम न होने के कारण जीव कर्मी की ही सेवा करते।

कर्तार कर्मी कैसा?

होनकाल पारब्रम्ह की पत्नि इच्छा है। होनकाल पारब्रम्ह के भोगी कर्म से ही इच्छा से निराकारी एवम् साकारी सृष्टि बनी। ऐसा होनकाल पारब्रम्ह यह कर्मी है। ऐसे कर्मी की जगत सेवा करते,जो खुद दोजख का मालिक है । ।।४।।

ने: करमी ब्रम्ह ग्यान हे ।। करमी मत्त सारा ।।
जोगी तो सुखराम के ।। दोण्या से न्यारा ।। ५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते की,जगत में ने:कर्मी ब्रम्हज्ञानी है। ब्रम्हज्ञानी होनकाल पारब्रम्ह की साधना करता। होनकाल यह ब्रम्ह है,ब्रम्ह को कर्म लगते नही इसलिए ब्रम्हज्ञानी को क्रियेमान कर्म लगते नही इसतरह ब्रम्हज्ञानी ने:कर्मी है। होनकाल पारब्रम्ह यह इच्छा से संसार करता इसकारण मूल में ही वह जोगी नहीं याने ने:कर्मी ब्रम्हज्ञानी यह भी जोगी नहीं। होनकाल ब्रम्ह की पत्नी इच्छा है, इच्छा यह माया है। इससे सभी कर्म उपजते। इस इच्छा से उत्पन्न हुयेवे ब्रम्हा,विष्णु,महेश,शक्ति इनके भक्ति से क्रियेमान कर्म बनते। ऐसे यह सभी ब्रम्हज्ञान छोड्के बाकी सभी होनकाल में के कर्मी मत है। यह कर्मी भी जोगी नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते की,जगत में ने:कर्मी याने ब्रम्हज्ञानी भी जोगी नहीं है। जप,तप,उपासना करनेवाले कर्मी भी जोगी नहीं। जो माया से अलग,माया के परे है याने होनकाल ब्रम्ह और माया इन दोनो के परे सतस्वरुप विज्ञानी है,वही जोगी है बाकी सभी संसारी है,ग्रहस्थी है । ।।५।।

२०९

।। पदराग निसाणी ।।

कुण हे रे बाबा कुण हे रे बाबा
कुण हे रे बाबा कुण हे रे बाबा ।। कुण हे कुण हे ओ ।।
तीन लोक मे राच रहयो हे ।। अेसी वां की धुन हे ओ ।। टेर ।।

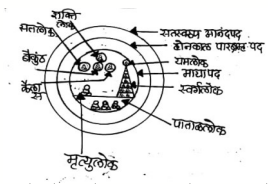

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,साधू,सिध्द, अवतार तथा देवताओं को पूछ रहे है की,३ लोक १४ भवन तथा चारो पुरियोंमे सभी ओर छाया हुआ है तथा ३ लोक १४ भवन के हर कोने में उसके छाने की गर्जना(गाजाबाजा)हो रही है वह बाबा कौन है?।।टेर।।

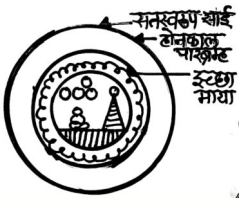

कोई कहे अे ओ जीव बिचारो ।। कोई कहे ओ सांई हो ।।
कोई कहे ओ ब्रम्ह आप हे ।। पूर रहयो सब मांई हो ।। १ ।।

कोई ज्ञानी,ध्यानी कहते है कि,वह,जीव याने त्रिगुणी माया के गुण का

याने स्वरुप का है और सारे जगत में व्याप्त है,तो कोई ज्ञानी,ध्यानी कहते है की,वह सतस्वरुप साँई के गुण का याने स्वरुप का है और सभी जगत में व्याप्त है तथा कोई ज्ञानी,ध्यानी कहते है की,वह होनकाल पारब्रम्ह के गुण का याने स्वरुप का है और सारे जगत में व्याप्त है। ।।१।।

साहेब व्हे तो क्यूं दु:ख पावे ।। ब्रम्ह ग्रभ क्यूं आयो हे ।।
जीव हूवे तो फिर क्यूँ उपजे ।। जां कूं जंवरे खायो हे ।। २ ।।

इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज,१) जिसने उसे साहेब गुण का संबोधा है ऐसे ज्ञानी,ध्यानियोंको पूछ रहे है की,वह अगर साहेब गुण का है तो वह काल के दु:ख क्यों पा रहा?क्योंकी साहेब तो काल के परे है तो साहेब गुण की कोई भी वस्तु काल के परे रहेगी।

२)जिसने उसे पारब्रम्ह संबोधा है ऐसे ज्ञानी,ध्यानियोंको आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पूछ्ते है की,अगर वह पारब्रम्ह गुण का है तो उसने माँ के गर्भ में आकर माया का शरीर कैसे धारन किया?क्योंकी शरीर धारन करने के लिए जो माया लगती वह माया याने कर्म पारब्रम्ह के साथ कभी नहीं रहते। वह माया याने कर्म ५ आत्मा के साथ रहते फिर कोरे पारब्रम्ह के गुण की वस्तु गर्भ में कैसे आयी?

३)जिसने उसे त्रिगुणी मायाके गुण का संबोधा उन ज्ञानियोंको आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पूछ रहे है की,अगर वह त्रिगुणी माया के गुण का याने स्वरुप का है तो वह माया जंवरा याने यम खाता,खाने के बाद उपजने लायक के गुण की नहीं रहती ऐसी जम ने खाने के बाद न उपजने गुण की वस्तु फिर कैसे उपजी?।।२।।

नहीं ओ जीव ब्रम्ह नहीं साहेब ।। केतां कछू न आवे हे ।।
पांचूँ बास सदा उर यांके ।। भंवता यूं जुग जावे हे ।। ३ ।।

इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानीयों को कह रहे है की,वह ना तो जीव याने कोरे माया स्वरुप है,ना तो ब्रम्ह याने कोरे पारब्रम्ह स्वरुप है और ना तो साहेब स्वरुप है। इसकारण इन तीनो के गुण के आधार पर इसे क्या कहना यह कुछ भी कहते नहीं बनता परंतु ज्ञानसे यह समझता की,इसके हृदय में याने निजमन में शब्द, स्पर्श,रुप,रस,गंध की पाँचो वासना सदा वास करती। इन पाँचो विषयो के सुखों के तृप्ती के लिए वह ३ लोक १४ भवन तथा ४ पुरीयो में अखंडीत भ्रमन कर रहा है। वह विषय तृप्ती के आशा में काल का महादु:ख भोगते हुए युगों के पिछे युग बिता रहा है।३।

ग्यानी ध्यानी साध सिधाने ।। ब्रम्हा बोहो बिध गायो हे ।।
अर्जुन किसन व्यास कण चिन्ह्यो ।। अर्था मे नहीं आयो हे ।। ४ ।।

ज्ञानी (नारद, सुत, पाराशर), ध्यानी (महादेव,पातंजली), साध (सुकदेव),सिध्द(कपिल, गोरखनाथ)तथा ब्रम्हा ने इसके गुणो के आधार से अलग-अलग नाम में संबोधने की

कोशीश की है तथा कृष्ण और अर्जुन ने गीता में तथा वेदव्यास ने १८ पुराणो में अलग अलग नाम में संबोधने की कोशिश की है परंतु उसके गुणोनुसार उसका नाम होनकाली साधू,सिध्द,देवता,अवतार आदि किसीके पकड में नहीं आया। ।।४।।

अदभुत खेल अचंभा भारी ।। आद अंत ओ होइ हो ।।
समे भाव माया देहे धारे ।। सुख दु:ख लारे दोई हो ।। ५ ।।

यह अद्भुत खेल है,इसका बड़ा भारी आश्चर्य है,आदि से लेकर अंत तक यह है फिर भी इसे क्या कहाँ जाए?यह किसीके समझ में नहीं बैठता। उसमें यह गुण है की इसे आदि से महासुखोंकी चाहना है और दु:ख उसे सपने में भी नहीं चाहिए। ऐसा आद अंत तक का याने अमर होने के पश्चात भी समय देखकर माया के शरीर धारन करता और जनम-मरन के दु:ख से भयभीत बना रहता। ।।५।।

म्हारस ग्यान आनंद पद उपजे ।। जब ओ निर्भे होई हो ।।
क्हे सुखराम ज्हाँ लग सब ने ।। करता लग दु:ख ओइ हो ।। ६ ।।

इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इसे क्या नाम देना इस खोज में ज्ञानी,ध्यानी,साधू,सिध्द,देवता तथा अवतार अटके रहते। उसका नाम खोजने के बजाय उसे काल मुक्त सुख चाहिए और वह सुख उसे कहाँ प्राप्त होंगे यह सतज्ञान से सभी ने ध्यान में लाना चाहिए। इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी, देवता तथा अवतारो को कहते है की,वह अमर है,उसे आदि से महासुखोंकी चाहना है उसके साथ मे मन और ५ आत्मा यह माया है। इसकारण उसके हृदय में मायावी ५ सुखोंकी चाहना बनी रहती परंतु उसे दु:खवाले सुख कभी नहीं चाहिए रहते। उसे कोरे सुखके महारस चाहिए रहते। यह ५ वासना के सुखो के परे का महारस,घट मे आनंदपद उपजने के बाद विज्ञान-ज्ञान से मिलता। यह आनंदपद मिलनेपर जन्मना-मरना सदा के लिए मिटता। जिससे वह निर्भय याने काल के दु:खो से भयरहीत बनता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी,साधू ,सिध्दों को कहते है की,हंसने होनकाल का सबसे बडा कर्तार का पद भी पा लिया,तो भी उसका गर्भ में आना मतलब आवागवन से छुट्कारा नहीं होता। गर्भ में आना हंस का तभी छुट्टा जब उसे आनंदपद प्राप्त होता। ।।६।।

२३२

|| पदराग जोग धनाश्री ||

माया हेरे आतो माया नीरबख
माया हेरे आतो माया नीरबख ।। ता मे फेर न फारा रे लो ।।टेर।।

परचे चमत्कार यह माया है,यह तत्त नहीं है। यह तत्त के रास्ते में दावपेंच डाल के अंधा-धुंद लुटनेवाली जबर माया है। परचे चमत्कार यह माया ही है, यह तत्त नहीं है इसमें कोई फेर फार नहीं है। ।।टेर।।

थिर अस्थिर सो सब ही माया ।। सुण ग्यानी कहुँ तोई लो ।।
कळा आण कर कारज सारे ।। सो थिर कोहो किम होई लो ।।१।।

स्थिर याने होनकाल पारब्रम्ह और अस्थिर याने त्रिगुणी माया यह दोनो भी माया है,ये ज्ञानी तुम समझो। स्थिर याने होनकाल पारब्रम्ह और अस्थिर याने त्रिगुणीमाया ये अष्ट सिध्दी और नौ रिध्दी के परचे कर जगत के माया के कारज सारती। ये जगत के तत्त के कारज कभी नहीं सारती। इसलिए परचे चमत्कार यह माया है। यह परचे चमत्कार स्थिर होनकाल पारब्रम्ह से भी प्रगटे रहे तो भी वह माया है वह काल से मुक्त करनेवाली ब्रम्हकला नहीं है फिर यह माया ब्रम्हकला समान कैसे स्थिर हुई ? ।।१।।

बड़ो गेल सुं इचरज होवो ।। भारी सुं बोहो भारी लो ।।
मायॉ हे रे ऊं साहेब नाही ।। प्रगट्यो आण बिचारी लो ।।२।।

अचंबित करनेवाले भारी से भारी परचे चमत्कार भी प्रगटे,तो भी वह माया ही है,वह साहेब नहीं है यह ज्ञानिंयों समझो। ।।२।।

उलट चडे सो चेतन माया ।। ब्रम्ह के जोडे माया लो ।।
सत्त लोग ही माया पुंचे ।। बिन माया कुण आया लो ।।३।।

उलटकर याने मूलद्वार से जो भृगुटी में चढती है वह चेतन माया है। वह माया होनकाल पारब्रम्ह की जोडायत याने पत्नि है। होनकाल पारब्रम्ह और चेतन माया इन दोनो ने मिलके माया की सृष्टि बनाई। उलट चढनेवाली माया नहीं है तो उससे सृष्टि कैसे निपजी?उससे सृष्टि का पसारा हुआ इसका अर्थ वह बैरागन नहीं है,माया है। यह उलट चढनेवाली चेतन माया होनकाल पारब्रम्ह के सतलोक तक पहुँचती। होनकाल पारब्रम्ह के सतलोक के परे सतस्वरुप तत्त में नहीं पहुँचती। इसप्रकार चेतनमाया और होनकाल पारब्रम्ह दोनो माया है। इन दोनो ने सृष्टि का पसारा किया और सृष्टि में परचे चमत्कार इस माया के रुप में जगत में खुद की सत्ता की इसीप्रकार से बिना माया का कोई भी आया नही है। ।।३।।

कह सुखराम ब्रम्ह हुवे माया ।। माया ब्रम्ह हुवे सोई लो ।।
सत्त शब्द मे जाय मिले हे ।। जब नहीं पलटे कोई लो ।।४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इसीप्रकार जीव यह आदि में ब्रम्ह था और इन माया ब्रम्ह के संग आकर कभी ब्रम्ह का माया बन गया,तो कभी माया का ब्रम्ह बन गया। इसप्रकार परचे चमत्कार में अटककर कभी ब्रम्ह का माया बना और कभी माया का ब्रम्ह बना और इसी चक्कर में अटके रहा और इनके सत्ता से यह ब्रम्ह का ब्रम्ह कभी नहीं बना। यह ब्रम्ह का ब्रम्ह सदा तब ही बनता जब यह ब्रम्ह होनकाल पारब्रम्ह और त्रिगुणी माया के परचे चमत्कार त्यागकर सतशब्द धारन करता और सतशब्द में जाकर मिलता। एकबार सतशब्द में मिलने के बाद वापीस यह ब्रम्ह कभी माया नहीं बनता,वह ब्रम्ह का

ब्रम्ह ही रहता,ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानियों को कह रहे है। ।।४।।

२९३

।। पदराग मिश्रित ।।

राजा हे अेसा जन कोई

राजा हे अेसा जन कोई ।।

होणकाळ ईसर सुं आगे ।। ग्यान बतावे मोई ।। टेर ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले कि,हे राजा,ऐसा कोई जन हैं क्या?की,जो होनकाल ईश्वर के आगे का ज्ञान मुझे बतायेगा। ।।टेर।।

जे कोई ग्यान त्याग ले धावे ।। तिके काळ मुख माई ।।

वां की संगत प्रममोख नाही ।। हंसो किस बिध जाई ।। १ ।।

जो कोई संत त्रिगुणी माया को त्यागने का ज्ञान धारन करते है वे सभी संत काल के मुख में है। त्रिगुणी माया को त्यागा परंतु काल के परे का ज्ञान धारन नहीं किया,काल के अंदर का ही ज्ञान धारन किया,वे सभी साधू काल के मुख में ही है। उनकी संगती में परममोक्ष नहीं है फिर ये जीव किस विधि से मोक्ष में जाएँगे?। ।।१।।

जे कोई ग्यान बतावे कर्ता ।। पेदा करंदा भाई ।।

अे सब ग्यान काळ का मुख मे ।। न्याव करो ओ आई ।। २ ।।

जो कोई कर्ता का ज्ञान बताता जिसने सारी सृष्टी बनाई,ऐसे कर्ता का ज्ञान बतानेवाले सभी ज्ञानी काल के ही मुख में है होनकाल पारब्रम्ह की भक्ति पकड़कर अन्य सभी भक्तियाँ होनकाल में ही रखती,काल के बाहर नहीं निकालती यह सतज्ञान से आप निर्णय करो की यह कर्ता पुरुषही काल है।

क्रिया कळा जप तप साझन ।। कुंची मूद्रा गावे ।।

पेलो छेह काळ का मुख मे ।। प्रममोख नहीं जावे ।।३।।

क्रिया करना,जप करना,तप करना,साधना करना,योगाभ्यास की किल्ली साधना,और मुद्रा साधना ये सभी शुरू से अतंतक काल के मुँख में है याने शुरू में भी काल के मुख में थे,आज भी काल के मुख में है और अंत में भी काल के ही मुख में रहेंगे,त्रिगुणी माया की विधियाँ बतानेवाले माया के ज्ञानियों का संग करनेसे कोई भी परममोक्ष में नहीं जा सकता। ।।३।।

घणी बात थोडी मे केऊं ।। सुण लीज्यो नर नारी ।।

ब्रम्ह काळ माया सब चारो ।। देखो ग्यान बिचारी ।। ४ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,बात तो बहुत है परंतु मैं थोड़े में कहता हूँ, यह बात सभी स्त्री-पुरूषों सुन लो,ब्रम्ह ही काल है,तुम ज्ञान विचार करके देख लो कि,यह ब्रम्ह ही माया की सभी रचना करता है और पुन: स्वयं ही सभी खाकर अपने अंदर भर लेता है। जैसे-खेती करनेवाला खेती करता है,बीज बोता है और उसकी

निराई-गुड़ाई करके रखवाली करते हुए उसकी सुरक्षा करता है,फिर बाद में आयी हुई फसल काटकर,रगड़कर खेतीवाला खाता है वैसे ही यह माया ब्रम्ह की खेती है। तो यह ब्रम्ह माया की रचना करके यही ब्रम्ह पुन: खा जाता है मतलब यह ब्रम्ह ही माया का काल है।।४।।

के सुखराम काळ सूं बारे ।। जे जन सत पद पावे ।।
हद कूं छाड़ तजे बेहद कूं ।। ब्रम्ह उलंग हंस जावे ।। ५ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिस किसी को सतपद की चाह हो तो वो उस काल से याने ब्रम्ह से परे की साधना करे याने सतपद मिलेगा। इस विधि से हद को छोड़कर बेहद का त्याग करके काल ब्रम्ह का उलंघन करके सतपद में वे संत जाएँगे। ।।५।।

३१०

।। पदराग मिश्रित ।।

साधो भाई आणंद पद गुरू होई
साधो भाई आणंद पद गुरू होई ।।
राजजोग सतगुरू की सेवा ।। ओर जोग कूळ लोई ।। टेर ।।

साधो भाई,आनंद पद ही गुरु है। जगत में राजयोग और राजयोग छोड के अन्य माया के अनेक योग है। राजयोग साधना यह आनंद पद सतगुरु की भक्ति है,तो अन्य माया के योग साधना ये कुळ के माया माता,ब्रम्ह पिता इन लोको की भक्ति करना है। ।।टेर।।

पूरणब्रम्ह पिता हे मेरा ।। अंछया हमारी बाई ।।
इनसो भोग करे बस हूवा ।। जब आ कहाणी माई ।। १ ।।

आदि से पूर्ण ब्रम्ह याने होनकाल पारब्रम्ह यह मेरा याने हर जीव का पिता है और इच्छा माया यह हर जीव की बहन है। होनकाल पारब्रम्ह इच्छा के वश होकर इच्छा के साथ भोग करने लगा। जिससे वह इच्छा हम सभी जीवो की माँ बन गई। ।।१।।

भेद बिना ग्यानी सो जग मे ।। सब अेकी कर जाणे ।।
मात पिता गुरू का गुण न्यारा ।। बुध बिन नाहे पिछाणे ।। २ ।।

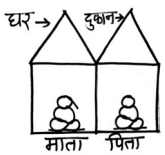

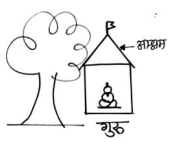

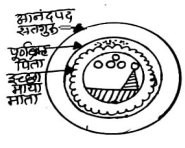

आनंद पद यह सतगुरु है,पुरण ब्रम्ह यह पिता है और इच्छा यह माता है यह जगत के ज्ञानियों को भेद न होने के कारण इच्छा माता और पारब्रम्ह पिता इन दोनो को आनंदपद सतगुरु के समान सतगुरु कर समझा। जैसे जगत में माता का गुण घर पुरता रहता,पिता का गुण हुन्नर धंदे पुरता रहता,तो गुरु का गुण संसार के उदम आपदा में से निक।लकर वैरागी बनने का रहता। इसीप्रकार त्रिगुणी माया का गुण काल के दु:ख में फँसाकर मायावी पाँचो वासना के सुख लेने पुरता रहता तो पारब्रम्ह पिता का गुण माया के सुख दु:ख परे ब्रम्ह बनने का सुख लेने पुरता रहता,तो

सतस्वरुप सतगुरु का गुण सदा काल के हर दु:ख से निक।लकर अनंत महासुख लेने का रहता परंतु यह भेद की बुध्दि जगत के ज्ञानी को न रहने के कारण त्रिगुणी माया माता और पारब्रम्ह पिता ये सतस्वरुप सतगुरु नहीं है यह अंतर समझ ने की नहीं रहती ।।२।।

मात पिता को मे अगवाणी ।। ज्यूं जग सपूत कहायो ।।
नाना बिध पदवी सो देखी ।। आणंद पद नहीं पायो ।। ३ ।।

जैसे कोई जगत में माता–पिता के हर आज्ञा में रहता है उसे संसार के लोग सुपुत्र कहते है। यह सुपुत्र होने के कारण उसे माता–पिता परिवार की अनेक पदवियाँ देकर सुख पहुँचाते है परंतु इस पुत्र को गुरु का ज्ञान सुख नहीं मिलता। इसीप्रकार त्रिगुणी माया माता और होनकाल पारब्रम्ह पिता के पुर्णशरण में रहकर उनकी भक्तियाँ करने से जीवो को माया की अनेक पदवियाँ भोगने के सुख मिलते है,परंतु उस जीव को आनंदपद का वैराग्य विज्ञान का सुख नहीं मिलता। ।।३।।

नुगरो रहयो जुगे जुग हंसो ।। मोख कोण बिध पावे ।।
सुर्गुण निर्गुण अे दोय भक्ती ।। कुळ का धर्म कहावे ।। ४ ।।

सर्गुण यह माता है तो निरगुण यह पिता है। इसकारण सर्गुण तथा निर्गुण यह दोनो भक्तियाँ कुल का ही धर्म है। कुल के परे के गुरु की भक्ति नहीं है। सभी भक्तियाँ युगान युग से करते आया और करते रहेगा,तब तक जीव नुगरा है और नुगरा रहेगा। गुरु भक्ति धारन किये सिवा गुरु भेद नहीं मिलेगा और गुरु के भेद सिवा जीव काल रहित महासुख के मोक्ष पद में नहीं जाएगा। ।।४।।

सुरगुण निर्गुण दोनू छूटी ।। नाव कळा जब जागी ।।
अब बेराग ऊपज्यो माने ।। तब आ सूझण लागी ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी,नर–नारी को कह रहे की मेरी सर्गुण याने माता की भक्ति तथा निर्गुण याने पिता की भक्ति दोनो छुट गई और गुरु शरण लेने से मुझमें ने:अंछर नाम की कुद्रतकला जागृत हुई। मुझमें गुरु भक्ति माता–पिता से कैसे न्यारी है और मोक्ष पद की दाता है यह दिखाई देने लगा। ।।५।।

सतगुरू सरण हंस अब आयो ।। अब सुग्रो नर होई ।।
मात पिता दोना कूं तारूं ।। जे गम पूछे मोई ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, मैं भी पहले माता–पिता का ही भक्त था परंतु सतगुरु सतस्वरुप का शरणा मिलने से सुग्रा हो गया और मुझमें काल से मुक्त करानेवाली गुरु सत्ता प्रगट हो गई। मैं गुरु सत्ता के बल से ठोक के कह रहा हुँ,कि जिनकी मैं आज दिन तक भक्ति कर रहा था और काल के मुख में अटक रहा था,वह फंद मेरा छुट गया और जिस मॉ बाप की भक्ति कर रहा था, वे अगर मोक्ष का भेद चाहते है तो मैं उन्हें भी मोक्ष का भेद देकर महासुख के मोक्ष पद ले जा सकता हुँ ।।६।।

पूरणब्रम्ह पिता हमारा || अंछया मात कहावे ||
अब दोना कूं मोख पहूंचाऊं || जे मुज सरणे आवे || ७ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मुझ में सतगुरु सत्ता प्रगट हुई है। ऐसे सत्ता के शरण में मेरे पिता पूरण ब्रम्ह तथा माता अंछा दोनो मोक्ष में जा सकते परंतु वे सत्ता के शरण आएँगे तो ही सतगुरु पद में याने मोक्ष पद में जा सकेंगे।।७।।

तीन लोक मे जे नर नारी || सब कुळ मेरो होई ||
माँ अर बाप स्हेत सब नारी || जे गुरू ध्रम पकडे कोई || ८ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,पूरण ब्रम्ह मेरे पिता है और इच्छा यह मेरी माता है और मेरे पिता पूरणब्रम्ह तथा इच्छा से हम सभी जीव उत्पन्न हुए है इसलिए तीन लोक में के सभी नर–नारी यह मेरे कुल के जीव है। मुझ में गुरु सत्ता प्रगट हुई है इसकारण मैं कुल से बाहर होकर गुरु सत्ताधारी हुआ हुँ। मुझ में जो गुरु सत्ता प्रगट हुई है उस सत्ता के आधार से जो जो नर–नारी तथा मेरे माँ बाप याने माया–ब्रम्ह मुझ में प्रगट हुये गुरु का धर्म स्वीकार करेंगे तो गुरु धर्म स्विकार करनेवाले सभी को गुरु का मोक्षपद प्राप्त होगा।।८।।

के सुखराम ग्यान ओ मेरो || सुण कर सब मुर्झावे ||
जिंऊँ जग माय हुवे बेरागी || जब घर सब दूख पावे || ९ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, मेरा यह विज्ञान वैरागी ज्ञान सुनकर सभी कुल के माता–पिता से लेकर नर–नारी तक मुर्झाते याने गुरु धर्म स्विकारने के लिए हर्षित न होते दु:खी होते जैसे जगत में से कोई मनुष्य परिवार छोड के संसार त्यागता और गुरु का शरण में जाकर बैरागी बनता। इसीप्रकार मेरे कुल के होनकाल पारब्रम्ह पिता ,इच्छा माता तथा ३ लोक के सभी जीव,मैं बैरागी विज्ञानी हुआ इससे आनंदित न होते मुरझा जाते और मेरे में प्रगट हुए वे गुरु सत्ता के शरण में न जाते काल के दु:ख में पडे रहते। ।।९।।

३३०

|| पदराग बसन्त ||

संत सुणज्यो हो सब सब्द बिचार
संत सुणज्यो हो सब सब्द बिचार || अखंड सब्द सोई तत्त सार || टेर ||

सभी लोगो इस सतशब्द का बिचार सुनो,जो शब्द कल भी था,आज भी है और कल भी रहेगा तथा ऐसा कोई समय नहीं था कि वह नहीं था व ऐसा कोई समय नहीं रहेगा की वह नहीं रहेगा ऐसा अखंडीत नाम सभी नामो में तत्तसार है ।।टेर।।

बोले बेण जीभ मुख माँय || से सब क्षिण खुटे जम खाय ||
मंत्र बिध अनेकूँ होय || माया सरूपी हे शब्द दोय || १ ||

जो शब्द,नाम मुख,जीभ बोले जाते वे क्षीण याने नष्ट होते,वे खुटंते याने मरते,उन

शब्दो को होनकाल यम महाप्रलय में खाता। इसलिए वेद,पुराणो के सभी मंत्र,ओअम् शब्द तथा सोहम् शब्द यह माया स्वरुपी होने के कारण काल ग्रासनेवाले मंत्र है,साहेब स्वरुपी मंत्र नहीं है। ।।१।।

कही सुणो कयाँ सुंई होय ।। तंहाँ लग च्यार काळ की जोय ।।
सुरत समज मन के बस थाय ।। जब लग काळ धरे मुख खाय ।। २ ।।

माया के देह से जो शब्द कहते आते,सुनते आते,लिखते आते,वे सारे शब्द काल का चारा है। जो शब्द सुरत से समझ में आते,मन से समझे जाते तब तक के सारे शब्द काल का चारा है,उन शब्दो को काल खाने के लिए मुख में पकड्कर बैठा है। ।।२।।

मन सुं गहयाँ नेक थूंभे जाय ।। सो भी सब्द नहीं असल थाय ।।
याँ इतना को कहीये मूळ ।। ताहाँ लग काळ क्रम की चूळ ।। ३ ।।

जो शब्द मन से पकडे जाता परंतु पकड के रखने मे थोडा ही रुकता वह भी शब्द,नाम अस्सल अखंडीत शब्द,नाम नहीं है। इन सभी शब्दो का मूल सोहम अजप्पा है याने साँस है ऐसा साँस याने सोहम अजप्पा भी काल के अंदर ही है मतलब सोहम अजप्पा तक भी काल की ही सत्ता है। ।।३।।

क्हे सुखदेव राम सो गाय ।। अरध शब्द देख्या ज माँय ।।
सुरत निरत मन बस नाहे ।। सो सुण शब्द अखंड हम माहे ।।४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,रामनाम गाने से घट मे ररंकार आधा शब्द प्रगट होता,वही शब्द अन्य शब्दों के समान सूरत,निरत,मन से बस मे नहीं करना पड्ता। यह शब्द अखंडीत है,तत्तसार है,घट में,सुरत,निरत,मन के परे है। यह बिनाखंडीत,अखंडीत घट में सुनाई देता है। ।।४।।

३३३

।। पदराग मिश्रित ।।

संताँ ग्यान अरथ गम भारी

संताँ ग्यान अरथ गम भारी ।। रे संता ग्यान अरथ गम भारी ।। टेर ।।

यह सरगुण तथा निरगुण ज्ञान जैसे सहज समझता वैसे सहज समझनेवाले सरीखा केवल ज्ञान विज्ञान नहीं है। केवल ज्ञान विज्ञान को समझने के लिये उंडी समझ चाहिए। उपर-उपर के समझवालो को केवल ज्ञान विज्ञान ना आज दिनतक समझा,ना आगे समझेगा। ।।टेर।।

सुर्गुण निर्गुण भक्त सेल हे ।। नार पूरष गम जाणे ।।
केवळ ग्यान बिग्यान कहीजे ।। बिर्ळा संत पिछाणे ।। १ ।।

सरगुण याने रजोगुण,सतोगुण,तमोगुण याने ही ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और अवतारो की भक्ति तथा निरगुण याने होनकाल पारब्रम्ह की भक्ति बिना उंडी समझवालो को सहज में समझ में आती। इसलिए जगत के सभी नर-नारी सरगुण और निरगुण की भक्ति जानते

परंतु केवल ज्ञान विज्ञान वह जिन्हे उंडी समझ रहती याने सगुण और निरगुण के परे के ज्ञान-विज्ञान की समझ रहती ऐसे बिरले ही संत जान पाते। ये संत छोड के अन्य उपर-उपर समझवाले केवल ज्ञान-विज्ञान जरासा भी नहीं समझते। ।।१।।

सुर्गण मात पिता पण निर्गुण ।। हंसा रो कुळ होई ।।
जब लग तात परोजन उण से ।। निर्भे मत्त नहीं कोई ।। २ ।।

जैसे कुल में माता-पिता है वैसे हंस के कुल में सर्गुण यह माता है,तो निर्गुण यह पिता है। जब तक संसार में माता-पिता से याने कुल के सुख में उलझे रहते तब तक कुल की गांगरत,उदम,आपदा पुन: से उपजे हुये चिंता फिकीर,भय से छुटकारा होता नहीं। वैसे ही कुल के त्रिगुणी माया माता से उपजे हुए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और निरगुण होनकाल पारब्रम्ह के सुख में उलझे रहते तब तक काल के दु:ख का भारी भय सताता। इसकारण हंस की निर्भय स्थिती नहीं बनती। ।।२।।

माया ब्रम्ह करे सब निर्णो ।। रूम रूम कर ठाणे ।।
केवळ ग्यान बिग्यान कहीजे ।। बिर्ळा संत पिछाणे ।। ३ ।।

त्रिगुणी माया याने माया ज्ञान-विज्ञान,होनकाल पारब्रम्ह याने पारब्रम्ह ज्ञान-विज्ञान,तथा सतस्वरुप याने केवल ज्ञान विज्ञान,इसप्रकासे जगत में तीन प्रकार के ज्ञान-विज्ञान होते हैं। यह केवल ज्ञान विज्ञान का बारीक से बारीक जाननेवाला ही केवल ज्ञान विज्ञानी संत होता हैं,ऐसा बारीक-बारीक निर्णय जाननेवाला बिरला संत रहता। ।।३।।

माया रही हद के माही ।। बेहद ब्रम्ह कहावे ।।
परा भक्त सतगुरूजी को सरणो ।। आ बिध बिर्ळा पावे ।। ४ ।।

माता माया की पहुँच हद तक याने आकाश तक सुख देने की है और पिता होनकाल पारब्रम्ह की पहुँच सिध्दशिला तक ब्रम्ह बनके सुख पाने की है परंतु दोनो भी भक्त काल के भय से ग्रासे रहते है। माता माया तथा पिता होनकाल ब्रम्ह के परे सतगुरु का शरणा याने निर्भय बनने की पराभक्ति है। इस सतस्वरुप पद में काल का जरासा भी भय नहीं रहता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इसकी विधि बिरला ही पाते उपर-उपर समझवाले कभी नहीं पाते। ।।४।।

सतगुरू म्हेमा संत पीछाणे ।। भिन्न भिन्न कर गुण गावे ।।
के सुखराम सूंखारा सागर ।। भेद तो बिर्ळा पावे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारी तथा ज्ञानी,ध्यानियों को कहते,त्रिगुणी माता और पारब्रम्ह पिता के परे विज्ञानी सतगुरु पद है। वह सतगुरु पद यह महासुखों का सागर है। सुखो का सागर है याने ही वह भिन्न-भिन्न अनंत सुखो का सागर है। वहाँ प्राप्त होनेवाले भिन्न-भिन्न सुखोंके गुणो की जिसे महिमा समझेगी ऐसा बिरला ही संत उस पद को प्रगटकर पायेगा। ।।५।।

३३४

|| पदराग होरी ||

संतो अगम गेल गत न्यारी

संतो अगम गेल गत न्यारी ||

ज्याँ जाणी जाँ ब्रम्ह तज्यो || तजी राम पियारी || टेर ||

संतो,अगम देश के रास्ते की समझ न्यारी है। जिसे अगम देश के रास्ते की समझ आयी उन्होंने जीवब्रम्ह का देश भी छोडा,राम याने पारब्रम्ह होनकाल का देश भी छोडा और रामप्यारी याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव का देश भी छोडा। ।।टेर।।

ने: करमीने नहि पिछाणे || जब लग जोगी नाही ||

ग्यान ध्यान की लगी समाधी || हे तो जुग के मांही || १ ||

ने:कर्मी जब तक नहीं पहचानते तब तक वह जोगी,विज्ञान जोगी नहीं है। ज्ञान,ध्यान याने ओअम,सोहम की समाधि लगती तब तक होनकाल माया ही है,विज्ञान जोगी नहीं है। ।१।

कासमेर लग करें कासटा || काया कसणी भारी ||

मन चावे सो कर बतावे || हे पको सेंसारी || संतो अगम गेल गत न्यारी ||२ ||

काश्मिर पर्वत तक चढते,शरीर को कसकर भारी कष्ट देते और ओअम भृगूटी में चढाते सृष्टि में मन चाहे वे चमत्कार कर देते,फिर भी ये विज्ञान जोगी नहीं,ये पक्के होनकाल भोगी है,संसारी है। इस होनकाल के देश से अगम देश का रास्ता अलग ही है। ।।२।।

सुण अवतार अलख सो बाजे || पारब्रम्ह के कोई ||

अखर ब्रम्ह तजो जोत सरूपी || जगत सबद हे दोई || संतो सेस नाम मे होई || ३ ||

रामचंद्र,कृष्ण अवतार पारब्रम्ह से जगत में आते इसलिए यह अलख बाजते है,पारब्रम्ह बाजते है फिर भी ये विज्ञान जोगी नहीं है,ये होनकाल माया है। सोहम यह अक्षर ब्रम्ह यह भी माया है और माया के सुरत के आँखो से दिखनेवाली हर वस्तू माया है। ज्योतस्वरुप भी सुरत के और आँखोंसे समझती इसलिए ज्योतस्वरुप यह भी माया ही है। दोनो होनकाल के जगत के शब्द है। संतो,ये सभी शब्द सहस्त्र नामो में है,वे नाम जोगी नहीं है। ।।३।।

ओ बेराग जगत नहि बाजे || राजा पातश्या नहीं होई ||

के सुखराम नाहे निरवां बोलो || लखसी बिरला कोई || संतो अगम गेल गत न्यारी।।४।।

यह विज्ञान वैराग ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा राजा बादशहा नहीं है। यह विज्ञान वैराग्य ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा राजा बादशाह से निराला है। इस वैराग्य को कोई बिरला ही संत जानता है। इसप्रकारसे अगम देश के रास्ते कि समझ न्यारी हैं। ।।४।।

३५७

|| पदराग मिश्रित ||

संतो गुरू भक्ता नहीं कोई

संतो गुरू भक्ता नहीं कोई ।।

सुरगुण निरगुण दोय भक्त अे ।। मात पिता की होई ।। टेर ।।

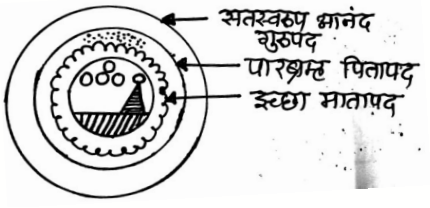

जगतके सभी ज्ञानी ध्यानी तथा नर-नारियों से आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,आप सभी जो जो भक्तियाँ करते हो,वे सभी भक्तियाँ मात-पिता के पद की है,गुरु पद की नहीं है। जैसे जगत में देह के माता-पिता तथा गुरु रहते है,वैसे ही जीव के लिए आदि से माता-पिता और गुरु है।

देह के माता-पिता,गुरु सभी समझते है परंतु जीव के माता-पिता और गुरु हम समझते नहीं इसलिए उसे हम समझेंगे,हम आदि से जहाँ वास करते थे,वहाँ आदि से तीन पद थे और आज भी वे तीन पद जैसे के वैसे है। जैसे घर में सेवा करना यह माता की सेवा है। दुकान,धंदा संभालना यह पिता की सेवा है तथा गुरुधाम में,बन में जाकर ज्ञान सिखना ध्यान सिखना,ध्यान लगाना यह गुरु की सेवा भक्ति है। वैसेही त्रिगुणी माया के रजोगुणी ब्रम्हा,सतोगुणी विष्णु,तमोगुणी शंकर इन देवताओंकी तथा अवतारोंकी भक्ति करना यह जीव के माता की भक्ति याने सगुण साकारी भक्ति है तथा जिसमें रजोगुण,सतोगुण तथा तमोगुण यह माता के गुण नहीं है परंतु माता के साथ पिता बनके सृष्टि रचाने की क्रिया करता है ऐसे तीन गुण रहित निराकारी होनकाल ब्रम्ह की भक्ति करना याने निरगुण पिता की भक्ती करना है। सरगुण माया माता तथा निरगुण ब्रम्ह पिता के परे सतस्वरुप गुरुपद है। इस सतस्वरुप गुरुपद की भक्ति यही गुरुभक्ति है। जगत में सिर्फ इसकी भक्ति करनेवालेही गुरुभक्त है। अन्य सभी भक्ति करनेवाले गुरु भक्त नहीं है। माता-पिता के भक्त है। ।।टेर।।

राजा रंक नार क्हा पुर्षा ।। हिंदु तुर्क मिल दोई ।।

मात पिता का सब अगवाणी ।। ग्यानी ध्यानी लोई ।। १ ।।

हिंदु राजा,रंक,नर-नारी,ज्ञानी,ध्यानी तथा मुस्लीम राजा,रंक,नर-नारी,ज्ञानी,ध्यानी ये सभी माता याने त्रिगुणी माया,तथा पिता याने पारब्रम्ह की भक्ति करते है। ये कोई भी सतस्वरुप गुरु की भक्ति नहीं करते।।।१।।

हद मे ग्यान ध्यान बीध सारी ।। सो माता की सेवा ।।

बेहद माहे समाधी लागे ।। ज्हां पिता निरंजन देवा ।। २ ।।

आकाश तक या देह के भृगुटी तक जो भी भक्ति की विधि जीव धारन करते है वह सारी भक्तियाँ हद याने साकारी रजोगुण,तमोगुण,सतोगुण इस त्रिगुणी माया माता पद में पहुँचने की भक्ति है। इसप्रकार जो जीव बेहद याने दसवेद्वार में रहनेवाले निरंजन देव की समाधि लगाते है,वे जीव होनकाल पारब्रम्ह पिता के पद में पहुँचने की भक्ति करते है। ये दोनो

भक्ति सतस्वरुप गुरु पद में पहुँचने की नहीं है। ।।२।।

इन कूं गावे इन कूं ध्यावे ।। इनका सिंव्रण होई ।।
जो नर समज करणे आगे ।। तत्त पिछाणे कोई ।। ३ ।।

त्रिगुणीमाया या होनकाल पारब्रम्ह का गाना याने भजन करना,ध्यान करना,सुमिरन करना यह माता-पिता का भजन करना,ध्यान करना,सुमिरन करना है। यह गुरु का स्मरण करना नहीं है,यह जो मनुष्य समझेगा वह मनुष्य त्रिगुणी माया तथा पारब्रम्ह पिता के परे के गुरु तत्त को खोजेगा और पायेगा। ।।३।।

सर्गुण छाड़ तजे निर्गुण कूं ।। ने: अंछर कोई पावे ।।
ओऊँ सोऊँ तजर अजपो ।। पिछम घाट जन आवे ।। ४ ।।

जो रजोगुण,सतोगुण,तमोगुण इस साकारी माया को छोड्कर,निरगुण ब्रम्ह का त्याग करेगा वही संत ने:अंछर पायेगा तथा वही संत ओअम् सोहम् तथा अजप्पा के परे के ने:अंछर याने बकंनाल के घाट से पार उतरेगा। ।।४।।

हंसो चडे पटक सब माया ।। ने: अंछर संग होई ।।
मिणिया सेंग ईकीसूं फोड़े ।। चड़े सिखर कहुं तोई ।। ५ ।।

हंस ने:अंछर का संग करके सिखर में चढने के रास्ते में आड आनीवाली सभी माया पटक कर छोड्ता हंस ने:अंछर के सत्ता से पिठ के सभी इक्कीस मणी फोड्ता और सिखर में याने दसवेद्वार में पहुँचता। ।।५।।

अळा पींगळा दोनू जागे ।। मेर डंड सूं भाई ।।
सुखमण चले सीस ऊपर होय ।। मिले त्रृगुटी आई ।। ६ ।।

सिखर में चढते वक्त गंगा,यमुना तथा सुषमना मेरु दंड से जागृत हुई। गंगा दाये बाजु से, यमुना बाये बाजु से तथा सुषमना सीस के उरप से चलके त्रिगुटी में ये तीनो नदियाँ मिली। ।।६।।

सतसरूप सब्द के माही ।। आठ पोर जन देखे ।।
रूप न रंग बरण कूछ नाही ।। देखत अंत बसेखे ।।७।।

संत आठो पोहोर याने २४ ही घंटा सतस्वरुप शब्द के गुंजार को सुनते और निहारते रहता। सतस्वरुप को माया के समान रुप,रंग,वर्ण ऐसे कुछ नहीं रहता,फिर भी संत को सतशब्द अति विषेश देखने में दिखता। ।।७।।

तत्त कहे सो पिण ऊलो ।। ग्यान द्रष्ट सूं जोवे ।।
आनंदपद ज्यां ग्यान बीन घट मे ।। अखंड रात दिन होवे ।। ८ ।।

संसार के ज्ञानी,ध्यानी,तत्त याने होनकाल पारब्रम्ह,यह माया के परे सबसे उँचा पद है ऐसा समझते है। इसलिए दसवेद्वार में ज्ञान कला लगाकर उसकी समाधि लगाते है। आनंद पद घट में एक बार प्रगट होने के बाद बिना किसी ज्ञान के आधार से घट में अखंड्ति

रात-दिन प्रगट रहता परंतु होनकाल तत्त ज्ञान का आधार छुटते ही दसवेद्वार छोड्कर निचे आता। वह घट में प्रगट होने के बाद सदा प्रगटरुप में नहीं रहता,लुप्त हो जाता इसपर से ज्ञान दृष्टि से यही समझना की, होनकाल पारब्रम्ह तत्त,यह आनंदपद तत्त के उला है मतलब आनंदपद तत्त यह होनकाल पारब्रम्ह तत्त के परे है। ।।८।।

नवतत्त लिंग सरीर कहिजे ।। सो नहीं ईण संग चाले ।।
आतम पांच नाभ मे बिछड़ी ।। त्रिकुटी मे नव पाले ।। ९ ।।

हंस होनकाल की सभी कला त्यागकर ने:अंछर कला धारन करता और ने:अंछर के साथ सिखर में चढता तब नाभी में शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध यह पाँच आत्मा यह माया त्यागता और त्रिगुटी के परे चढकर आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी,चित,मन,बुध्दि,अहंकार की बनी हुई नवतत्त की काया निराकार के लोग में छोड्ता। ।।९।।

आणंद पद कूं हंस पहूँचे ।। ने: अंछर संग होई ।।
पूरब घाट चड़े सो अंछर ।। ईखर शब्द कहुं तोई ।। १० ।।

इसप्रकार हंस ने:अंछर के संग होकर आनंदपद में न पहुँचने देनेवाले माया को त्यागकर, पश्चिम के रास्ते से दसवेद्वार पहुँचता। कई ज्ञानी,ध्यानी अंछर शब्द का संग कर पूर्व के रास्ते से भृगुटी में पहुँचते। वह ओअम अक्षर शब्द यह माया से उत्पन्न हुआवा शब्द है। यह शब्द मुख से बोले जाता,कागज पर लिखे जाता। ।।१०।।

ईखर सबद संग जे जन चड़ीया ।। दसवे द्वार लग जावे ।।
दसवो दुवार ना फूटे वांसूं ।। जब फिर पाछो आवे ।। ११ ।।

इसीप्रकार सोहम इस अक्षर शब्द के साथ जो संत बंकनाल के रास्ते से चढते,वे दसवेद्वार पहूँचते परुंत उनसे दसवेद्वार खुलता नहीं इसकारण वे आनंदपद न जाते वापिस माया में आ पड्ते। ।।११।।

इखर सबद संग नव तत्त चाले ।। माया सरूपी होई ।।
ने: अंछर ओ सत्त सरूपी ।। इंऊँ द्वारो दे खोई ।। १२ ।।

अक्षर शब्द यह माया से उत्पन्न हुआवा शब्द है। होनकाल के मुख में ही रहनेवाला शब्द है। इसकारण इस माया स्वरुपी शब्द के सत्ता से ५ आत्मा यह माया नाभी में बिछ्ड्ती नहीं तथा नवतत्त लिंग शरीर यह माया निराकार के लोग में मिटती नहीं। इसकारण अक्षरशब्द से दसवेद्वार खुलता नहीं। ने:अंछर यह होनकाल परे का सतस्वरुपी शब्द है। इसकारण इसके सत्ता से दसवेद्वार खुलता और हंस होनकाल से मुक्त होता। ।।१२।।

दसवे द्वार परे पद आणंद ।। सो सत्तगुर पद जाणो ।।
दसवें द्वार माहे सब बाता ।। माया ब्रम्ह पिछाणो ।। १३ ।।

दसवेद्वार परे जो आणंद पद है,वह सतगुरु पद है। दसवेद्वार के अंदर का पारब्रम्ह पद यह पिता पद है तथा त्रिगुणी माया से उपजे हुये सभी पद यह माता पद है। ये पारब्रम्ह तथा

त्रिगुणी माया से निपजे हुये कोई भी पद सतस्वरुप पद नहीं है। ।।१३।।

मात पिता हंस का हूवे ।। माया ब्रम्ह कहुं तोई ।।
आनंद पद सत्तगुर कहिये ।। समरथ ने: अंछर सो होई ।। १४ ।।

जैसे जगत में देह के माता-पिता रहते वैसे माया यह जीव की माता तथा पारब्रम्ह यह जीव का पिता है और आनंदपद यह जीव का सतगरु है। वह आनंदपद याने ने:अंछर जीव को काल से निकालने के लिए समर्थ है तथा जीव जो जो सुख चाहता,वह सभी सुख जीव को बिना कोई जीव के चाहणा से पुराने के लिये समर्थ है। ।।१४।।

केवळ बीज सबद ओ कहीये ।। सो बाहेर से आवे ।।
घट मे नाव तके सो माया ।। ता को मूळ कहावे ।। १५ ।।

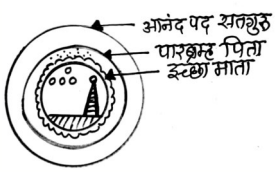

केवल याने माया से पूर्ण मुक्त ऐसे पद का जो शब्द बीज है,वह होनकाल तथा माया के बाहर से हंस में प्रगट होता याने घट के बाहर से प्रगट होता। घट में आदि से वह शब्द नहीं रहता। घट में आदि से जो शब्द बीज रहता वह माया शब्द रहता। वही शब्द काल के मुख में ढकलनेवाला मूल शब्द है। वह माया मूल कैसे है यह देखेंगे,होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा इनसे ओअम शब्द की उत्पत्ती होती,इसी शब्द से घट बनता इसलिए यह शब्द घट में ओतप्रोत प्रगट रहता। ।।१५।।

घट मे नाव राम सो कहीये ।। जिण संग जे गत पावे ।।
तो मात पिता कूं छाड़ जक्त मे ।। गुर सर्णे किऊं जावे ।। १६ ।।

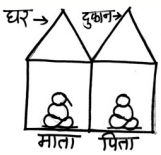

घट में जो मायावी नाम है उसेही पूर्ण मायारहित नाम समझते है और उससे गती याने काल से मुक्ति पाते ऐसा ज्ञानी,ध्यानी कहते है,तो संसार में जीव मात-पिता को त्यागकर गुरु शरणे क्यों जाते है?।।१६।।

के सुखराम ग्यानी सब भूला ।। ज्यां मे न्याव न कोई ।।
निर्गुण ब्रम्ह पिता हंस न को ।। गुरू ठेरायो जोई ।। १७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारियों को कहते है की,सभी ज्ञानी आदि सृष्टि रचना के समय जो मूल सतज्ञान था वह भुल गए है इसलिए माया यह माता और पारब्रम्ह पिता ये गति याने मोक्ष नहीं दे सकते,गति याने मोक्ष के लिए सतस्वरुप गुरु ही चाहिए,यह न्याय से नहीं सोच पाते। कई ज्ञानी निरगुण ब्रम्ह को गुरु ठहरा कर उसकी भक्ति करते है और समझते है इस भक्ति से काल से मुक्ति होगी परंतु ये ज्ञानी ये नहीं समझते की निरगुण ब्रम्ह यह हंस का पिता है और पिता जैसे संसार में कमाई का हुन्नर सिखाता है,वेद का ज्ञान नहीं सिखाता इसप्रकार निरगुण ब्रम्ह सृष्टि बनाने का हुन्नर सिखाता काल से मुक्त होनेवाला सतस्वरुप विज्ञान वैराग्य नहीं सिखाता। ।।१७।।

४०८

|| पदराग जोग धनाश्री ||

उण सम्रथ की मे बलिहारी

उण सम्रथ की मे बलिहारी || जिण आ मांड पसारि रे लो || टेर ||

मैं जिस समर्थ ने मेरा देह और सृष्टी बनाई उस समर्थ पर मेरा प्राण न्योछावर करता हूँ। ||टेर||

केवळ बिना सब माया होई || ब्रम्हा बिस्न सब क्रावे रे ||
सब औतार सगत सो सिवजी || प्रमपद कूं गावे रे लो || १ ||

तीनो लोको के ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति यह सभी देव और सभी अवतार माया है,काल का चारा है,यह केवल नहीं है। यह सभी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति तथा अवतार उस परमपद को भजते है। ||१||

कोटां ब्रम्हा कोटां सिवजी || कोटा बिस्न ध्यावे रे ||
रूम रूम में कोटाँ ब्रम्हंड || तां का वारपार नहीं आवे रे लो || २ ||

उस परमपद को बैकुंठ में विष्णुसरीखे देह धारण किए हुए करोडो विष्णु,कैलास में रहनेवाले शंकरसरीखे देह धारण किए हुए करोडो शंकर,सतलोक में रहनेवाले ब्रम्हासरीखे देह धारण किए हुए करोडो ब्रम्हा,उसी तरह स्वर्ग के सारे देवता ध्यावते है। उस समर्थ के रोम रोम में याने उसके ने:अछरी देह में उसके रोम सरीखे छोटे हिस्से में करोडो ब्रम्हंड याने सभी ब्रम्हरुपी जीव समाये हुए है। इसतरह उसका वारपार नहीं।(जैसे सतस्वरुप को ब्रम्हंड कहते,होनकाल को भी ब्रम्हंड कहते,वैसेही जीवब्रम्ह को भी ब्रम्हंड कहते। ऐसा यहाँ ब्रम्हंड यह शब्द जीव इस ब्रम्हरुपी ब्रम्हंड को उपयोग किया है। ||२||

छिन मे मांड पलक मे कीनी || ब्हो बिध रूप पसारा रे ||
जां दिन सोखत करसी बाबो || रहे नहीं कुछ लारा रे लो || ३ ||

उस समर्थ का क्षण में सृष्टी करके एक पल में,अनेक विधि के रुपो का प्रसार किया और जिस दिन वह बाबा,वह समरथ शोषण करता याने मिटाता उस दिन पीछे उसने बनाया हुआ कुछ भी रहता नहीं। ||३||

के सुखराम सुणो संत सारा || ने: चळ अवगत देवा रे ||
ओर सकळ साहेब की माया || केवळ तत्त की सेवा रे लो || ४ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,सभी संत सुनो,वह अविगत देव है,जो उसे माया से जानते आता नहीं। वह निश्चल है,वह ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति और अवतार इनकी तरह महाप्रलय में मिटानेवाला नहीं। बाकी सभी साहेब छोड के ,साहेब ने बनाई हुई माया है,यह माया काल न ग्रासनेवाला कैवल्य तत्त नहीं है इसलिए तुम माया की भक्ति न करते,कैवल्य तत्त की सेवा याने भक्ति करो। || ४ ||